॥ श्रीदुर्गा, श्रीमाधव, श्रीगणेश ॥ ऊँ ॥ श्री 108 माँकाली जयति ॥

लालदास कृत

रमेश्वरचरित मिथिला रामायण

बालकाण्ड

मङ्गलम्

यालक्ष्मीर्मुनिपुंजशोणिततति व्याजेनतेजोमयी,
ख्याताभूमिसुतावभौचमिथिलाधीशालयेस्वेच्छया ।
सिद्धृद्धयादिसमंविधाय ललितालीलास्समतोषयद्,
भक्तात्नाममनोविनोदनगुणैर्युष्टास्तुतुष्टामयि॥1॥
धृत्वा मानुष विग्रहं मुनिमखं रक्षश्व सिद्धाश्रमे,
योऽहल्योद्धरणंचकार मिथिलापूर्य्यां यशोभिस्सह।
भूपानां समभज्य दैश्वर धनुः श्रीपशुरामस्यवै,
दर्पभूरिहरन् विदेह दुहिता प्रीतिप्रदः पातुमाम् ॥2॥

सोरठा

जय गणेश विघ्नेश, लम्बोदर मङ्गलकरण।
जय हर गौरी रमेश, जय दिनेश दीनार्तिहर॥
जयति शारदा देवी, वीणा पुस्तकधारिणी ।
अपनेक पदयुग सेवि, सेवककाँ शुभफल सदा।

चौपाई

प्रणमों लक्ष्मिक दशबिधि रूप। पुरथु मोर अभिलाश अनूप॥
सीता प्रथमा काली नाम। कृत संहसानन-पुर संग्राम॥
शिव उर चरण फुजल शिर केश। मुण्ड वराभय असिकर देश॥
चाँपल रसन दशनसौं बेश। हरथु कृपाकय हमर कलेश ॥
तारा तनिक अपर अवतार। कर कत्तृक श्यामल आकार॥

मुण्ड वराभय शिव-उर चरण। करथु हमर तारिणि दुख हरण।।
त्रिपुरसुन्दरी अति अभिराम। कृत शिव-नाभि-कमल विश्राम।।
विधि हरि हर सुरवर धृत ध्यान। करथु हमर से नित कल्याण।।
भुवनेशी सुन्दर तन कयल। अम्बुज आसन अंकुश घयल।।
पाश अभयवर सुन्दर हाथ। कृपा सहित मोहि करथु सनाथ।।
भीमा भल भैरवि अवतार। कर माला-पुस्तक आधार।।
करवर अभय सदय शिर चन्द। करथि अभय नित विहँसथि मन्द।।
दम्पति रति-पति पर आसीन। खण्डित शिर शोणित सौं लीन।।
हाथ छिन्नशिर खड्ग विशाल। च्छिन्न भिन्न करथु दुखजाल।।
बड़ि वृद्धा धूमावति रूप। काकध्वजा कर कर्तृ सूप।।
भक्तक करथि सदा कल्याण। भवसौं हमर करथु से त्राण।।
पीत वसन परिधन तन पीत। हरथि सदा अरिकृत भवभीत।।
कर मुद्गर धृत शत्रुक रसन। अभय करथु बगलामुख हँसन।।
मातङ्गी मुद मंगल-अयन। शोभित चारि भुजा तिनि नयन।।
गाबयि गीति बजाबथि वीण। सुमुखि रहथु मोहि जानि अधीन।।
तप्त कनकद्युति लक्ष्मिक वरण। परिधन क्षौम वसन आभरण।।
कमल अभय वर कर भयहरण । राखथु शरण करथु मोर भरण।।

दोहा– लक्ष्मिक दंस विध रूप ई, सभखन रहथु सहाय।
क्रमहि दशो दिशि सौं हमर, रक्षा करथु सदाय।।

चौपाई

वन्दौं विष्णु सनातन चरण। जनिक कृपें कलिमल-दुख-हरण।।
ब्रह्म सनातन धयलनि देह। धर्मक कारण करुणागेह।।
मीन रूप धय जाय पताल। वेदक रक्षा कायल सकाल।।
जलमय मे कृत सृष्टि-विधान । करथु हमर से हरि कल्याण ।।
कच्छप राखल भूमि सयत्न। मथि समुद्र उपजाओल रत्न।।
[illegible] इन्द्रकाँ संहति राज। हमर मनोरथ पूरथु आज।।
हिरण्याक्ष हरि लय गेल भूमि। रक्षा कयल कोल [illegible] भूमि।।

राखल विधिक विलक्षण सृष्टि। से ताकथु हमरा शुभ दृष्टि।।
भक्त जनक दुख सहि नहि भेल। धृत नरहरि वपु रक्षा लेल।।
हिरणकशिपु केर उदर विदारि। प्रह्लादक कयलनि रखबारि।।
सुर काजेँ बामन अबतार। भिक्षा माँगल चलि बलि द्वार।।
देल अमरपुर लेल महेन्द्र। हरथु हमर से दुरित उपेन्द्र।।
रिपु रुधिरे नहबाय सकाम। भूमिक ताप हरल भृगुराम।।
तप-बल राखल सृष्टि-विधान । अभय करथु भृगुपति भगवान।।
दशकन्धरक दशो शिर काटि। वलि देल दश दिक्पतिकाँ बाँटि।।
कयल राम-सीता उद्धार। करथु सदय हमरो निस्तार। ।
तेसर राम कृष्ण बलराम। सुरकाजे कयलनि बड़ नाम।।
भक्तक वश धयलनि करुआर। हमरहु करथु भवार्णव पार।।
वेदक निन्दा कयल अकाज। वुद्ध भेला भेलनि बड़ लाज।।
कयल प्रचार दया संसार। दया करथु से करुणागार।।
अपनहि हाथ धयल तरुआरि। कल्की कयल पवनसौं मारि।।
धर्म्म बढ़ाओल नाशल पाप। हरथु हमर भवकृत त्रयताप।।

दोहा- एहि दशविधि अवतार सौं, औरो जे अवतार।
पुरथु मोर मनकामना, हरथु सकल दुख-भार।।

चौपाई

सीता चरणकमल धय ध्यान। करु मनमधुप सुधारस पान।।
चारि वर्ण-युत सीता नाम। अर्थ-धर्म्म-दायक गति-काम।।
दुइ व्यञ्जन-संयुत स्वर राज। प्रकृति पुरुष जनि संग विराज।।
शशि सुरपति हरि शेष महान। चारु बर्णक नाम प्रधान।।
जे साधक जप सीता नाम। भेल तनिक पूरण मन-काम।।
स* उच्चारण करितहिं मात्र। देथि सुधाकर सुधा सुपात्र।। काम
ई उच्चारण होइछ जखन। सकल अर्थ सुरपति देथि तखन।। अर्थ

---

*भृगुः श्वेतः तथा हंसो ह्रदो दक्षिण पादगः। सनयः सामगः शुक्र संगति सार्णव शाङ्गि। ई गोविन्दश्च त्रिमूर्तीशः शांतिस्याद्वामलोचनं नृसिंहास्त्र नथा माया ईकारो सुरेश्वरः।। त वामोभूतनिलयः आसाढ़ी कामिका हरिः तीव्रश्च तरलो नीलस्तथा कीर्तितो बुधैः आ नारायण स्वधा अनन्तो मुख वृत्तो गुरुस्तथा विष्णु शय्या तथा गो

त कहयित हरि सुजन विचारि। देथि मुक्ति फल भवसां तारि।। मोक्ष
आ कहयित सभ भाँति अनन्त। देथि धर्म्म फल बुझि भल सन्त।। धर्म
सीता नामक अमित प्रभाव। चतुर्वर्ग फल जापक पाव।।
जीवनमुक्त थिकथि जन सैह। सीताराधन तत्पर जैह।।
जिवयित भोगथि सुख संसार। अन्त महानन्दक सुख सार।।
बान्धथि त्रिगुण माया डोरि। मुक्त करथि जनकें गुण तोरि।।
शक्तिमान जग शक्तिक योग। शक्ति-विमुख शव सन सभ लोग।।

दोहा– मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीता रूप प्रधान।
तनिक नाम जपि पाव नर, दुहु लोकक कल्याण।

चौपाई

जपु मन राम-नाम-गुण-गाथ। ब्रह्मानन्दक सुख अछि हाथ।।
तीन वर्ण युत रामकाँ नाम। त्रिविध ताप-नाशक गुण-धाम।।
अनल अनन्त दिवाकर देव। तीनू वर्णक नाम सुसेव।।
अधवनदाहक अनल रकार। सकल धर्म्मदायक आकार।।
रवि मकार सुख हृदय प्रकाश। रामतत्व साधककाँ भास।
महामंत्र ताकर जिय ज्ञानि। जपथि सदा शिव सहित भवानि।।
जेहि बल तनिक होइन नहि नाश। सविनाशी जग नाम प्रकाश।।
जितल मृत्यु जपि रामक नाम। मृत्युंजय कहबथि गुणधाम।।
कालकूट विष राम प्रसाद। पिउलनि शिव नहि भेल विषाद।।
कयलनि जे जन शङ्कर शरण। तारक मंत्रे तनिको तरण।।
बालमीकि जेहि नाम प्रसाद। ब्रह्मक पद पौलनि मर्य्याद।।
मन दय राम कहल प्रहलाद। कयल नृसिंह तनिक अहलाद।।
जानथि रामतत्व हनुमान। अजर-अमर सभ खन बलवान।।
गृद्ध अजामिल श्वपंच निषाद। छूटल गणिकादिकक विषाद।।

दीर्घ आकार एवच ।।

*क्रोधिनीच भुजंगेशो जाली रुधिर [illegible] रोचिष्मां दक्षिणांगश्च रुचिरो रेफ ईरितः। आ नारायणस्तथाऽनन्तो मुखवृतो गुरुस्तथा विष्णुशऽया तथा [illegible] दीर्घ आकार एवच।। म बैकुण्ठश्च महा[illegible]लस्तथा जठरसंस्थितः मंत्रे सोमणुलोमानि विष सूऽर्योमका[illegible]: इति मंत्रकोषे सीताराम नामोद्धार।।

दोहा– राम नाम नौका सदृश, पाबि सुख आधार।
अनायास भव सिंधुसौं, सज्जन उतरथि पार।।

सोरठा– लक्ष्मण जगताधार, रघुनाथक जे प्राणप्रिय।
भरथ रिपुघ्न उदार, चरण कमल सबहिक भजिय।।

चौपाइ

पवनतनय पद करिय प्रणाम। जनिक कृपें पूरय सभ काम।।
सुग्रीवक से कयल सहाय। देल रामकृत राज्य दिवाय।।
कयल विभीषण सृष्ट्याचार। करबाओल तनिको निस्तार।।
जे जन शरण धयल अकुलाय। कयल पवनसुत तनिक सहाय।।
पवनक सन गति गोपद सिन्धु। दीन दयाकर कष्टक बन्धु।।
जाय छोड़ाओल सीता शोक। डाहल लंका क्यो नहि रोक।।
निशिचर गहन बनक कपि अनल। उपकारक मूरति जनि बनल।।
देल लखनकाँ प्रान प्रदान। राम कटकके दुखसौं त्रान।।
छनमे विजय कयल पाताल। अहिरावण बध काज सकाल।।
कामरूप करतल सभ काम। दीनक संकटमोचन नाम।।
अंजनि कपिबल कयल प्रकाश। बुझल राम सभ तत्व सकाश।।

दोहा– महाबीर करुणा सहित, देखथु हमरा दीश।
संकटसौं से त्राण कय, वांछित पुरथु कपीश।।

चौपाइ

बालमीकि पद करिय प्रणाम। रामतत्ववेत्ता तप-धाम।।
रटयित राम नाम दिन राति। ब्रह्म समान भेला भलभाँति।।
आदि कबीश्वर ज्ञान-निधान। रामायण कलयनि निर्माण।।
कोमल ललित मधुर रस मानि। रचल काव्य नव अमृतक खानि।।
से रामायण पाराबार। बिनु हरि कृपें पाव क [illegible]।।
एक-एक पद मणि माणिक जाल। श्लोक बनाय बनाओल [illegible]।।
जनिकाँ उर से माल बिशाल। महिमा तनिक बदय सभ [illegible]।।

कथा सुधा सुनलनि जे कान। सुरपुर सुखकर इन्द्र समान।।
तेहि चरितक अवलम्बन पाबि। कविगण कतेक कहल गुण गाबि।।
हमहु कयल मनमे अभिलाष। हो परन्तु कहयित बड़ धाख।।
नहि विद्या नहि मति मलरहित। नहि कवि-गुण गनि दूषणसहित।।
मन तथापि नहि रोकल जाय। नदी बान्धसौं जल अुकलाय।।
कहयित छी संकोच विहाय। क्षमा करब सज्जन समुदाय।।
पावन सीतारामक नाम। हरत हमर दूषण परिणाम।।
सीतारामचरित भल भानु। हरत हृदयतम मन दृढ़ जानु।।
कथा ललित जनि ज्वलित कृशानु।। पापकलाप शलभगण मानु।।
अघ अवगुण दूषण समुदाय। जायत निश्चय सकल विलाय।।
सीताचरति ललित अनुमानि। रामकथा भल कहब बखानि।।
मनमे दृढ़ कय लेल निर्द्धार। गाबि हयब भव-जलनिधि पार।।
सीताराम-कथा मधु-खानि। छन्द शुभग हो वा गुण-हानि।।
विदित मधुर गुण मोद अपूप। टेंढ़ सोझ वा केहनो रूप।
रसवेत्ताकाँ रुचि सभ काल। तैँ हम रचव चरित सुखशाल।।

दोहा– निशि-दिन उत्कंठा अधिक, लागल छल भल चित्त।
कहयित छी सियाराम-यश, निज मन मोद निमित्त।।
सज्जन दुर्ज्जन आदि पुन, ब्रह्मकीट पर्य्यन्त।
सभक चरण शिर पर धरिय, करथु अनुग्रह सन्त।।

चौपाइ

जे किछु अधिक न्यून वा हयत। सज्जन जनक मनस्पथ जयत।।
से पुरता कहताहे नीक। सहृदय जनक स्वभावे थीक।।
जे खल खरि सम रससौं हीन। तनिक कथासौं मन नहि दीन।।
परयश विधु मे राहु समान। आनक हानि बुझथि कल्याण।।
करता से दुर्ज्जन उपहाँस। सज्जन सोधि पुरौता आश।।
निज भाषा जननी निज देश। स्वर्गहुसौं जानथि जन वेश।
तेँ हम कहब कथा तेहि रीति। नहि विद्या कविता-गुण-गीति।।
मिथिलाभाषा मधु माधुर्य। शेष शारदा कह प्राचुर्य ।।
देश-विदेशक कयल विचार। लक्ष्मी जतय लेल अवतार।।

नाम जानकी पड़ल जनीकि। बजली मिथिलाभाषा नीकि।।
कोमल वाणी अमृत समान । तकर भाव-रस क्यो-क्यो जान ।।
पुण्यदेशमे भाषा नीकि। मिथिला सभक शिरोमणि थीकि।।
तेहि भाषामे करब सुबन्ध। सीतारामक चरित प्रबन्ध।।
आदि कविन्द्रक सुधासमुद्र। कथा हमर कृत सरिता क्षुद्र।।
तेहि समुद्रसौं भरि-भरि नीर। पूरित करब सरित गम्भीर।।
जे नहि जा सकता तत दूरि। अओता एहि सरिता तट घूरि।।
मज्जन कय करता जलपान। त्रिविध तापसौं पौता त्राण।।
सरिता भिन्न मधुर रस सैह। मुनिकृत सुधासिन्धु मे जैह।।

दोहा– सीतारामक चरित ई, जे पढ़ता सुनताह।
लाल सकल सुखभोग पुन, ब्रह्मक पद पौताह।।

रामतत्त्व-वर्णनम्

चौपाइ

एक समय नारद ऋषि आबि। मुनिसों कहल अवसर भल पाबि।।
जनिक नाम जपि हे वाल्मीकि। ब्रह्म समान भेलहु अहँ नीक।।
तनिक कहैछी तत्व विघान। सुनु मन दय होयत कल्याण।।
जे परमेश्वर जगदाधार। जनिके कृत इ सृष्टि अपार।।
पूरण ब्रह्म कहाबथि सैह। बान्धथि मुक्त करथि जग जैह।।
सैह लेल रामक अवतार। हरण हेतु सुर भूमिक भार।।
सुखद अवधपुर पावन वंश। दशरथ नामक ततय नरेश।।
कौशल्या तनिका पटरानि। महा पतिव्रत सद्गुणखानि।।
अपर सुमित्रा केकयि रहथि। पुत्रविहीन सदा दुख सहथि।।
श्रृंगी यज्ञ कयल भल आबि। देल अनल पायस सुख पाबि।।
तखन चारि सुत भेल निर्विघ्न। राम भरथ लक्ष्मण शत्रुघ्न।।
तेहि मे रहथि राम सुत जेष्ठ। विष्णु समान महाबल श्रेष्ठ।।

सभकै प्रियकर चन्द्र समान। धर्म-धुरन्धर नीतिनिधान।।
सकल शास्त्रवेत्ता दुखहरण। पालक प्रजा अनाथक शरण।।
तनिका विश्वामित्र मुनीश। लय अयलाह तपोवन दीश।।
मारि ताड़िका निशिचर सहित। सिद्धाश्रमक विध्न कृत रहित।।
तहँसौं अयला मिथिला देश। धनुष-यज्ञ होइ छल बड़ बेश।।
सीतापरिणय धनुष अधीन। उठल न मन नृपगणक मलीन।।
से कयलनि रघुवर दुइ खण्ड। सीतापरिणय कीर्ति अखण्ड।।
भृगुरामक अभिमान नशाय। अयला अवधपुरी हरषाय।।
दशरथ कयलनि एहन विचार। रामहिकाँ दी राज सभार।।
गुरु अनुमति दिन ताकल गेल। अभिषेकक सभ प्रस्तुत भेल।।
से देखि कयकेयिक मन म्लान। नृपसौं माँगल दुइ वरदान।।
राजा भरत राम वनवास। चौदह वर्षक अवधि प्रकाश।।
दुइ वर नृपक पूर्व छल कहल। से सम्प्राप्त असह दुख सहल।।
अयला राम लखन वनवास। दशरथ त्यागल प्राण सकाश।।
अयला भरथ बुझल वृत्तान्त। चित्रकूट गेलाह नितान्त।।
देल रामकैं राज्य घुराय। नहि लेल तनिकाँ फेरल बुझाय।।
चित्रकूट रहि बारह वर्ष। दण्डक राम गेलाह सहर्ष।।
वधि विराध पुन असुर कबन्ध। कयलनि मुनि रक्षाक प्रबन्ध।।
शुर्पणखाक नाक ओ कान। काटल मारल खर बलवान।।
मृग बनि आयल तहँ मारीच। सीता हरलक रावण नीच।।
देखि जटायु कयल संग्राम। रावण कृत खसला बलधाम।।
रामलखन सीताक उदेश। अयला जाखन जटायुक देश।।
तनिकाँ सौं बुझि सभ वृत्तान्त। स्वर्ग पठौल गेला चल शान्त।।
तहँसौं अयला सबरिक धाम। तनिकहु स्वर्ग पठाओल राम।।
तखन गेला किष्किन्धा ग्राम। मिलला मारुतिसुत गुण ग्राम।।
सीता पता सकल कहि देल। कपिपतिसौं मैत्री भल भेल।।
सुग्रीवक तहँ कयल सहाय। बालि मारि देल राज्य देबाय।।
ततय बिताओल वर्षा बेश। गेल दूत सीताक उदेश।।

रामक मुद्रा मारुति आनि। लंका गेला जलनिधि फानि।।
सुरसा सिंहिनि लंकिनि बाट। रोकल कपि जीतल सभ घाट।।
लंका घर-घर ताकल जाय। कतहु न भेटलिह सीता माय।।
तखन अशोक विपिन कपि गेल। ततहिं जानकिक दर्शन भेल।।
रावण कृत देखल कुचरित्र। पुन सीताक चरित्र पवित्र।।
निर्जन जानि मुद्रिका देल। कुशलक्षेम कृत वार्त्ता भेल।।
देल पवनसुत विपिन उजारि। लंका जारि सुभट सभ मारि।।
रावण काँ कतिबिध दय शोक। चलला चंचल के सक रोक।।
जानकि देल चुड़ामणि लेल। छन मे जलधि लाँधि चलगेल।।
अंगदादि सौं मिलल सहर्ष। मधुबन फल भख विगत अमर्ष।।
कहल राम काँ शुभ सम्बाद। चलला रघुवर रहित विषाद।।
बानर भालुक सैन्य अपार। बान्धल सेतु जलधि विस्तार ।।
रावण अनुज विभीषण आबि। मिलला ततहि महासुख पाबि।।
सकल कटक लय लंका जाय। मारल रावण काँ खिसिआय।।
कुम्भकर्ण घननाद प्रचण्ड। मुइल सकल योद्धा बरिबण्ड।।
सपरिवार अरि मारल गेल। तखन जानकिक स्वागत भेल।।
अग्नि पजारि कयल भलजाँच। साँच पतिब्रत काँ नहि आँच।।
सक देव पुन कहल बुझाय। लेल राम सीता अपनाय।।
चलला राम अवधपुर धाम। पुष्पक रथ चढ़ि कय बड़नाम।।
पहुँचि प्रयाग भरथ हित काम। मारुत गेला नन्दीग्राम।।
अयला राम अवध निज देश। मिलला सभ सौं अति आवेश।।
लेल तखन राज्यक अभिषेक। पोसल प्रजा-स्रजा सविवेक।।
रामक राज्य समय सभ तुष्ट। सकल जीव सुख सौं परिपुष्ट।।
सभ जन धार्मिक करुनागार। निज-निज धर्म निरत दातार।।
पिता देख नहि पुत्रक मरण। नारि न विधव धर्म अनुसरण।।
अग्निक भय नहि तस्कर त्रास। नहि दुख दुर्भिक्षक भय भास।।
धनधान्ये पृथिवी सम्पन्न। सत्य युगक सन कर्म प्रपन्न।।
रामक न्याय क्रिया निर्दुष्ट। तीनू लोक रहय सन्तुष्ट।।
आध व्याधि ककरहु नहि शोक। सुखी राम राज्यक सभ लोक।।
रामतत्व कहलहुँ संक्षेप। पाठक श्रोता नहि अघलेप।।
धनजन धर्म तनिक नित बृद्धि। अन्त स्वर्ग सुख सुलभ समृद्धि।।

दोहा– नारद मुनि सौं सुनि कथा, बालमीकि सानन्द।
देवर्षिक पूजा कयल, भक्ति सहित स्वच्छन्द।।

छन्द निर्म्माण

चौपाइ

बचन विशारद नारद मुनि। रामचरित कहलनि भल गूनि।।
से मन दय सुनि मुनि वाल्मीकि। धारण कयल कथा अति निकि।।
मन सौं सतत मनहि मन पाड़ि। बढ़ल काव्य बनबक बड़ चाड़ि।।
नारद गमन कयल सुर लोक। मुनी बाल्मीकिक मन नहि रोक।।
तमसा तीर निकट गंगाक। ततहि तपोवन मुनि रहबांक।।
चलला मुनिवर ततय नहाय। भरद्वाज काँ संग लगाय।।
नदी तीर वनमे एक व्याध। मारल क्रौँच मिथुन-कृत बांध।।
-पात, वियोग दुख क्रौंची कान। मुनि कै से देखि दया महान।।
बढ़ल क्रोध नहि रहल सम्भार। देल शाप व्याधाक कपार।।
दोहा- कामे मोहित मिथुन* सौं, बधल क्रौंच एक गोट।
मा निषाद चिरकाल धरि, प्राप्त प्रतिष्ठा मोट।।

चौपाइ

यदपि विनिर्गति बचन सशोक। बनल विलक्षण सैह श्लोक।।
भरद्वाज सुनि भेला तुष्ट। कयलनि गुरुक प्रशंसा पुष्ट।।
गाबथि राग सहित से छन्द। सुनि सुनि मुनिह बढ़ल आनन्द।।
आश्रम आबि सुचित बैसलाह। तखन ततय ब्रह्मा अयलाह।।
मुनिकाँ कहलनि चिन्ता त्यागु। सुयश अहँक बाढ़त बड़ आगु।।
हमर निदेश सरस्वति आबि। अहँ मुख सुख करती गुण गाबि।।
नारद कहल जे रामक तत्व। छन्दबद्ध करु हयत महत्व।।
ब्रह्मा भेला अन्तर्द्धान। योगासन मुनि कयल निधान।।
राम कयल कौतुक विस्तार। योगदृष्टि मुनि देखल अपार।।
मुनिकाँ हस्तामलक समान। राम तत्व सभटा भेल भान।।
दोहा- जतय जतय जे-जे चरित, कयलनि सीता राम।
योग युक्ति प्रत्यक्ष सभ, देखलनि मुनि तपधाम।।

---

*मानिषाद प्रतिष्ठान्त मगमस्सास्वतीस्समा: यत्क्रोंच मिथुनादेक मवधी-काम मोहितम्।।
(निषादक पक्ष शोकक अर्थ, विष्णुक पक्ष मंगल अर्थ)

रामायणक कथाक संख्या वर्णन

चौपाइ

रामजंन्म शिशुलीला गान। कौशिक मुनिक अवध प्रस्थान।।
रघुनाथक सिद्धाश्रम गमन। मिथिला मे शिव धनुषक भगन।।
सीतापरिणय भृगुपति क्रोध। रघुपति कृत पुन क्रोधक शोध।।
रामराज्य अभिषेकक भङ्ग। विपिन गमन नृप शोक तरङ्ग।।
घुरल सुमंत न घुरला राम। दशरथ गेला सुरपुर धाम।।
गङ्गोतरण निषादक प्रीति। बास प्रयाग मुनिक गुण नीति।।
चित्रकूट सुकुटी निर्माण। रामबास मुनि मिलन बखान।।
भरथागमन सुराज्यक त्याग। बिपिन गमन रामक अनुराग।।
भरथ मिलन पितृकृत सम्पन्न। राम प्रबोधल भरत प्रसन्न।।
भरथक पुनरागमन विशेश। नन्दिग्राम बसि तपसि कलेश।।
रामक पुन दण्डकवन गमन। बध विराध शरभङ्गक तरन।।
मुनि अगस्त्य कृत आयुध प्राप्त। सूर्पणखा केर नाक समाप्त।।
खरदूषण आदिक बध बेश। माया मृग मारीच प्रवेश।।
रावण छल कृत सीता हरण। रामबिलाप जटायुक मरण।।
बध कबन्ध शबरी अनुराग। पम्पातीर प्रलाप विराग।।
ऋष्यमूक तट मारुत भेट। सुग्रीवक मैत्री-दुख मेट।।
बालि सुकंठक युद्ध प्रचण्ड। सुग्रीवक संकेत अखंड।।
बालिक वध सुग्रीवक राज। सीतान्वेषण पण निर्व्याज।।
गिरि पर रघुवर चातुर्मास। कृत निवास मित्रक विश्वास।।
गत वर्षा शरदागम वेश। रामक क्रोध प्रबोध विशेष।।
सीतान्वेषण बानर दूत। देश देश गेल अति अजगूत।।
रामक मुद्रा युत हनुमान। दक्षिण दिशि गत विवर भयान।।
सम्पातिक दर्शन आलाप। जलधि लांधि हत सिंहिका पाप।।
मारुति कृत निशि लंक प्रवेश। सीतान्वेषण प्रति गृह देश।।
सीता दर्शन विपिन अशोक। रावण कृत वैदेहिक शोक।।
राम निदर्शन मुद्रा दान।। सीता मणि देल लेल हनुमान।।
निशिचर निधन अशोक उजारि। लंका दहन अक्षय संहारि।।
सागर लंघन कपिगण भेट। मधुबन फल चखि पूरल पेट।।
रामके मणि आश्वाश प्रदान। सिन्धु समागम सेतु विधान।।
जलधि तरण लंका अवरोध। मिलन विभीषण विजय प्रबोध।।
रावण राम कठिन संग्राम। निहत निशाचर सुभट महान।।

रावण कुम्भकर्ण घननाद। खसल सकल रण भूमि प्रमाद।।
सीता प्राप्ति राम काँ भेल। राज्य विभीषण काँ से देल।।
कपिदल सहित अवध प्रस्थान। भरथ मिलन अभिषेक प्रदान।।
प्रेम सहित कपिगणक विदाय। रामराज्य शासन युत न्याय।।

दोहा– एहिविधि रामायण विशद, विरचल सातो काण्ड।
चरित ललित अघ दलित सुख, मिलित सुधर्म प्रकाण्ड।

चौपाइ

आदि कवीश्वर काव्य नवीन। रामायण रचलनि परवीन।।
रामजन्म सीताक विवाह। बालकाण्ड सुख सुधा प्रवाह।।
राजस विघ्न राम वन गमन। अवध काण्ड रचलनि दुखदमन।।
खरदूषण वध सुग्रीवक राज। किष्किन्धा कपि दूत समाज।।
सुन्दर मारुति जलनिधि फानि। सीता वार्ता देलनि आनि।।
सेतुवन्ध कपि कटक प्रकाण्ड। रावणादि वध लंकाकाण्ड।।
सीता सहित राम अभिषेक। उत्तरकाण्ड रचल सविवेक।।
सात काण्ड चौबीस हजार। श्लोक रचल मुनि परमोदार।।
मधुर गान सुन्दर लय ताल। विविध अर्थ रस भाव विशाल।।

दोहा– सात काण्ड साती बुझव, स्वर्गक सुख सोपान।
स्वर्गारोहण मे सुलभ, गायक काँ कल्याण।

चौपाइ

कहल काण्ड विवरण अवशेश। सुनु नव रसक प्रशंसा वेश।।
सीता रामरमण श्रृंगार। नृपति विलाप करुण रस धार।।
सूर्पणखा विरुपा रस हास। लक्ष्मण हनु कृत वीर प्रकाश।।
रावणादि कृत रौद्रे रहल। कृत मारीच भयानक कहल।।
रस विभत्स जे कयल कबन्ध। अद्‌भुत रण रिपु राम प्रबन्ध।।
सुखद श्रवण रामायण गान। कहल शान्त रस नवम प्रधान।।
एहि विध काव्य सुलक्षण जानि। रामायण रचलनि गुण खानि।।
अलंकार पुन विविध प्रकार। पूरल काव्यक सद्‌गुण सार।।
लवकुश दुहु भ्राता गुण पूर्ति। सुन्दर मे गन्धर्वक मूर्ति।।
गान विशद जानथि लयताल। कंठ मधुर स्वर सुखद विशाल।।
बालमीकि मुनि शिक्षा देल। रामचरित कंठे कय लेल।।
जखन करथि रामायण गान। बसीकरण सन मंत्र प्रमान।।
सुनि सभजन हो प्रेम अधीन। मृगगण यथा विवश सुनि वीन।।
पुलकित तन सुख हो नहि थोर। हृदय हरप दृग बरखय नोर।।
मुनिगण जप तप देलनि त्यागि। रामचरित सुनि भेला विरागि।।

सभ जन लय लय अपना टोल। लवकुश मुख सुन मधुरी बोल।।
जे जे जन सुन राम चरित्र। पाप रहित तन परम पवित्र।।

दोहा– कहयित छी हम से कथा, रघुवर चरित उदार।
यथा तथ्य नहि कहलहुँ, रामायण विस्तार।।
आदि कविक आशय कतोक, आशय विविध पुरान।
कतहु तंत्र मत सौं करत, लाल राम गुण गान।।

अथ कथारम्भः

चौपाइ

तमसा तीर कुटी अभिराम। मुनि बाल्मीकि रहथि तेहि ठाम।।
भरद्वाज भल अवसर पाबि। सविनय पुछलनि गुरु गुण गावि।।
अपने छी रत्नाकर रूप। राम रत्न अछि भल अनूप।।
कहु कहु मुनिवर ज्ञान निधान। जेहि सौं हो लोकक कल्याण।।
कतय रमा हरि लेल अवतार। अद्‌भुत चरित हरल महि भार।।
संक्षेपहु मोहि कहिय बुझाय। रामतत्व सभ मन पड़ि जाय।।
सीताराम चरित सुख खानि। दिय पिआय श्रुति पुट निज जानि।।
कलह प्रसन्न मुनीश महान। भरद्वाज अहँ बड़ विज्ञान।।
रामभक्त अहँसन नहि आन। तें कहयितछी करु अवधान।।
सुनितहिं सकल पाप हो नाश। सुख सम्पति सुत लाभ सकाश।।

दोहा- सीता रामक महिम युत, रामायण सुख खानि।।
जे सुनता तरताह भव, अनायास अनुमानि।।

चौपाई

सीताराम चरण धय ध्यान। लगला करय तनिक गुण गान।।
पूर्वकाल त्रेता युग बीच। बढ़ल महाबल निशिचर नीच।।
रावण कुम्भकर्ण दुहु भाय। लूटल अमरपुरी समुदाय।।
सुर मुनि काँ से बड़ दुख देल। होम यज्ञ मे बाधा भेल।।
लय लय सभ देवक अधिकार। असुरहि काँ देल से सभ भार।।
देखतहिं सुर काँ से उदरण्ड। पकड़ि पकड़ि कर दण्ड प्रचण्ड।।

तप जप करयित मुनि काँ देख। वनिकाँ ताड़न करय अलेख।।
धर्म कर्म सभ देल उठाय। पाप प्रचार विचार गमाय।।
सहि नहि सकली धरणी भार। अमृरपुरी कयलनि संचार।।
इन्द्रासन बैसल असुरेश। देखि पड़ैलन्हि वनक प्रदेश।।
वन गिरि गह्वर तकयित विकल। भेंटल इन्द्रादिक सुर सकल।।
सभ मिलि एक मत कयल विचार। अयला सभ ब्रह्मक आगार।।
ब्रह्मा पुछल कुशल बैसाय। कहल कथा सुरगण अकुलाय।।
किकहु पितामह विपति विशाल। जनितहिं छी अपने सभ हाल।।
असुर अहिकँ देल वरक प्रसाद। बेरि बेरि दैअछि कतेक विषाद।।
हमरहु सबहिं अहिंक सनतान। की भोगबैछी विपति अमान।।
रावण कयल तेहन आचरण। सुख सम्पति सभटा भेल हरण।।
महि नहि सहि सकली अघभार। रहत कोना सृष्टिकर आधार।।
विधि लज्जित शिर अवनत कहल। कि कहब हमरो वश नहि रहल।।
चलु चलु जहँ लक्ष्मी भगवान। तनिकहिं कृपें हयत कल्याण।।

दोहा– ई विचारि धरणी सहित, ब्रह्मादिक सुर ग्राम।
चलला क्षीर समुद्र दिशि, करयित हरिक प्रणाम।।

चौपाइ

बिकल दुसह दुख देव अधीर। लयला क्षीरसमुद्रक तीर।।
नारायणक चरण धय ध्यान। स्तुति नति कयल विवुध सबिधान।।
सुनि मुनि देवक विपति विषाद। धरणी कृत अतिआरत नाद।।
तेहिखन मूर्तिमान जगदीश। अभय करय अयला तेहि दीश।।
विभु प्रसन्न देलनि वरदान। करब मनुज भै भयसौं त्रान।।
हे सुरगण जनु चिन्ता करिय। शीघ्र हरब दुख धैरज धरिय।।
अहुँ निज अंशे करब सहाय। वानर रूप धरू महि जाय।।
ततय लेब हम सभ काँ संग। करब सकल शत्रुक कुल भंग।।
हम पूर्वहि जे जूम्भा कयल। जाम्बवान ऋच्छक तन धयल।।
हमर अंश से अति बलवान। समर भयङ्कर ऋछ प्रधान।।

दोहा– नारी यक्षी पन्नगी, विद्याधरि तन जाय।
जन्म ग्रहण करु सुर सकल, वानर तन मन लाय।।

चौपाइ

विभुक बचन सुनि विवुध समाज। चलला मुदित बुझल भेल काज।।
इन्द्रक अंशे बालि कपीश। भेला महेन्द्र समान महीश।।

सूर्यक अंशे कपि सुग्रीव। अवतरला बलवान अतीव।।
निज निज अंशे सुरगण धीर। जन्म लेल तन वानर वीर।।
कपिवर तारक बड़ बुधियार। लेल बृहस्पति सौं अवतार।।
कयल विश्व-कर्म्मा निर्म्माण। नील नाम कपि वलक निधान।।
अग्नितुल्य अग्निश सन्तान। नल नामक कपि वीर प्रधान।।
लेल गन्धमादक अवतार। धनपति अंशे परमोदार।।
दुइ सुत सिरजल अश्विनि कुमार। मेन्द द्विविद सुन्दर बुधियार।।
लेल बरूण सौ जन्म सुखेन। शरभ जलद सौं सभगुन ऐन।।
महावीर कपिवर हनुमान। वज्रअंग गति गरुड़ समान।।
लेल पवन सौं से अवतार। पवनक सन बल बुद्धि अपार।।
एहिविधि सिद्ध देव गन्धर्व। किन्नर नाग यक्ष मिलि सर्व।।
निज निज अंशे वानर वीर। कयल सकल उत्पन्न शरीर।।
अगणित वानर भालु अपार। लेल सकल महि मे अवतार।।
जेहि देवक जेहने बल रूप। तदनुरूप गुण तेज अनूप।।
पर्वततुल्य देह विस्तार। यथा मत्त मातङ्ग बिहार।।
सिंह समान प्रबल बल वीर। मेघ समान गरज गम्भीर।।
घोर नाद से सभ कर जखन। अचल प्रचल कम्पित महि तखन।।
तनिक वेग बल सौं जलरासि। प्लावित क्षुभित जाय जग भासि।।
चलयित उच्च गगन सँ आप्त। करथि मेघ माला काँ व्याप्त।।
से सभ बालिक आश्रय लेल। वन गिन दिशि 2 कति बसि गेल।।

दोहा– देव अंश सौं कपि सकल, अवतरला रणधीर।
लक्ष्मीनारायण तखन, धयलनि मनुज शरीर।।

सोरठा- कहयति छी संक्षिप्त, प्रथम राम जन्मक चरित।
सुनि सज्जन मन तृप्त, नित रक्षा हरि सौं तनिक।।

चौपाइ

सरयुतीर अवध एक देश। मनुक बसाओल नगर विशेश।।
जनपद सभ मे अति उत्कृष्ट। वैकुण्ठक से अंश उदिष्ट।।
धनधान्ये सभविधि सम्पन्न। अभिमत्त फल जल भल उत्पन्न।।
रहय प्रजा सभभाँति प्रसन्न। दुखादारिद दुष्टक अवसन्न।।
सुधा सरस बह सरयू नीर। मनभावन पावन दुहु तीर।।
महावीर योद्धा रण धीर। सैन्य सुसिक्षित जनत परिपूर।।
हय गजरथ जहँ गनल न जाय। अवध विभूति अधिक अधिकाय।।
शोभ चतुर्दिशि भवन महान। गोपुर गृहि सुरपुरक समान।।

मेघ समान उच्च प्रासाद। चलित पताका पवन प्रसाद।।
अमरावतिक तुल्य कत ठाम। कल्पित सिल्पि कयल शुभ धाम।।
स्वर्णमयी शुभ सौंध ललाम। रत्नजटित मन्दिर अभिराम।।
कनक भीति मणिमय सोपान। क्षौम वसनयुत शोभ वितान।।
विविध अस्त्रधृत रक्षक वीर। गरजय मेघ सदृशय गम्भीर।।
पुर रक्षा हित कोटक द्वार। अस्त्र सतघ्नी पड़ल अपार।।
परिखा विविध कहल नहि जाय। नहि शत्रुक जयबाक उपाय।।
पणव मृदङ्ग दुन्दुभी वीण। बजबय गाबय गुणीक प्रवीण।।
वारबधूगण नृत्य नवीन। रिझवय गुणि कृत चित्त अधीन।।
फरल फूलल उत्तम उद्यान। खग मृग मधुप करय यश गान।।
वेदपरायण सुनिक समाज। तप तत्पर वर सिद्धिक काज।।
अवधपुरीक महिम विस्तार। सत्य धर्म्मरत मनुज उदार।।
सूर्य्यवंशी राजा वड़िवण्ड। शासथि क्षिति मंडल एक दण्ड।।
पुण्यवान सभ नृप विद्वान। त्रिभुवन ख्यात जनिक यश गान।।
दान मान मे नृपति महान। न्याय निपुण सभ गुणक विधान।।

दोहा– जेहि नृपतिक तप धर्म बल, अवधपुरी कयबार।
प्रजासहित बैकुण्ठ गत, सुख सौं भव निस्तार।।

सोरठा- के कहिसक विस्तार, अवधपुरी महिमा अधिक।
लक्ष्मी विष्णु उदार, वेष अलक्षित रहथि जहँ।।

चौपाइ

सत्यनिरत धर्मज्ञ विशेष। दशरथ नामक तनय नरेश।।
अति प्रतापयुत सुन्दर सूर। ज्ञान निधान सकल गुण पूर।।
पालथि प्रजा यथा सन्तान। दुख दुर्भिक्ष सुनल नहि कान।।
रहथि नृपति से सन्तति हीन। तेहि चिन्ते मन सतत मलीन।।
कयल कतेक नृप यज्ञ विधान। देल कतेक ब्राह्मण कँ दान।।
मंत्र तंत्र रहला कति जापि। नृप कैं पुत्र न भेल तथापि।।
गुरु सौं कहल विकल एकबार। हयत कोना भव सौं निस्तार।।
शास्त्र कहल जे संतति रहित। तनिका दुर्गति दारा सहित।।
कहल जाय गुरु तेहन उपाय। पुत्र प्राप्त हमरा भय जाय।।
ततय सुमत कहल भल वाक। श्रृंगी ऋषिक यज्ञ करबाक।।
अंग देश छथि कहल वशिष्ठ। अछि नृप सौं मित्रता घनिष्ठ।।
लोमपाद नृप सम्मत देथि। तखन श्रृंगी ऋषि भारा लेथि।।
अंग देश मे परल अकाल। श्रृंगी ऋषि अयला तेहि काल।।

तखन ततय भेल मेघक वृष्टि। निज कन्या नृप देल मन हृष्टि।।
तनिका एत मंगबाओल जाय। हयत पुत्र लिय यज्ञ कराय।।

दोहा- नृपति पुछल परिचय तनिक, कहल वशिष्ठ सप्रीति।
श्रृंगी हरिणी गर्भ सौं, लेल जन्म जेहि रीति।।

चौपाइ

रहथि मुनीश विभाण्डक नाम। बड़ तप कयल जखन तप धाम।।
से देखि इन्द्र गेला अकुलाय। उर्वसि कैँ देल ततय पठाय।।
देखलनि मुनिवर तकर शरीर। काम विवश चित रहल न थीर।।
मुनिकाँ भयगेल कामक त्याग। लागल तृण मे शुक्रक भाग।।
से तृण हरिणि चरलि अनजान। तेहि योगैं भेल गर्भाधान।।
पुत्र जन्म भेल गत षट मास। तपबल मुनि से बुझल सकाश।।
तातक गुण सभ तात समान। जननी गुण शिर भेल विषाण।।
मुनि मोहें कयलनि प्रतिपाल। श्रृंगी नाम धयल ततकाल।।
परम तेज विद्याक निधान। श्रृंगी ऋषि बड़ भेला महान।।
थोड़बय दिन मे योगाभ्यास। कयलनि श्रृंगी सिद्धि प्रकाश।।
छल प्रपंच सौं रहित छलाह। चौदह वर्षक जखन भेलाह।।
अंग देश मे पड़ल अकाल। वृष्टि अभावें प्रजा विहाल।।
नृप काँ बुधजन कहल विचार। श्रृंगी जौं आवथि एहि पार।।
तखनहि हयत वृष्टि एहि देश। आन उपाय न छुटत कलेश।।
केवल कामिनिगण तहँ जाय। श्रृंगी ऋषि काँ लाब लोभाय।।
से सुनि नृप नौका बनवाय। वृक्ष लता तेहिपर लगबाय।।
प्रमदागण काँ कहल बुझाय। श्रृंगी आवथि करह उपाय।।

सोरठा- छलकय से सभ नारि, गेल पार जहँ मुनि रहथि।
माया देल पसारि, श्रृंगी मोहय हेतुसे।।

चौपाइ

एक जनि पूजा देल देखाय। न्यास ध्यान मुद्रा समुदाय।।
श्रृंगी बड़ स्वच्छ स्वभाव। स्त्री पुरुषक नहि जानथि भाव।।
छल प्रपंच नहि छल अवलोक। बुझलनि थिकथि तपस्वी लोक।।
देखलनि प्रथमहि नारि स्वरूप। विवश भेला देखि रूप अनूप।।
सुन्दरि गुण सौं मिलला जाय। मोहलक मुनिकाँ मधुर खोआय।।
क्यो श्रृंगी काँ लेलक कोर। प्रेम बढ़ाओल धयलक ठोर।।
क्यो मुख अर्पल अनन कपोल। देल छुवाय पयोधर गोल।।
क्यो मुख चूमल हृदय लगाय। अधर सुधारस देल पियाय।।
क्यो जनि उठि आलिङ्गन देल। श्रृंगी ऋषि काँ बड़ सुख भेल।।

वसन रसन खोलल क्यो नारि। परस करौलक देह उघारि।।
क्यो कामिनी सुतली लय संग। जागल श्रृंगीक अंग अनंग।।
घुरि घुरि मुनि कामिनी तन ताक। सटले रहथि न होथि फराक।।
मेवा मधुर अपूप खोआय। गुल्म लता लड्डू लटकाय।।
विवश कयल नव सृष्टि देखाय। श्रृंगी से देखि गेला लोभाय।।
गम जनि प्रेमें वश कयलेल। भेल परस्पर बड़गोट मेल।।
शृंगी स्वच्छ हृदय स्वच्छन्द। लगला रहय ततहि आनन्द।।
मन-मन कयलनि यहन विचार। थिकथि महामुनि परमोदार।।
जलपर अद्भुत वन हो दृष्टि। से थिक हिन तपसिक तप सृष्टि।।
जों हिनकहिं संग रही सदाय। खायब फल भल मधुर अघाय।।
सुख बड़ लाभ हिनक छुबि अंग। छोड़व हम न हिनक सत्संग।।
पष्ट कहल मुनि मोह ,तरंग। चलब अहिंक हम संगहिसंग।।
मुनि काँ बान्धल प्रेमक पास। भेल विभाण्डक मुनिक तरास।।
कहल नारि आश्रम मुनि जाउ। चंलक पिता सौं आज्ञा लाउ।।
शृंगी भवन गेला निशि जानि। कहल पिता सौं बड़ सुख मानि।।
अदभुत कथा सुनिय हे तात। देखल आइ हम धारक कात।।
जल ऊपर एक भूमिक खंड। लयला तपबल मुनिगण मण्ड।।
तेहिपर मंदिर विपिन विचित्र। मधुर-मधुर फल फरल पवित्र।।
देखल तपस्वी तेहि पर तात। कि कहब तनिक सुभग सभ गात।।

सोरठा– सुख दायक सभ अंग, देखि विवश भेलहु पिता।
बाढ़य प्रेम तरंग, सुनु शरीर विवरण तनिक।।

चौपाइ

जटा घटासम सबहिक श्याम। मुख छवि पूरण चन्द ललाम।।
बाँहु लता जनि कमल मृनाल। अद्भुत छाती समक विशाल।।
उर पर दुइ दुइ गोलाकार। पक्व ताल फल सन विस्तार।।
ककरहु श्रीफल तुल्य उरोज। ककरहु उर जनि युगल सरोज।।
ब्रह्मानन्दक सुखक समान। करयित परस प्रगट सुख भान।।
जंघा सुन्दर मघन उतार। 'गजराजग शुण्डक आकार।।
रिष्टपुष्ट सबहिक सभ देह। देखितहिं ततय बढ़ल बड़ नेह।।
परिधन वशन विभूषण अंग। देखल नाकहु कानक संग।।
बड़ सुकुमार सुखद व्यवहार। कतुहुं न देखल एहन कुमार।।
जेहने हमर वयस अछि तात। तेहने सभक विलक्षण गात।।
नहि दाढ़ी मोंछक किछु रेख। सुन्दरताक प्रकाश विशेष।।

सबहिक देखल विलक्षण नेम। विष्णुक पूजन करथि सप्रेम।।
देलनि अनुग्रह मधुर प्रसाद। खायल जेहन सुधारस स्वाद।।
जयता सभजन देश प्रभात। जायब हमहु तनिक संग तात।।
किछु दिन रहि हम तनिकहि संग। पूजन यजन सिखब भल रंग।।
सुनि शिशु बचन मुनीश महान। क्षण भरि क्षुब्ध छला सुज्ञान।।
कयल विभाण्डक मुनि अनुमान। शृंगिक हरलक गणिका ज्ञान।।
छथि अनजान देखाबी त्रास। नहि पुन जाथि तकर आबास।।

दोहा– प्रगट विभाण्डक मुनि कहल, शृंगी सौं अकुलाय।
सुनु सुत से थिकि राक्षसी, शिशुकाँ लैं अछि खाय।।

सोरठा– तनिक निटक जनु जाउ, मायावी सँभ नारि थिकि।
एतहि मधुर फल खाउ, सुचित रहू आश्रमहि नित।।

चौपाई

एहिविधि सुत काँ त्रास देखाय। राखल आश्रम बहुत बुझाय।।
राति शेष मे मुनि उठलाह। तपहित दोसर विपिन गेलाह।।
शृंगी काँ बादल उच्चाट। तकितहि रहथि कामिनिक बाट।।
तेहिखन मोह विवश तहँ आबि। स्त्रीगण सौं मिलला सुख पावि।।
बापक गमन आन वन कहल। अपने नारिक संगति गहल।।
सभ जनि काँ भेल हर्ष अपार। चलि गेलि मुनि काँ लय ओहिपार।।
शृंगी अंग देश अयलाह। भेल वृष्टि जल चलल प्रवाह।।
नृप निज कन्या शान्ता देल। शृंगी ऋषि परिणय कयलेल।।
बुझल विभाण्डक मुनि वृत्तान्त। क्रोध न कयल भेल पुन शान्त।।

दोहा– एहि विधि कहल वशिष्ठ मुनि, शृंगीक शुभ आख्यान।।
सुनि नृप मन मे, दृढ़ कयल, करी तनिक सनमान।।

चौपाइ

दशरथ अंग देश अयलाह। रोमपाद नृप सौं मिललाह।।
शृंगी ऋषि कैं कयल प्रणाम। कहल सकल वार्ता परिणाम।।
सुनि नृप विनय मुनीश प्रसन्न। नृपतिक दुखक दिवस अवसन्न।।
अवधपुरी शृंगी अयलाह। से सुनि सभ आनन्द भेलाह।।
करबौलनि पुत्रेष्ठी यज्ञ। हो प्रत्यक्ष अनल सर्वज्ञ।।
पड़ल अनल मे आहुति वेश। हव्य द्रव्य घृत सहित विशेष।।
सभ विधि अनल भेला सन्तुष्ट। बहरयला लय पायस पुष्ट।।

नृप काँ से देल पुत्र निमित्त। कहल करू जनु चिन्ता चित्त।।
पायस लय अन्त:पुर जाउ। रानीकाँ भोजन करबाउ।।
एहिसौं चारि पुत्र हयताह। महिम वशिष्ठ तनिक कहताह।।
अनल भेला कहि अन्तर्द्धान। नृप दशरथ कयलनि प्रस्थान।।
देलनि कौशल्याकाँ जाय। आधा केकयि लेल मनाय।।
लेल बाँटि दुहु पायस जखन। आबि सुमीत्रा माँगल तखन।।
कौशल्या केकयि दुइ भाग। तनिकाँ देल सहित अनुराग।।
खायलनि तीनू नारि प्रधान। तीनूकाँ भेल गर्भाधान।।
दिन-दिन गर्भ बढय अधिकाय। चन्द्रकला जेहिविध बढ़िआय।।
बढ़थि गर्भ मे विभु भल रीति। यथा अग्नि वनमें निर्भीति।।
तेज बढ़य नित कहल न जाय। यथा सूर्य्य दिनमे बढ़ियाय।।
आयल ऋतु वसन्त मधु मास। पुत्रक जन्म समय परकाश।।
दमस मास जखनहि भेल पूर्ति। जनम लेल हरि चारू मूर्ति।।
कौशल्या सौं भेला राम। कयकेयिक भरत गुणधाम।।
भेलनि सुमित्रा काँ निर्विघ्न। दुई बालक लक्ष्मण शत्रुध्न।।

दोहा– पुत्र जन्म सुनि नृपतिवर, भेला अति आनन्द।
लगला भल उत्सव करय, सुखित सुहृद स्वच्छन्द।

चौपाइ

गाब मधुर सुख स्वर गन्धर्व। नचय अप्सरागण मिलि सर्व।।
विद्याधरगण वाद्य बजाव। विविध भाव गति सबहि देखाव।।
बन्दी मागध सूत समाज। विरुद पढ़य कहि जय महराज।।
रहल न नृपकाँ हर्ष ठेकान। कति विधि कयल रतन धन दान।।
बहल अवध आनन्द प्रवाह। बड़ उत्सव सभकाँ उत्साह।।
नभ सौं सुरगण सकल सहर्ष। जय जय कहि कर फूलक वर्ष।।
विगत एकादश दिन पुन भेल। नाम सभक भल राखल गेल।।
किछु चेतन बढ़ि जखन भेलाह। गुरु तट विद्या पढ़य गेलाह।।
धनुर्वेद विद्या सिखि लेल। अननहिं अपर आबि सभ गेल।।
बापक सेवा मे बड़ दक्ष। माइक भक्तिपराणय पक्ष।।
लक्ष्मण रामक संगहि संग। रहथि सदा आज्ञा नहि भंग।।
भरतक अनुगामी शत्रुध्न। नहि कदापि तनिकर रुचिनिध्न।।
चारू भ्राता मे बड़ प्रीति। बितबथि समय सुखेँ एहि रीति।।
खाथि खेलाथि पढ़थि एक संग। देखि-देखि नृप आनन्द उमंग।।

रूपमाला छन्द

देखि चारू भायकाँ दशरथ नृपति आनन्द।
अवलोकि सुरगणकाँ यथा ब्रह्मा मुदित स्वच्छन्द।।
सुखित कौशल्या अधिक रखि रामकाँ निज गोद।
अदिति जेहि विध इन्द्र काँ लय करथि प्राप्त प्रमोद।।

दोहा– विष्णु अंश सुन्दर अधिक भेला राम घनश्याम।
शेशकला अयला सुखद लक्ष्मण अतत अभिराम।।
प्रिय आयुध नारायणक भरत रिपुघ्न भेलाह।
लोक शोक हर लाल कह चारि अंश मिललाह।।

चौपाइ

नर तन विष्णुक कहल उदार। कहयित छी लक्ष्मीक अवतार।।
सुरसरि धारक उत्तर कूल। सूर मुनि सेवित भूमि अतूल।।
देव भूमि पर्वत हिमवान। तेहि सौं दक्षिण धर्म निधान।।
मिथिला नामक पावन देश। जहँ राजर्षि बसथि मिथिलेश।।
जन्मभूमि नैहर सीताक। जतय स्वयं शिव रूप पिनाक।।
शक्तिपीठ उत्तम असथान। उग्र भूमि सभ भाँति महान।।
प्रिय निवास महि हरि लक्ष्मीक। तपथि जनक ऋषि तहँ बाल्मीक।।
याज्ञवल्क्य गोतम हिमदाव। सिद्धि भेला मिथिलाक प्रभाव।।
शुक्राचार्य जनकक सतसंग। सिखलनि ज्ञान जतय भल रंग।।
मुनि मण्डलीक सुसिद्धि स्थान। यज्ञ भूमि दायक कल्याण।।
सुर गन्धर्व यक्ष समुदाय। नर तन मिथिला बसथि सदाय।।

दोहा- श्रेयस्कर सुरलोक मे, जे विधि विष्णुक धाम।
तेहि विधि मिथिला मर्त्य मे,! पावन सुख विश्राम।।

चौपाइ

मिथिला-मण्डल अनुपम देश। रहथि जतय श्रीरमा-रमेश।।
सुन्दर विपिन सुपुष्पित शृंग । पिक कुल कूजित गुंजित भृंग।।
पारिजात सुरतरू संतान। कुसुमित सुरभि सकल उद्यान।।
सरल ताल खजूर रसाल। कर्णिकार करवीर तमाल।।
कोविदार चम्पक तरू साल। पनस कदम्व प्रियंगु पियाल।।
विटप लता सब फुलल महान। मुकुलालंकृत अलिकृत गान।।
गुल्म लता औषधि विस्तार। भासमान उद्यान अपार।।
औषधि अग्नि-शिखा समतूल। कतेक सुवर्ण वर्ण अनुकूल।।
नीलांजन सन कति दल फूल। देखयति हृदय शूल निर्मूल।।
विविधाकृत सुन्दर फल पत्र। मृग पक्षी संचर सर्वत्र।।

कोकिलकुल कलरव सुख मूल। पवनाकुल तरू संकुल झूल।।
दात्यूहगण बहुविध कर गान। नाच मयूर सुखद स्वर तान।।
विविध नदी बह बारि पुनीत। जल सुस्वादु रूजक नहि भीत।।
सुभग सरोवर निर्मल नीर। कमल प्रफुल्लित सुरभि समीर।।
वनमाला जल सरवर तीर। शोभ विलक्षण पावन नीर।।
राजहंस जलकुक्कुट क्रौंच। जल विहार कर कूजय संच।।
दोहा- शोभा मिथिला-पुर वनक, जे किछु कहिय से थोड़ि।
बुझि पड़ नन्दन विपिन जनि, आयल सुरपुर छोड़ि।

चौपाइ

नगरक शोभा कहल न जाय। अमर-नगर सन शोभ सदाय।।
कंचनमय प्राकार ललाम। शरद मेघ सन सौंध सुधाम।।
अति उच्छ्रित प्रासाद अपार। पटतल सप्ततला विस्तार।।
शत-शत पर्वत सन उत्तुंग। धवल धाम कंचनमय शृंग।।
विविध धातु मणि जटित प्रकाश। भासमान जनि गिरि कैलाश।।
शोभित गोपुर उच्छ्रित द्वार। नभमंडल जनि लिखित प्रकार।।
शोभय तोरण वन्दनवार ध्वज पताक फहराय अपार।।
रतन जटित कंचन आगार। सज्जित मणिमय आँगन अपार।।
राजभवन छवि कहल न जाय। इन्द्रभवन से देखि लजाय।।
स्वर्ण रचित मणिमय प्रासाद। विविध रत्न लखि विगत विषाद।।
शोभावलित भवन अनि ललित। ज्योति परस्पर सबहिक वलित।।
भवन गगन गत अति विस्तार। सूर्य्य चन्द्र सन तेज अपार।
शोभा विलक्षण मणि सोपान। वातायन गवाक्ष श्रीमान।।
इन्द्र नील मणि हीरक खानि। रचल विश्वकर्मा शुभ जानि।।
हस्तिदन्त मुकुता मणिजाल। पद्मराग वैदूर्य्य प्रवाल।
कनक भीति द्युति अति कमनीय। रचल चित्र शिल्पी रमणीय।।
मणि आभा सर्वत्र प्रकाश। अन्धकार रातिहुँ मे नाश।।
दोहा- रत्नाकर सन नगर भल, -मणिमुक्तादि विशेश।
सुख समृद्धि अलकाक सन् शोभित मिथिला देश।।

चौपाइ

सुर सुन्दरि सनि मिथिला नारि। उपमारहित सकल सुकुमारि।।
गुण आगरि सभ जनि बुधियारी। रूप उजागरि नागरि नारि।।
सकल यशस्विनी लीला धारि । मृदु हासिनी वयसाकृति दारि।।
विधुवदना मृगशावक-नयनि। घन-केसिनि मृदु कोकिल-बयनि।।
गृहि बिच सुन्दरता छवि भास। यथा तड़ित घनमध्य विकाश।।

पैसि झड़ोखा सखिगण संग। बजबय प्रियकर वीण मृदंग।।
उर शिर कंठ जनित मृदुवाद। नूपुर कंकण काञ्ची नाद।।
गाब मधुर स्वर पंचम राग। सुनि सुनि मुनिमन धीरज त्याग।।
अति आगरि नागरि सभ वाम। लखि लज्जित रति मोहित काम।।
द्वार-द्वार पण्डित विद्वान। शास्त्रसुचिन्तक पढ़थि पुराण।।
सज्जन साधु महात्मा लोक। जपथि मंत्र तप करथि अशोक।।
द्विजगण निरत सतत स्वाध्याय। पूजन भजन करथि मन लाय।।
सकल लोक निज वर्णाचार। पूजथि इष्ट सहित उपहार।।
सौरभ सुमन सुचन्दन धूप। शंख मृदंगक शब्द अनूप।।
यज्ञ होम सभ कर सभ काल। वेदाध्ययनक शब्द विशाल।।
सभ सज्जन विद्वान महान। पशु पक्षी सभकाँ शुभ ज्ञान।।
ऋद्धि सिद्धि सभ नारिक वेष। नरतन बसथि विवुध अनलेख।।
सुर दुर्लभ सभकाँ सुख भोग। ईश प्रसाद सुखी सभ लोग।।
दोहा- भासमान मिथिला पुरी, रवि सन तेज प्रचण्ड।
बुझिपड़ अनुपम देश जनि, महिगत स्वर्गक खण्ड।।

चौपाइ

मुनि दुर्लभ तप कठिन सदाय। मिथिलानाथ करथि मन लाय।।
देखि तनिक तप पूजा योग। सुरपति काँ नित विस्मय शोग।।
नृपकाँ कतहु न शत्रुक लेश। राज प्रजाक प्रबन्ध विशेष।।
नगरक रक्षा हेतु अपार। भयदायक परिखा विस्तार।।
तेहिमे नक्र मकर कुम्भीर। तस्कर आदि न आबय तीर।।
अस्त्र शतघ्नी प्रति पुर-द्वार। राखल हेतुक शत्रु संहार।।
संग्रहीत शर यंत्र विशेष। देखितहि शान्त रिपुक मन तेख।।
उत्तम लौह रचित विस्तार। अस्त्र शस्त्र राखल पुर-द्वार।।
मल्ल सुभट योद्धा समुदाय। नगरक रक्षा करय सदाय।।
जलधि समान सैन्य रणधीर। मेघ समान गरज गम्भीर।।
गिरि सन सहस-सहस गजराज। शूर सुभट्ट मद-मत्त विराज।।
नील मेघ सन हस्तिक देह। तड़ित समान दन्त गुणगेह।।
पवन वेग चंचल सभ घोड़। लक्ष-लक्ष गरजय अति रोड़।।
चलयित कुदयित हनयित टाप। क्षण महीतल थर-थर काँप।।
अद्भुत रथ सभ विविध प्रकार। देव-यान सम अति विस्तार।।
अमरावति सन सभा प्रकार। इन्द्रतुल्य मिथिलेश्वर भास।।
मुख्य सुरोपम सभ्य विराज। सुक्रिय सज्जन प्रजा समाज।।
मिथिलेशक बुझि प्रबल प्रताप। शत्रुक हृदय बढ़य सन्ताप।।

दोहा- विकट सुभट सौं रक्षिता, मिथिला भूमि विशाल।
भोगवती रक्षित यथा, अहिगण सौं पाताल।।
से मिथिला हम जोतलैं, सिता लेल अवतार।।
क्षीर-सिन्धु मथले यथा, लक्ष्मिक जन्म उदार।।

चौपाइ

सीता जन्म चरित एकान्त। कहयितछी परिणय वृत्तान्त।।
रावण जखन जितल सभ लोक। सुर नर मुनि सभकाँ देल शोक।।
दण्डक वन आयल एक काल। मुनि सौं कर मांगल देल शाल।।
मुनि गण तन पचि शोणित देल। से खल एक घट मे भरि लेल।।
मुनि तन शक्ति कयल किछु त्याज। से घट मे गेलि शोणित ब्याज।।
मुनि बुझलनि शक्तिक व्यापार । कहल मुदित मन दय धिक्कार ।।
ई शोणित गात लंका भूमि । नाशत रावण तोहरा जूमि।।
से सुनि रावण गेल डराय। ई घट अब लंका नहि जाय।।
मुनिक रुधिर अछि एहि घट बीच। रहने लंका लोकक मीच।।
ई कलश दी ततहि गड़ाय। जेहि सौं हमर शत्रु विनशाय।।
शम्भु सभा श्रुति बाद-विवाद। जनक हरौलनि देलनि विषाद्।।
मिथिला जनपद तनिक नशाय। मिथिलहि मे दी घट गड़बाय।।
बड़ पंडित कहबथि मिथिलेश। बुझता जखन विनाशत देश।।
ई विचारि दुत दूत पठाय। मिथिला मे घट देल गड़बाय।।
एहि विधि किछु दिन बीतल जखन। अनावृष्टि मिथिला मे तखन।।
ज्योतिष पंडित सम्मत देल। जनक स्वंय हल कर गहि लेल।।
जोतय लगला जेहि खन भूमि। बहरायल घट तेही खन घूमि।।
घट सौं ज्योति विनिर्गत भेल। तेजमयी कन्या लखि लेल।।
विस्मय मानल जनक नरेश। गनन गिरा तखनहि भेल वेश।।
ई कन्या लक्ष्मी अवतार। सीता नाम करब परचार।।
से सुनि जनक भेला आनन्द। लयला गृह कन्या सुखकन्द।।
भेल वृष्टि सुख लक्ष्मीक दृष्टि। बाँचल मिथिला भूमिक सृष्टि।।
सुख सम्पत्ति ऋषि सभ सिद्धि। होमय लागल मिथिला मे वृद्धि

दोहा- जनकक गृहि लक्ष्मीक सनि. सीता सुन्दरि रूप।
दिन-दिन प्रति लगली बढ़य, शुक्ल चन्द्र अनुरूप।।

चौपाइ

खेलथि आँगन सखी सभ संग। मोहथि सभ जनिकाँ भल रंग।।
दिन-दिन बढ़थि चन्द्रमा रीति। शिशुता वय भेल जाय अतीति।।

आयल मत्त मतंग समान। यौवन जोर नरेश प्रधान।।
कयल अपन अधिकार प्रचार। बदलल अपन सकल व्यापार।।
प्रबल अमल बुझि अवल बेचार। गेल पड़ाय शैशव सुकुमार।।
लगला करय से राजस रीति। न्यूनाधिक तन भेल सुनीति।।
ककरहु उच्चक पदवी देल। ककरहु नीच कतहु एक मेल।।
शैशव सौं मुख छवि छल म्लान। से प्रकाश भेल चन्द्र समान।।
आँखिक आकृति छल किछु छोट। फूल्ल कमल सन भयगोल मोट।।
नासा पुट छल छोट लखाय। तिलफुल सन गेल फलकि फुलाय।।
स्तन दुहु लाजें छपल छलाह। यौवन बल बुझि फुलि उठलाह।।
कुच नितम्ब कृत गुरुता देखि। तेहि शोकें कटि खिन्न विशेषि।।
जँघा यद्यपि गेल मोटाय। किन्तु मन्द गति मति अलसाय।।

दोहा- शैशवता क्रम-क्रम छूटल, क्रम क्रम युवा प्रचार।
खन आलस वश मन अधिक, खन चंचल व्यापार।

चौपाइ

लक्ष्मी जखन लेल अवतार। मिथिला देश भेल उजियार।।
वैकुण्ठक जे विभव विलास। आबि.कयल मिथिला पुर बास।।
सुर-तरु सुर वैकुण्ठक अंग। सभ मिथिला अयला श्री संग।।
कमला आदिक जे नब धार। सीता सखी रूप अवतार।।
अति प्रियकरि सिता लग जाथि। कति कौतुक युत संग खेलाथि।।
आणिमादिक जे आठो सिद्धि। सीता संग रहथि सभ ऋद्धि।।
नबो मात्रिका धय निज देह। मिथिला पुरमे कलयनि गेह।।
कल्प वृक्ष आदिक मन्दार। स्थिर पाँचों भेल जनकक द्वार।।
महत्तत्व आदिक जे सात। अयला जनक नगर अवदात।।
विरजा यमुनी दुग्धी धार। गंग यमुन वाणी अवतार।।
अन्य नदी जे हरिपुर रहय। मिथिला मे सभ लगली बहय।।
महि मण्डल में तीर्थ जतेक। मिथिला आबि सकल भेल एक।।
महादेव एकादश रूद्र। दिकपति भनपति सप्त समुद्र।।
सकल देव मिथिला अयलाह। विष्णु सकल सम्पत्ति लयलाह।।
मुनि महर्षि सभ द्विज देवर्षि। अयला तप कारण ब्रह्मर्षि।।
होम यज्ञ जपदान विशाल। धर्म्माचरण भरण सभ काल।।
सुख सम्पत्ति शश्यादिक धान्य। मिथिला आबि भेल सभ मान्य।।
अन्नादिक तृण जल दल फूल। रस सम्पन्न मधुर फल. मूल।।
वन-उपवन मधुमय फल लाग। शोभित सुन्दर कूप तड़ाग।।

सुखद प्रफुल्लित सुमनक पुंज। झुण्ड-झुण्ड मधुकर कुल गुंज।।
कोकिल कलरव युत आराम। मिथिला मनहु वसन्तक धाम।।
लक्ष्मी जतय कयल आबास। तहँक कहयके विभव विलास।।
अनुखन सुखी जीव समुदाय। मिथिला विभव कहल नहि जाय।।
पशु पक्षी सुख करय सदाय। कि कहब मनुजक सुख समुदाय।।

दोहा- मिथिला वासी लोक सभ, सतत रहथि आनन्द।
गति निशि दिन नहि जान क्यों, विगत द्वन्द स्वच्छन्द।।

सोरठा- कलि व्याध दृढ़ पास, जौं बान्धल कसि लाल तोहि।
छुटि जायत अनायास, कह मन दय सीता चरित।।

चौपाइ

सीता परिणय मंगल चरित। कहइतछी सुन रहय न दुरित।
एक दिन ब्रह्मा कहल एकान्त। नारद काँ पूर्वक वृत्तान्त।।
बढ़ल धरणि पर भार अपार। पाप प्रचार विपति विस्तार।।
कयल निशाचर बड़ उतपात। होम यज्ञ जप यजन निपात।।
अमरावति ओ सभ जित लेल। सुरगण काँ निष्कासन भेल।।
नहि भोजन नहि रहक ठेकान। सब विधि सुरगण दुखित महान।।
क्षीरसमुद्र गेला सभ देव। कयलनि हरिक विनय नति सेव।।
हरि प्रसन्न कहलनि की लेव। माँगु-माँगु वाँछित वर देब।।
कनयित-कनयित सुर समुदाय। निशिचर कृत दुख देल सुनाय।।
सुरगण काँ हरि कहलह बुझाय। चुप रहु जायत विपति बिलाय।।
जाऊ-जाउ सुर निज-निज धाम। हम मारब रिपु काँ संग्राम।।
सुनि आनन्द भेला सुरलोक। हरि वर सौं छूटल सभ शोक।।
धरणी धैरज धयलनि जखन। सुरगण निज गृह अयला तखन।।

दोहा- नारायण वरदय तखन, गरुड़ चढ़ल गत कुंठ।
लक्ष्मी युत अनुमति करय, अयला चल बैकुंठ।।

चौपाइ

लक्ष्मी सौ हरि कहल बुझाय। बड़ दुख सहलनि सुर समुदाय।।
हम तनिकाँ देलहुँ वरदान। अचिरहि हरब रिपुक हम प्रान।।
अवधपुरी जयबाक विचार। लेब ततहि हम नर अवतार।।
होयत प्रिये हमरहि की जाय। अहँ बिनु नहि कय सकब उपाय।।
चलु चलु भुतल प्राणपियारि। दुहु मिलि लेब असुर संहारि।।
मुनि लक्ष्मी कहलनि बड़ बेश। उचित विचार कयल प्राणेश।
लेल अयोध्या हरि अवतार। चारि अंश युत राम उदार।।
लक्ष्मी अयलिह मिथिला भूमि। ऋद्धि सिद्धि संग लयिलिह जूमि।।

सभ काँ कयल सुखी आरोग्य। सम्प्रति भेलिह विवाहक योग्य।।
हे नारद होइछ अतिकाल। बिनु हरि छुटत न दुख जंजाल।।
तनिक विवाहक करु उद्योग। सुर नर मुनिक छुटय दुख शोग।।
मिथि नामा मिथिलेश महान। जनक पितामह बड़ विज्ञान।।
महाशैव सब विधि निर्दोष। आशुतोष काँ भेल संतोष।।
जनक नृपति हेतुक पूजाक। मिथिला मे शिव धयल पिनाक।।
से अछि राखल जनकक द्वार। गुरुता कठिन विभव विस्तार।।
विभु बिनु क्यो नहि सकल उठाय। एहन प्रतिज्ञा दिअ करबाय।।
धनु पर गुण धर जे नरनाह। तनिकहिं सौं सीताक विवाह।।
करता पण जखनहि मिथिलेश। अओता हरि सुनि मिथिला देश।।
टूटत धनुष छुटत दुख शोक। मारल जायत निशिचर लोक।।

दोहा- हे नारद नहि करक थिक, एहिमे अधिक विलम्ब।
सुर मुनि सबहिक काज मे, छथि सीता अवलम्ब।।

चौपाइ

सुनि मुनि नारद घुमयित घूमि। ब्रह्मलोक सौं अयला भूमि।।
बजबथि बीणा मधुर सुराग। गबयित हरिगुण अति अनुराग।।
मिथिला पुर पावन अति जानि। अयला मुनि वर हरिपुर मानि।।
पहुँचलाह मिथिलेशक धाम। कयलनि स्वागत जनक प्रणाम।।
सीता काँ लय जनक विदेह। मुनि सौं पुछल मनक सन्देह।।
अपने काँ मुनि अछि सभ ज्ञात। परिचय हिनक करू प्रख्यात।।
हमरा रहय यज्ञ करबाक । पड़ल प्रयोजन हल धरबाक।।
जोतितहिं भूमि रही तेहि काल। बहरयिलिह महि सौं ई बाल।।
कन्या अद्‌भुत कहल न जाय। भेल प्रकाश लोक समुदाय।।
भाग्य अपन बड़ गोट हम मानि। लयलहु घर जगदम्बा जानि।।
तेहि दिन सौं सुनु हे ऋषिराज। बढ़ले जाइछ विभव समाज ।।
मिथिला शोभा बढ़ल अनूप। बुझि पड़ जनि अमरावति रूप।।
गगनगिरा सुनलहु छी गूढ़। मोह विवश होइछी पुन मूढ़।।
ग्याने जखान करैछी ध्यान। जगदम्बा दृढ़ होइछ भान ।।
जखन देखैछी आँखि उघारि। बुझि पड़ दुहिता थिकथि दुलारि।।
खेलथि बाजथि तोतर बात। हमरा कहथि मधुर दिअ तात।।
कि कहब तखनुक मोह मुनीश । डुबिरहि ममतासिन्धुक दीश।।
देखि-देखि हिनक चरित अति छोह। जनलहु पर मुनि वढ़यिछ मोह।।
अति आश्चर्य्य चरित ऋषिराज। के ई थिकथि कहू निर्व्याज।।

दोहा- की कारण अयिलिह एतय, अद्भुत धरणी फोड़ि।
जौं मुनि हम तेहि योग्य छी, कहि संशय दिअ तोड़ि।।

चौपाइ

सुनिक जनकक मुख सौं प्रिय बयन। कहलनि नारद मुनि-तपअयन।।
सुनु सुनु हे मिथिला महराज। गोपनीय कहयित छी आज।।
ई नहि प्राकृति कन्या भूप। थिकथि स्वयं लक्ष्मी अनुरूप।।
हरिक योग माया दृढ़ जानू। जगत स्वरूपा हिनकहि मानू।।
जगमे जे भासित अछि रूप। सभमे हिनके तेज अनूप।।
हम हिनकहि माया सौं मुग्ध। कयबेरि भेलहु ज्ञानगत क्षुब्ध।।
कयबेरि हमरा देलनि भुलाय। दया राखि पुनि देलनि चेताय।।
ब्रह्मादिक नहि पावथि पार। के कहिसक महिमा विस्तार।।
सुर प्रार्थित लेलनि अवतार। करतिह शीघ्र हरण महिभार।।
विष्णु सेहो महि अवतरलाह। हिनकहि सौं करताह विवाह।।
अओता गिरिजा दरशन हेतु। फुलबारीमे खगपति-केतु।।
सीतो गिरिजा पूजन काज। जयितिह सहित सखीक समाज।।
भेंट हयत दहु काँ तेहि ठाम। करता विभु विवाह सुखधाम।।
होयतनि जखन शक्ति संयोग। निशिचर नाशक हयत प्रयोग।।

सोरठा- सुनु सुनु जनक नरेश, अछि एहिमे कारण कतेक।
अहँ काँ ज्ञान विशेश, सगुण ब्रह्म देखब नयन।।

चौपाइ

मिथिलापति करु तेहन उपाय। झटिति विवाह हिनक भय जाय।।
अछि शिव धनु रखल एहि ठाम। ककरहु सौं न उठत बिनु राम।।
करू करू नृप मंगल धनु-यज्ञ। तेहिमे कयदेब एहन प्रतिज्ञ।।
जे पिनाक धनु लंत उठाय। वैदेही में सैह जमाय।।
सुनि अओता सुर नर मुनि धीर। हयत जनकरपुरमे बड़ भीर।।
ककरहु सौं नहि उठत पिनाक। संशयालु तहँ बचन अहाँक।।
सुनतहि विष्णु अंश भगवान। तोड़ता शंकर धनु महान।।
तनिकहि सौं सीताक विवाह। कयदेब नृपति सहित उत्साह।।
तखन हरण होयत महिभार। जेहि कारण लक्ष्मीक अवतार।।
अहँ अति भाग्यवान मिथिलेश। भाग्यवान पुन मिथिला देश।।
जतय लेल लक्ष्मी अवतार। के कहिसक महिमा विस्तार।।

दोहा- एहि विधि नारद कहि कथा, वीणा बाद्य सताल।
गवयित हरिगुण मधुर स्वर, चल गेला ततकाल।।

चौपाइ

तदनन्तर भृगुपति सम्प्राप्त। भेल जनकपुर भय सौं व्याप्त।।
देखि विभव मिथिलाक अनूप। क्षणभरि छला परसुधरि चूप।।
मिथिलापति कयलनि सत्कार। क्षत्रिय नाशक जनिक कुठार।।
देखल जानकीक अनुपम देह। सुर कान्याक भेल सन्देह।।
नृप सौं पुछल कहू ई नीकि। लक्ष्मी सन के कान्या थीकि।।
बुझि पड़ देखयित हिनकर भाल। विष्णु वधू सनि विभव विशाल।।
जनक कहल महि जोतल जखन। कन्या लाभ मही सौं तखन।।
परसुराम कहलनि अगुताय। नृप हमरहि कन्या देल जाय।।
कन्यारत्न हमर छथि योग्य। पाणिग्रहण करब सुख भोग्य।।
से सुनि कहल जनक महराज। अपने जाइत छी तप काज।।
अपने रहब समाधि लगाय। गिरि कन्दर शत वर्ष बिताय।।
वनमे कन्या रक्षा हीनि। अवला रहतिह ककर अधीनि।।
अपने एखन विपिन गेल जाय। समय स्वयम्वर आयल जाय।
कहल परसुधर गर्वित वाक। सुनु नृप ई थीक शिवक पिनाक।।
जौं हमरा तप मे लग देरि। धनुमख करब विवाहक बेरि।।
आवथि जखन वीर समुदाय। एहन प्रतिज्ञा देब सुनाय।।
जे एहि धनु पर तन्तु चढ़ाव। सैह वीर सीता काँ पाव।।
से सुनि जनक भेला आनन्द। कहलनि बेश-बेश सानन्द।।
परसुधरक मन मे ई भाव। विनु हमरे के धनुष उठाव।।

दोहा- परशुराम तप हित तखन, गेला हिमालय प्रान्त।
योगासन मन ईश पद, लगला भजय एकान्त।।

चौपाइ

दिन-दिन बढ़ सीता प्रतिविम्ब। यथा शुक्लमे चन्द्रक विम्ब।।
नित नव मंगल सखिगण संग। करथि ललित कति रंग।।
देखि-देखि जनक सगण आनन्द। कोखन नहि ककरो मन मन्द।।
जखन जनक सीता दिशि ताक। मन दय पूजथि धनुष पिनाक।।
शिव सौं मन मन कहथि मनाय। दिअ विभु कन्या योग्य जमाय।।
जतय रहय शंकर धनु धयल। ततहि जनक पूजा गृह कयल।।
पूजा द्रव्य सकल उपहार। आसन दय राखथि तैयार।।
ततय जनक पूजा कय लेथि। नित्य मधुर सीता काँ देथि।।

एहि प्रकार बितल किछु काल। सीता लीला कयल विशाल।।
एक दिन सीता देखल सबेरि। कुश कण्टक तृण धनु लग ढेरि।।
कहल मायकें हमही आज। करब पिताक टहल भल काज।।
माइक अनुमति पाओल जखन। अयलिह जल लय जानकि तखन।।
अनायास निपितहि धनु धाय। बामहि कर सौं लेल उठाय।।
बाम हाथ धनु अवनत माथ। नोचथि तृण कुश दहिना हाथ।।
अयला नृप कयनहि अस्नान। देखि चकित कृत मन अनुमान।।
शिव धनु उठ नँहि ककरो बूत। से सीता धयलनि अजगूत।।
बुझलहुँ निश्चय दृढ़ अनुमान। थिकथि योगामाया नहि आन।
गगन गिरा जे सुनलहु कान। भेल आइ से वस्तु प्रमान।।
नारद आबि कहल जे बयन। से प्रत्यक्ष देखैछी नयन।।
मूल प्रकृति ई परमा शक्ति। निश्चय रमा आन नहि व्यक्ति।।
शंकर धनुष कठिन अद्‌भुत। से उठि सकय कि अवला बूत।।
करी प्रतिज्ञा तेहन कठोर। हरि बिनु नहि पूरय क्यो और।।
करितहि रहथि विचार नरेश। ततवहि मे नीपल गेल वेश।

दोहा- धय धनुषा तेहि ठाम पर, सीता आसन देल।
मिथिलापति अति सुचित सौं, शिव-पूजन कय लेल।।

चौपाइ

एहि विधि बाल्य दशा कृत भोग्य। सीता भेलिहि विवाहक योग्य।।
नारायण आवथु एहि देश। रचना तकर कयल मिथिलेश।।
शतानन्द कँ लेल बजाय। अयला पुन मंत्री समुदाय।।
सभकें कहल मनक उत्साह। कर यक अछि सीताक विवाह।।
शंकर धनुष यज्ञ लेब। तेहिमे एहन प्रतिज्ञा देब।।
जे देत, शंकर धनुष चढ़ाय। से सीता पति जनक जमाय।।
तकर करू उद्योग विशेष। दिअ पठाय पाता सभ देश।।
सुर-पुर नर-पुर पुर-पाताल। जाओ निमंत्रण पत्र सकाल।।
आबथु तीनू लोकक लोक। परिचय लेब बुझब बिनु रोक।।
शतानन्द सुनि अति आनन्द। त्रिजग पठाओल दूतक बृन्द।।
सभजन कहि-कहि शुभ कल्यान। कयल यज्ञ उद्योग प्रधान।।
औषधि द्रव्य सकल मंगवाय। मखशाला मे धयल योगाय।।

दोहा- वैदेहीक विवाह हित, कयल जनक उद्योग।
धनुष यज्ञ सुनि-सुनि सकल, आयल परिजन लोग।।

चौपाइ

वैदेहीक स्वयम्वर बेश। कयल मुदित मन नृप मिथिलेश।।
रचल सभा सुन्दर सभ भाँति। सिंहासन लागल कति पाँति।।
सुर-मुनि नृपगण काँ सभ देश। गेल निमंत्रण पत्र विशेश।।
देश देश वार्ता भय गेल। चलल सकल जन हर्षक लेल।।
शक्ति उपासक वैष्णव लोक। पुण्यवान जन जे निश्शोक।।
सुनल प्रथम लक्ष्मी अवतार। सीता तृगुणा जगदाधार।।
अति उत्कंठा सबहिक चित। चलला सीता दरस निमित्त।।
विषयी जन शठ नृपक समाज। से चललाह विवाहक काज।।
सैन्य सुसज्जित बिबिध विधान। चलला नृपगण कय अभिमान।।
अयला सभजन मिथिला देश। सभक कयल सतकार नरेश।।
वासा देल जेहन जे योग्य। आवय लागल भोजन भोग्य।।
मिथिला पुरक विभव विस्तार। देखि सिहाथि नृपति सम्भार।।
अयला सुनि पुनि राबण वाण। कति बलवान सहित धनु बाण।।

दोहा- नृपति आबि डेरा करथि, देखथि शिवक पिनाक।
लाल चकित उठि उठि धरथि, रहथि लजाय अवाक।।

चौपाइ

ओतय अवध पुर राम सदाय। करथि ललित लीला समुदाय।।
देखि देखि रामक बाल बिनोद। दशरथ नृपक सतत मन मोद।।
चारू भाइक मुख देखि देखि। प्राप्त नृपति काँ हर्ष अलेखि।।
अनावृष्टिमे जनि जल वर्ष। तेहि विधि नृप काँ अनुखन हर्ष।।
वस्तु हेड़ायल भेटल फेरि। तेहि विधि नृ काँ हर्ष घनेरि।।
तापस यथा पाव तप सिद्धि। तेहि विधि नृप मन मोद सुबुद्धि।।
सुन्दर भूषण बसन मंगाय। सभ सुत काँ से देथि पहिराय।।
भोजन वस्तु सुधारस सानि। चारू भाय खाथि सुख मानि।
खन गजरथ खन उत्तम घोड़। चढ़ि दौड़ावथि हर्ष न थोड़।।
शर धनु धय खन करथि सिकार। राजनीति युत धर्म प्रचार।।

दोहा- एहि विध सुख आनन्द नित, करयित राजस भोग।
रामचन्द्र भ्राता सहित, भेला विवाहक योग।।

चौपाइ

दशरथ करितहि रहथि बिचार। दैव योग घटना निर्द्धार।।
विश्वामित्र महा मुनि धीर। जनिक तपोवन गंगा तीर।।

मख करयित तनिकाँ तेहि ठाम। करयित बिघ्न ताड़का बाम।।
घोर निशाचर आबि अनेक। करय यज्ञमे बिघ्न कतेक।।
तखन महामुनि कयल विचार। होइछ उपद्रव बारम्बार।।
बिघ्न करै अछि निशिचर क्रूर। राम बिना नहि से दुख दूर।।
हम अपनहि कौशलपुर जाय। दशरथ नृप काँ कहब बुझाय।।
माँगि लेब हम लक्ष्मण राम। तखन हयव पुन पूरण काम।।
अओता जखन राम बल धाम। निशिचर दुष्ट मरत संग्राम।।
तखन अयोध्या गेला मुनीश। दशरथ नृप काँ देल अशीश।।
कहलनि आधि मनक सभ बात। निशिचर कृत दारुण उतपात।।
सिद्धाश्रम मे राक्षस रूष्ट। तप करयित दै अछि दुख दुष्ट।।
कहँधरि कहब बिपति बिस्तार। बिनु रघुवर नहि हमर उबार।।
रघुपति काँ निशिचर वध काज। देल जाय हमरा नृप आज।।
से सुनि तहि दशरथ अवधेश। व्याकुल मन अति बढ़ल कलेश।।
लगला कहय हाथ दुहु जोड़ि। शुद्ध भाव मन सौं छल छोड़ि।।
हे मुनीश बालक छथि राम। एखन जनै छथि नहि संग्राम।।
गोद राखि बितवै छी दीन। पड़ितहि साँझ पड़ैछनि नीन।।
निशिमे कति हठ सौ उठि खाथि। हमरा लगसौ कतहु नहि जाथि।।
वन जयताह कोना से राम। करता कोना विकट संग्राम।।

दोहा- ई कदाचितहु नहि हयत, हमरा सौ मुनि देव।
दोसर जे इच्छा रहय, कहु से सभ हम देव।।

चौपाइ

हमही सदल चलब ऋषि राज। मारब तहँ निशिचरक समाज।।
जौं हो मुनि धन रत्नक काज। सर्बस देब आज निर्व्याज।।
वृद्ध अवस्था बालक भेल। देव कोना वात्सल्यक लेल।।
कौशिक हमर प्राण बरु लेब। किन्तु कदापि राम नहि देब।।
सुनि मुनि नृप कृत आज्ञा भंग। भय गेल तन तामस सौं रंग।।
मुनि कौशिक अति क्रूद्ध भेलाह। कति कटु बचन कहय लगलाह।।
क्रोद्धभरै बाजथि खिसिआय। लोक डराय कै चलल पड़ाय।।
हमरा की चिन्हबह नरराज। चिन्हलनि हरिश्चन्द्र महराज।।
करब सैह गति तोहरो आज। भल भोगह सुत सम्पति राज।।
एत गोट दर्प हमर अपमान। बुझबह तहुँ नृप आइ प्रमाण।।
क्रोधक अनल चलल बहराय। सकल सभासद गेल अकुलाय।।
लागल जरय अयोध्या देश। राज प्रजा काँ पड़ल कलेश।।

हाहाकर मचल सभ ठाम। सभ जन कहय राम हा राम।।
तखन वशिष्ठ कहल ततकाल। हठ परिहरि सुनु हे भूपाल।।
मुनिक वचन रखि लोकक त्राण। करु नृप तखन हयत कल्याण।।
रघुवर काँ बालक जनु जानि। कौशिक काँ दिय हयत न हानि।।
करता रक्षा विश्वामित्र। देता शिक्षा अस्त्र पवित्र।।
कौशिक कृपैँ राम एहि बेरि। करता विजय सुयश सुख हेरि।।

दोहा- मुनि वशिष्ठ सौ विषय बुझि, भेल नृपक मन धीर।
कहल राम काँ चूमि मुख, बहयित लोचन नीर।।

चौपाइ

मुनि संग सिद्धाश्रम जाउ। मख रक्षा कयकै घुरि आउ।।
जाबत रही विपिनमे तात। मुनि संग रहब जाइ जनु कात।।
बाघ सिंह वन रहय हुड़ार। बड़ धराह वन जन्तु बिहार।।
मुनि लग रहब करत नहि घात। एकसर देखत करत उतपात।।
हमहुँ पड़ी मन तौं जनु कानि। वनमे मुनि रखता सनमानि।।
हमर परोक्ष से हमर समान। मुनिकै वुझव बुझि जनु आन।।
सुखी रहव वन मुनिक प्रसाद। हमर हेतु जनु करी विषाद।।
वनमे लागत भूख पियास। मुनि देताह मधुर फल ग्रास।।
पथमे चलयित थाकब राम। मुनि संग बैसि करब विश्राम।।
बुझिपड़ नीन तखन दुहु भाय। सूति रहब मृग-चर्म बिछाय।।
से सुनि राम कहल बड़ बेश। मुनि लग अयला हर्ष विशेश।।
पाबि राम मुनि तुष्ट भेलाह। राम लखन दुहु संग लगलाह।।
अवधक भेल उपद्रव शान्त। कयलनि मुनि अद्‌भुत वृत्तान्त।।
चलला मुनि संग युगल कुमार। शिव संग यथा गणेश कुमार।।
जखन गेला मुनि सरयू तीर। कहलनि सुनु लक्ष्मण रघुबीर।।
हम अहँ काँ दुइ शिक्षा देव। विजय हेतु दुहु जन लय लेब।।
हयत न पथ श्रम भूख पियास। मन आनन्द कथुक नहि थाम।।

रूपमाला छन्द

विधिक कन्या थिकथि से दुहु अस्त्र जननी वाम।
क्षुत्पिपाशा नाशकारिणि अति बला बल नाम।।
ज्ञान बल सुख वृद्धिकारिणि सिद्धिदा मन काम।
तनिक मंत्र जपैत जगमे विजय हो सभ ठाम।।
लोक रक्षा हेतु अहँकाँ करक अछि संग्राम।
परम दुर्जय असुर दल भल जितब अहँ संग्राम।।

ग्रहण करु दुहु मंत्रवर ई बुद्धिबल यश धाम।
परम हर्षित मुनि कथा सुनि स्वस्ति कहलनि राम।।'

चौपाइ

अहो भाग्य गुरु जौं अनुकूल। देल जाय विद्या सुखमूल।।
मुनि निदेश सौं तहँ दुहु भाय। अयला सरयू त्वरित नहाय।।
विश्वामित्र देल दुहु मंत्र। राम लखन भेलाह स्वतंत्र।।
क्षुधा तृषा श्रम रहित भेलाह। से निशि ततहि सबहि रहलाह।।
भल प्रात पुन निशा अतीत। चलला मुनि संग राम सुप्रीत।।
सरयू गंगा संगम तीर। पहुँचलाह कौशिक रघुवीर।।
सन्ध्या जानि क कयल विश्राम। देखल भल घुमि फिरि आराम।।
अति सुन्दर वन कहल न जाय। बड़ आनन्द भेला दुहु भाय।।
मुनिसौं पुछल कहू तपधाम। ककर रहय आश्रम एहि ठाम।।
कौशिक तखन कहय लगलाह। त्रिभुवन-विजयी मदन छलाह।।
तनिके रह आश्रम हे राम। तैं रमणीय अधिक ई ठाम।।
एक समय शिव लेल समाधि। सन्निधि तनिक उमागत आधि।।
इन्द्रक प्रेरित मदन मतंग। कय देल शम्भुक मानस भंग।।
तहि अपराधैं विश्वनिवास। कयलनि कन्दर्पक तन नाश।।
अपने यद्यपि मुइला काम। रहि गेल तनिक विपिन अभिराम।।

दोहा- ये सुनि उतकंठित पुछल, कथा ललित रघुनाथ।
शिव विराग कामक कुमति, कहल सकल मुनिनाथ।।

चौपाइ

कहितहिं सुनितहिं कथा विशेष। भय गेल प्रात निशा भेलि शेष।।
जग पकाश गत निशि तम शोक। जनि जग त्यागि लाभ परलोक।।
प्रात:कृत कय प्रातस्नान। चलला मुनि रघुवर भगवान।।
शोभित राम लखन मुनि संग। अश्विनिकुमार यथाविधि संग।।
चलयित पथ अयला तेहि ठाम। जेहि वन रहय ताड़का वाम।।
शब्द भयंकर सुनि रघुबीर। पुछल कयल के शब्द गँभीर।।
कौशिक कहल ताड़का वाम। गज सहस्त्र बल तकरा राम।।
करयित अछि ई बड़ उतपात। रुधिर अस्थि वरषा कर घात।।
राम एकर करु झटिति विनाश। स्त्री-बध पापक करु जनु त्राश।।
पूर्व विरोचन-सुता बलिष्ट। कयल जगत नाशक से चेष्ट।।
तकरा मारल कुपित सुरेश। बाँचल तखन सृष्टि महि देश।।
पुनि दुष्टा मुनि शुक्रक माय। सुरपति नाशक कयल उपाय।।

तकरा मारि स्वयं भगवान। विष्णु बचाओल इन्द्रक प्राण।।
पुर्वहु दुष्ट नारि कति मारि। कयल लोक उपकारि मुरारि।।
जखनहिं कहयित रहथ मुनीश। चलि आइलि दुष्टा तेहि दीश।।
मुनिकें देखि ताड़का ततय। उपल वृष्टि लागलि से करय।।
पुनि दुष्टा एक विटप उपारि। दौड़लि मुनिपर गरजि प्रचारि।।

दोहा- तेहिखान गुरु-आदेशसौं, सावधान भय राम।
मारल शर सन्धानि तहँ, मुइलि ताड़िका वाम।।

चौपाइ

मुनिक हृदय अति हर्षित भेल। रामचन्द्रकाँ आशिष देल।।
अस्त्र-शस्त्र पुनि विविध प्रकार। देल रामकाँ मुनि उपहार।।
तखन ताड़का वनसौं राम। चलला गुरुक संग बलधाम।।
चलयित-चलयित पथ अति विकट। पहुचलाह सिद्धाश्रम निकट।।
विपिन मनोहर से पुनि देखि। पूछल राम वन विषय विशेखि।।
कौशिक कहल सुनिय हे राम। सिद्धाश्रम एहि विपिनक नाम।।
प्रथम एतहि अपनहि भगवान। कतेक वरष कयलनि तप ध्यान।।
बावन तप कयलनि एहि देश। तखन भेल सुर काज विशेष।।
आबि-आबि पुनि कतेक मुनीश। सिद्धि कयल तप एहि वन दीश।।
हमरो कुटी एतहि अछि राम। यज्ञ-भूमि अछि ताही ठाम।।
सुनि रघुनन्दन अति आनन्द। सिद्धाश्रम अयला सुखकन्द।।
ततय रामकाँ विश्वामित्र। देल मंत्र संहार पवित्र।।
सुर-निर्मित दिव्यस्त्र अनेक। देल सकल राखल नहि एक।।
कहल अस्त्र सभकाँ रघुनाथ। स्मरणहिं अबिहह हमरा हाथ।।
एखन जाह सभ मिलि स्वस्थान। सुनि सभ भय गेल अन्तर्द्धान।।
तखन सुचित कौशिक मुनिनाथ। कहल रामसौं हे रघुनाथ।।
छौ दिन धरि निद्रा आहार। त्यागि करब रक्षा अनिवार।।
राक्षस आबि करय उतपात। शरसौं तनिक करब निपात।।
एहिविधि कौशिक देल बुझाय। रहला सजग ततय दुहु भाय।।
तखन कयल मनि मख आरम्भ। निशिचरगण आयल कय दम्भ।।
लागल करय उपद्रव घोर। मारल रघुवर विशिख कठोर।।
मुइल सुबाहु आदि सभ नीच। केवल रहल एक मारीच।।
तकरा मारल बिनु फर वाण। खसल जल...
छल मारीचक काज विशेष। तैं नहि...

दोहा- निशिचरकृत जे विघ्न छल, सकल निवारण भेल।
कौशिक मुनि विधिवत तखन, यज्ञ साँग कय लेल।।
सोरठा- हाथ जोड़ि रघुराज, पुछल करिय आदेश पुनि।
करब सेहो हम काज, सेवक काँ न विलम्ब किछु।।

चौपाइ

मुनि प्रसन्न कहलनि सुनु राम। कयल बहुत श्रम करु विश्राम।।
राम लखन सिद्धाश्रम देश। लगला रहय मुदित मन बेश।।
तदन्तर मिथिला धनुयज्ञ। सुनलनि करथि जनक सर्वज्ञ।।
देश-देश सौं नृपति समाज। जनक-नगर अयला महाराज।।
कौशिक काँ आयल छल पत्र। कहल राम काँ जायब तत्र।।
चलु-चलु राम अहूँ दुहु भाय। अति पवित्र मिथिला समुदाय।।
से सुनि पुलकि राम बजलाह। चलु गुरु हमरहुँ मन उत्साह।।
मिथिला महिमा सुनल पुरान। कहल अनेक मुनीश महान।।
से हम देखब हे गुरुदेव । जनक ऋषिक दर्शन कयलेब ।।

एक दिन सभ मिलि उपवन गेलि। विद्युत-सम सभ शोभित भेलि।।
मोहित पवन कहल अविचारि। रति करु हमरा सौं सभ नारि।।
देवी होयब भाग्य विशाल। मानुष तन नहि रह चिरकाल।।
कन्या कहल विलखि अति दीन। छी बापक हम सबहि अधीन।।
बापक अनुमति बिनु सुनु पवन। करब न अहँक निकट हम गमन।।
से सुनि पवन तनिक सभ अंग। क्रोधें कुत्सित कयदेल भंग।।
कन्यागण कुब्जा से कयल। नृप कुशनाभ शोक मन भयल।।
ब्रह्मदत्त नामक मुनि रहल। तनिकाँ सभ कन्या दल कहल।।
हे मुनि अहँ छी तपक निधान। कन्या सभक करू कल्याण।।
होइतहि मात्र मुनिक सम्पर्क। सुन्दरि भेलिह दीप्त जनि अर्क।।
रहथि अपुत्रक नृप कुशनाभ। मख सौं कयल पुत्र एक लाभ।।
गाधि नाम तनिकर विख्यात। तनिके पुत्र थिकहुँ हम तात।।
सत्यवती सोदरि मन जेष्ठि। धर्म प्रतिव्रतमे बड़ि श्रेष्ठि।।
कौशिकि तनिके दोसर नाम। हिमगिरि सौं बहयित छथि राम।।
शीलत जल सुख धर्म्म महान। प्राची दिशि मिथिलाक सिमान।।
हमरो कुटी ओतहि अछि राम। सिद्धाश्रम अयलहुँ तप काम।।

तखन देल शिव गंगादान। तेहिसौं भय गेल विश्वक त्रान॥
लयला बड़-बड़ शिखर ढ़हाय। अपन पितरकाँ तारल जाय॥
धर्म्मक ध्वजा देल फहराय। पाबथि सद्गति लोक नहाय॥
भागीरथी नाम तँ भेल। देव-पितर सभकाँ गति देल॥
तदवधि लोक पितर गति हीन। मनबथि सभखन विधिसौं दीन॥
हमरा कुलमे क्यों मतिमान। जाथु विधाता गंगा-स्नान॥
तेहि योगें हमरो निस्तार। होयत सुयश सुगति विस्तार॥
गंगातट बस जनिकर वंश । सुरपुरमे नित तनिक प्रशंस॥

दोहा- अकथनीय गंगा-महिम, थोड़ कहल हम राम।
ब्रह्ममयी जलरूप ई, जानब मोक्षक धाम॥

चौपाइ

उत्तर दिशि हिमिगिरि सुरभूमि। दक्षिण दिशि गंगा घुमि घुमि॥
तिरहुतिक रक्षा नित करथि। मिथिलाबासिक अघ सभ हरथि॥
गंगा धारक उत्तर कूल। बसथि देव बुझि धर्मक मूल॥
मुनिगण तपकर सुखित सदाय। उत्तर तीरक आश्रित जाय॥
सुनि रघुपति गंगोपाख्यान। अति आनन्द भेला भगवान॥
भक्ति सहित कृत विनय-प्रणाम। कयबेरि मज्जन कयलनि राम॥
कयबेरि कय गंगा-जलपान। चलला गुरुसंग कृपानिधान॥
गंगा-पार उतरि रघुवीर। अयला चल झट उत्तर-तीर॥
चलला तहँसौं मिथिला देश। अयला जहाँ रह सुमति नरेश॥
सुमति नृपति देखि युगल कुमार। कौशिकसौं पुछलनि सविचार॥
के ई दुहु बालक भगवान। सुन्दर गति गजराज समान॥
कमल-पत्र सन नयन विशाल। वृषभकन्ध शत्रुक जनि काल॥
अश्विनकुमार सन सुन्दर वेष। करशर धनुष प्रताप विशेष॥
रवि-राशि-गगन करथि उद्योति। तेहिविधि हिनक उदित महिज्योति॥
किअय पदाति विरथ चल जाथि। की बुझि कन्द-मूल-फल खाथि॥
कौशिक तनिक देखि अनुराग। परिचय पष्ट कहल सविभाग॥
से बुझि नृपकाँ भेल आनन्द। राखल राति ततहि सानन्द॥
सुमति नृपक देखि अति सनमान। रहला राति ततहि भगवान॥

दोहा- मुनिसौं रघुवर पुछल भल, तेहि नगरक आख्यान।
कहितहिं-सुनितहिं शुभ चरित, भेल निशा अवसान॥

सोरठा- जनम पवन उनचाश, अद्भुत इन्द्रक चरित सुनि।
रघुवर बिहँसि प्रकाश, कहल इन्द्र अति स्वारथी।

भेल प्रात चलला रघुवीर। मिथिला महि अभिमुख मतिधीर॥
जनकक जनपद मिथिला देश। शोभा देखि छुटल पथ-क्लेश॥
अति सुन्दर से कहल न जाय। देखि-देखि रामक चित लोभाय॥
वन-उपवनयुत सुन्दर भूमि। चलथि राम देखियत घुमि-घुमि॥
इन्द्रनगर सन मिथिला देश। नन्दवन सन उपवन बेश॥
गुल्मलता तरु फुलल अपार। मधुमय फल लागल विस्तार॥
परम रम्य वन कहल न जाय। मुनिगण रह जहँ कुटी बनाय॥
देखिपड़ मुनिक विलक्षण टोल। नगरहुँसौं शोभा अनमोल॥
कति बिध मृग पशु-जन्तु विराज। से जनि तपसिक प्रजा समाज॥
गरजै मृगपति बैर बिहाय। मुनि पहरा जनि पड़य सदाय॥
शुक पिक चातक चक्र चकोर। मंगल-गान करय चहुँओर॥
गुंजय मधुकर मधुर सुराग। वीण-बाद्य-सभ सुनि प्रिय लाग॥
नाचय प्रियकर सुभग मयूर। वन-बिहार देखि श्रम सभ दूर॥
यज्ञ करथि मुनिगण बनवासि। देखिपड़ होमक धूमक रासि॥
मिथिला-मंडल भरिक अकाश। धूमाछन्न सूर्य्य-द्युति हास॥
वेदाध्ययन सुसामक गान। मुनिकृत वन-वन सुनि पड़ कान॥
देखि सुभग शोभा वन राम। करथि सप्रेम ततय विश्राम॥

दोहा- देखि विभव मिथिलापुरक, भेल हृदय आनन्द।
पुलकि प्रशंसा करथि भल, मन-मन रघुकुल चन्द॥

चौपाइ

मिथिला देश परम अभिराम। सकल लोक पावन सुखधाम॥
चलयित देखल कति असथान। धनधान्ये सम्पन्न महान॥
आम्र सुकानन पनसोद्यान। सुभग सुशीतल छायावान॥
प्रजा सभक शुभ वासस्थान। भव्य भवन देखल भगवान॥
देवस्थानक गोपुर राज। देखल कति रमणीय समाज॥
सुभग पवित्रित प्रचुर तड़ाग। निर्मल वारि अमृत सन लाग॥
जीवजन्तु देखल परिपुष्ट । लोक अशोक सकल सन्तुष्ट॥
धेनु बकेन वत्सयुत गाय। झुण्ड-झुण्ड देखल रघुराय॥
अति अपूर्व शोभ विस्तार। धर्म-निरत सभ शुद्धाचार॥
वन-उपवन मुनि-आश्रम सहित। मंजुल वंजुल दूषण-रहित॥
एहि विधि चलयित देखयित राम। सुनयित मुनि मुख मंगल साम॥
पहुँचलाह गोतम वन निकट। देखल से वन श्रीहत विकट॥

सन्ध्या जानि कयल तहँ बास। घुमि फिरि देखल विपिन उदास।।
खग-मृग जीव-जन्तु नहिं एक। देखि कयल सन्देह कतेक।।
तखन पुछल गुरु कहिय प्रकाश। की कारण ई विपिन हतास।।

दोहा- विहँसि कहल कौशिक तखन, सुनु रघुनाथ प्रसंग।
ई आश्रम गोतम मुनिक, सुनिय भेल जे भंग।।

चौपाइ

गोतम मुनि तप तेजस ग्राम। तनिक कुटी छल एहि वन ठाम।।
कन्या विधिक अहल्या नाम। परमा सुन्दरि गोतम वाम।।
तनिक संग मुनिवर विज्ञान। कयल बहुत दिन तप सविधान।।
न्याय-सूत्र-कर्त्ता से राम। सकल शास्त्रवेत्ता गुणधाम।।
मुनि सौं इन्द्र पढ़थि गुरू जानि। पढ़बथि मुनि सज्जन मनमानि।।
दैवयोग एक दिन अमरेश। देखल अहल्याकाँ शुभ वेश।।
देखि तनिक पुनि सुन्दर अंग। व्यापल इन्द्रक अंग अनंग।।
करथि इन्द्र मिलबाक विचार। किन्तु लहय नहि अध व्यापार।।
चित चंचल कामुक सुरराज। अयला बदलि देह निशि व्याज।।
कुक्कुट स्वर सौं कयलनि शोर। बुझलनि मुनि जनि भय गेल भोर।।
प्रात:कृत कयं गेला नहाय। लेल इन्द्र मुनि वेष बनाय।।
कहल अहल्या सौं अति प्रीति। रमण करू नहि गेलि निशि बीति।।
बुझल अहल्या इन्द्रक व्याज। किन्तु काम वश छोड़ल लाज।।
दुहु मिलि कयल मुदित रतिरंग। मन आनन्द मुनिक भय भंग।।
रतिश्रम एतय खुखालस लेल। ओतय मुनिक मन संशय भेल।।
बुझल एखन अछिए किछु राति। शब्द कयल क्यो कपटी जाति।।
कयल ध्यान मन सुचित विचार। बुझल इन्द्रकृत अध व्यापार।।
बढ़ल क्रोध झटदय घुरलाह। गोतम निज आश्रम अयलाह।।
देखल लागल सुदृढ़ कपाट। के रोकल खल हमरे बाट।।
थर-थर कपयित सुनि-मुनि बोलि। सभय कपाट देल दुहु खोलि।।
देखि सुरेशक मुनि व्यापार। भेल क्रोध नहि रहल सम्भार।।

दोहा- क्रोधें मुनि प्रज्जवलित कति, बजला बचन कठोर।
इन्द्र अहल्या काँ तखन, देल शाप अतिघोर।।

चौपाइ

रे शठ इन्द्र राज पद पाबि। कयलें पाप कष्ट छहु भावि।।
गुरु पत्नी रति गुरु अपमान। कयलें पयबें विपति निदान।।
योनिक प्रिय नहि कयल विचार। तन मे भग भयजाउ हजार।।

तोहर राज्यसुख सभ हो नाश। निशिचर करओ अमरपुर बास।।
से सुनि इन्द्र मुनिक पद धयल। कनयित कति विनती नति कयल।।
क्षमा करिय अपराध मुनीश। भेल, अन्धार हमर दश दीश।।
शासन कयल कयल मुनि नीक। अब कय दया करिय निर्भीक।।
अपनेक विनु नहि हमर उबार। सुनि गोतम कहलनि उद्धार।
त्रेता हरि लेता अवतार। करता सभ निशिचर संहार।।
तखन अमरपुर हयतहु प्राप्त। मिथिलामे ई पाप समाप्त।।
तखन अहल्याकाँ मुनि देखि। कटु कहि गंजन कयल अलेखि।।
धिक दुष्टे तोहरा धिक्कार। कयलह पातिव्रत संहार।।
तपनाशिनि पापिनि हटि जाह। वृथा कयल तोर संग विवाह।।
पोषण-भरण वृथा हम कयल। प्रीति प्रतीति सुधा मन धयल।।
अछि निषेध नारिक विश्वास। कयल प्रतीत भेल उपहास।।
छल कयलह इन्द्रक संग पाबि। छन सुखसौं बड़ दुख छहु भावि।।
रखलह इन्द्रक तोष विहार। हयतहु दुर्गति तोहर अपार।।
पाथर देह तोहर भय जाय। भोगह दुखसमुदाय सदाय।।
तोहर करत नहि क्यों प्रतिपाल। भोगह निशिदिन विपति विशाल।।
खग मृगसौं ई वन हो हीन। निर्जनमे पड़ली रह दीन।।
क्षुधा-तृषासौं हयबह आँट। गड़ितहि रहतहु पापक काँट।।
पाप केहन करयित अछि घात। बुझि पड़तहु से सभ पश्चात।।
हम नहि बुझलहुँ नारि चरित्र। नाश भेल तें धर्म पवित्र।।
हा हम कयल ककर विश्वास। पड़ल गरामें पापक फाँस।।
सुनल अहल्या शाप कठोर। देखल मुनिकाँ क्रोधें घोर।।
डरसौं तन-मन थर-थर काँप। नयन नोर बह उर बढ़ ताप।।
पति विनु आन देखल नहि शरण। त्राहि-त्राहि कय धयलनि चरण।।
कहती किछु से नहि साधँस। पछताबथि जीवन भेल ध्वँस।।
पतिपद पकड़ि रहथि कयबार। नोर बहय जनि झरना धार।।
देखि दशा मुनिवर विज्ञान। शापानुग्रह कयल विधान।।
हयत जखन रामक अवतार। तोहरो तखन हयत निस्तार।।
अओता जखन राम एहिठाम। छुटतहु तखनहि दुख-परिणाम।।

दोहा- एहि विधि दुहुकाँ शाप दय, अपने हिमिगिरि दीश।
जाय करय लगलाह तप, गौतम तखन मुनीश।।

चौपाइ

सैह अहल्या पाथर देह। पड़लि छथि दीना विनु गेह ।।
शिशिर धाम वरषा दुखभार। सहयित छथि दुख विविध प्रकार।।

मुनिक शापसौं एहि वन राम। पशु-पक्षी नहि कर विश्राम।।
चलि तनिकाँ देखल रघुबीर। पद-रज पड़ि गेल उपल शरीर।।
रामक पदरज पड़ितहि अंग। भेलिह अहल्या पूर्वक रंग।।
त्रिभुवनमोहिनि बनल स्वरूप। सभ सुन्दरिमें सुभग अनूप।।
कयल कृताँजलि विनय विशाल। धन्य-धन्य प्रभु दीनदयाल।।
अपनेक कृपें छुटल सभ कष्ट। पाप कलाप हमर भेल नष्ट।।
अहँक चरण थिक पातकहरण। पतितहुकाँ भवसौं हो तरण।।
हम ब्राह्मणि दै छी आशीष। शीघ्र सदार होउ जगदीश।।
देखि गगनसौं देव, चरित्र। सुमन वृष्टि कर परम पवित्र।।
अपसर किन्नर गाब सुगीत। सुनि रघुनाथ भेलाह सुप्रीत।।
तखन अहल्या निर्गत शोक। पतिक समीप गेलिह बिनु रोक।।
गोतम बुझल भेलिह निष्पाप। राखल निकट छुटल संताप।।
रामक चरण हरण दुखभार। अशरण शरण करण भव पार।।
ध्यानहु जे जन चिन्तन करय। भवसागर निश्चय संतरय।।

दोहा- जे पद पाप कुशापसौं, कयल अहल्या त्राण।
तेहि चरणक मन शरण धरू, जौं चाहिय कल्याण।।

चौपाइ

से निशि विगत कयल तेहिठाम। भेल प्रात चलला श्रीराम।।
गोतमकृत तहँ धर्म्मक धार। पातालक जल वह अनिवार।।
तपवलसौं गोतम ऋषिराज। लयला महि गंगा तप-काज।।
महिमा अमित कहल नहि जाय। तेहि आश्रम लग बहथि सदाय।।
कौशिक लखन सहित रघुबीर। चल गेला तेहि तटनी तीर।।
अद्भुत चरित देखय लगलाह। भूमि फोरि बह जलक प्रवाह।।
सद्यह गंगाजल अनुमानि। स्नान कयल पिउलनि भल पानि।।
पुन चलला मुनि रघुवर लखन। देखयित मिथिला जनपद तखन।।
मुनिक कुटी देखथि जेहि ठाम। सभजन ततय करथि विश्राम।।
तीर्थ देवालय जे भेंटि जायं। महिमा कौशिक कहथि बुझाय।।
मज्जन दरशन सभमे करथि। मिथिला महि महिमा अनुसरथि।।
एहि विधि मिथिलामे रघुवीर। कौशिक संग चलथि मतिधीर।।

दोहा- राम लखन दुहु भाय केर, सुन्दर रूप निहारि।
गाम गाम आनन्द बढ, अति पुलकित नरनारि।।

चौपाइ

मुनि-संग शोभित रघुकुल-चंद। कश्यप संग जनि इन्द्र उपेन्द्र।।
देखयित सुभग नगर शुभ खेत। चलथि राम पथ अनुज समेत।।

अति रमणीय धान्य-सम्पन्न। शोभ कृषि सभ उपजल अन्न।।
धान्य-मंजरी देखक योग्य। परम सुगन्धित उत्तम भोग्य।।
देखि धान्य सभ विविध प्रकार। पूछथि गुरुसौं राम उदार।।
मिथिला देशक नव-नव अन्न। बड़ अपूर्व गुरु अछि सम्पन्न।।
पृथक-पृथक कहु नाम बुझाय। देब भरतकाँ जाय देखाय।।
विश्वामित्र कहल हे राम। कतेक धान्य अछि अगणित नाम।।
कहब कहाँ धरि नाम अपार। अमुक-अमुक ई धान्य प्रकार।।
गोधूमक अछि थोड़ प्रकार। धानक कति प्रकार संसार।।
ओदन पुनि पायस परमान्न। मोदक पूप अनेक सुखान्न।।
एहिविधि मुनिवर कहथि बुझाय। सुनि-मुनि राम चलथि हरषाय।।
चंचल बाल-स्वभावैं दौड़ि। एक-एक शीश सभक लेथि तोड़ि।।
सभ एकत्र कय गुच्छ बनाय। अति अपूर्व शोभा दरसाय।।
नगर-नगर सुन्दर उद्यान। शोभय कूप-तड़ाग महान।।
जौं-जौं आबथि मिथिला-भूमि। वन-विहार देखथि घुमि-घुमि।।

दोहा- प्रीति पुरातन देखि वन, विभुकाँ बढ़ले जाय।
चिन्हि-चिन्हि वैकुण्ठक विभव, चलथि राम हरषाय।।

चौपाइ

नरतन धय जे सुरगण रहथि। विभुकाँ देखि परस्पर कहथि।।
हरि बिनु ई मिथिला छल शून्य। से अयला भेलहुँ हम धन्य।।
लक्ष्मी हरिक सेहो छथि एतय। रहथु एतहि हरि जयता कतय।।
छल पूर्वहिं वैकुण्ठो वेश। सम्प्रति अछि श्रीहत ओ देश।।
लक्ष्मी अयिलिह मिथिला भूमि। विभु वैकुण्ठ जाथु जनु घूमि।।
भेल जीर्ण वैकुण्ठ निवास। की करता तेहिमे आवास।।
क्षीरसमुद्रहु की जयताह। सर्प-फणातर की सुतताह।।
जतय न भवन न असन प्रकार। केवल क्षीर ततय आहार ।।
लक्ष्मी ततहु न छथि एहि काल। बिनु तनिके रहताह विहाल।।
ई मिथिला सब विधि सुख वास। जतय कयल लक्ष्मी आवास।।
ऋद्धि सिद्धि सभ जतय विराज। बसथि अमित सुरमुनिक समाज।।
थिक लक्ष्मिक नैहर ई देश। रहथि पयोनिधि सँगहि रमेश।।
जनक थिकथि क्षीरोदधि देह। रहथु रमा हरि निस्सन्देह।।
भेल स्वर्ग श्रीहत सभ भाँति। मिथलहिमे बस सिद्धक पाँति।।
राम करथु जनु मिथिला त्याग। एतहि रहथु सबहिक भेल भाग।।
एहि विधि करथि मनोरथ देव। प्रभु प्रसन्न बुझि होथि अतेव।।
तपबल मुनिवर विश्वामित्र। जानथि मन-मन हरिक चरित्र।।

दोहा- देखथि रामक रुचि जेम्हर, तेहि दिशि करथि प्रयाण।
मन-मन-मुनि आनन्दसौं, मनबथि शुभ कल्याण।।

चौपाइ

परम रम्य मिथिला महि शोभ। अमरहुकाँ बसयिक बड़ लोभ।।
सुरभित विपिन कुसुम-सम्राज। पारिजात वनकाँ हो लाज।।
मधुलोभी खग मधुकरपाँति । मधु पीवय गुंजय बहु भाँति।।
कोकिल भृंगराज पिक वेश। मधुर स्वरैं गाबय सविशेष।।
कलरव कर पुन विविध विहंग। बुझि पड़ जनि ध्वनि वीण-मृदंग।।
नाचय विविध मयूर-समाज। वन-विहार देखथि रघुराज।।
गुरु संग जतय जाथि श्रीराम। शोभा देखि करथि विश्राम।।
नरतनधारी अमरक वृन्द। पूजथि विभुपद अति आनन्द।।
कुसुमक आसन देथि बिछाय। शुभ जलसौं लेथि पयर धोआय।
मधुकणिका जे तरुसौं झरय। से जनि अनुलेपन तन करय।।
झरय विटपसौं सुमन अपार। पुष्पाजंलि चढ़ बारम्बार।।
सुरभि पवन बह शीतल मंद। से जनि धूप सुगन्ध अमन्द।।
मेवारस मधुमय-फल सेब। भरि-भरि भार लाब वनदेव। ।
गुरु आज्ञासौं लक्ष्मण राम। खाथि मधुरफल कय विश्राम।।
शोभा सुखद मनक रघुवीर। देखयित चलयित नहि वन धीर।।
देखि-देखि होइन बड़ प्रीति। अयला जनकनगर एहि रीति।।

दोहा- जनकपुर अति शोभा अमित, देखथि श्रीरघुवीर
सुखित प्रफ्फुलित मुदित मन, कौखन धरथि न धीर।।

चौपाइ

कनक कोटि मणि-जटित अपार। देखल महल महा विस्तार।।
हाट-बाट चौहट्टा बजार। वणिक धनिक गृह द्रव्य अपार।।
तीनू लोकक सम्पत्ति रत्न। मिथिलामे विधि भरल सयत्न।।
अमरनगरमे धनपति एक। जनकक नगर कुबेर अनेक।।
ध्वज-पताक मुक्तायुत दाम। फहराइत देखल प्रति धाम।।
कनकभवनमे रत्नक पाँति। जगमग ज्योति बरय कति भाँति।।
रवि समान द्योतित मणि जाति। अति प्रकाश बुझि पड़य न राति।।
जेहि-जेहि दिशि देखथि दय-दृष्टि। इन्द्रावति सनि मिथिला सृष्टि।।
अति सुन्दरी नारिसमुदाय। मणिमय भूषण पहिर सदाय।।
मिथिलापुरक सकल नर-नारि। बुझि पड़ बिबुध नारि अनुहारि।।
करि-करिणीगण यूकक यूथ। घटा घोर सन सुखद वरूत्थ।।

अगणित अश्व वरण कति वरण। चलयित कर पवनक अनुकरण।।
देखल अश्व गजरथ विस्तार। जनकनगरमे विविध प्रकार।।
पंडित-गुणिगण देखल अलेख। शास्त्र-सुचिन्तक बुद्धि विशेष।।
वेदध्वनि कर विप्र-समाज। यश गाबय मागध निर्व्याज।।
सुमनवाटिका उपवन बाग। शोभामय देखयित भल लाग।।
कुसुमित सकल लता तरुपाँति। गुंजय मधुकर कुल मधुमाति।।
कोकिल कीर मधुर ध्वनि रांच। कुहुकि मयूर मुदित मन नाच।।
कमल प्रफुल्लित निर्मल नीर। बहय सुशीतल मन्द समीर।।
अमरनगर सन जनकक नगर। देखल राम मनोहर सगर।।

दोहा- कौशिक मुनिक समागमन, सुनि प्रमुदित मिथिलेश।
अपनहि आवि प्रनामकय, स्वागत कयल-विशेष।।

चौपाइ

शतानन्द मुनि नृप मिथिलेश। पूजा कयल सहित आवेश।।
कुशल-छेम पूछल मन लाय। जनकक हर्ष न हृदय समाय।।
पुछल विनीत जोड़ि दुहु हाथ। के ई दुहु बालक मुनिनाथ।।
देखि मनोहर बालक संग। बढ़ल जनक मन हर्ष-तरंग।।
अश्विनकुमार सदृश आकार। की अयला छोड़ि स्वर्ग-द्वार।।
ई दुहु शिशु सुन्दर सुकुमार। किअय पदाति कयल संचार।।
कर शर धनु क्षत्री व्यवहार। बुझि पड़ क्रम जनि राजकुमार।।
नभ-मंडल रवि-शशिसौं भास। तेहिविधि दुहु महि करथि प्रकाश।।
हिनक कहू परिचय तपधाम। कतय रहथि दुहुजन अभिराम।।
कहलनि विश्वामित्र बुझाय। दशरथतनय थिकथि दुहु भाय।।
हमरा यज्ञ करक छल काज। लयलहु देलनि अवध महराज।।
निशिचर कयलक अति उतपात। तेहि सभकाँ ई कयल निपात।।
कि कहब थिकथि ब्रलक ई अयन। सिद्धाश्रमकें कयलनि चयन।।
पथमे अवयित गौतमनारि। पाथर छलिह देलनि ई तारि।।
धनुषयज्ञ देखक आवेश। तें आयल छथि मिथिला देश।।

दोहा- एहिविधि कौशिक कहल सभ, कथा सहित अनुराग।
सुनि विदेह आनन्द मन, बुझल अपन बड़भाग।।

चौपाइ

जनक नृपतिकाँ अति आवेश। बासा देल तनिक बड़ बेश।
दुहु बालककाँ छन-छन देखि। मिथिलापति परिहरल निमेखि।।
जाय सकथि नहि अपन समाज। बैसले बिसरि गेला सभ काज।।

विश्वामित्र कहल कय बेरि। चलला जनक देखथि फिरि-फिरि।।
अयला तखन जनक स्वस्थान। लगला करय यज्ञ-ओरिआन।।
एतय रामकाँ कौशिक कहल। चलिय सबहि मिथिलामे टहल।।
से सुनि राम कृतांजलि भाष। चलु गुरु हमरहुँ अछि अभिलाष।।
कौशिक आगु पाछु दुहु भाय। करयति द्योतित रवि शशि-न्याय।।
चलला देखयित शोभापुञ्ज। कोकिल कुहुक मुखर अलिगुञ्ज।।
सींचल शीतल जलसौं बाट। दुहुँ दिशि शोभ पताका पाट।।
सुमन सुगन्धित लटकल माल। सौरभ सुख सर्वत्र विशाल।।
अन्तःपुर पुनि गृह प्रति द्वार। गायक नर्त्तक नाच अपार।।
देवालय पुन चैत्य स्थान। धयल अन्न जल सुधा समान।।
अति आवेश सहित सभ देथि। जनिकाँ जतेक रुचय से लेथि।।
अति रमनीय मनोहर गान। उत्सव कर जन विविध विधान।।
अस्त्र-शस्त्रसौं सज्जित वीर। नगरक पहरा देथि सुधीर।।

दोहा- अति रमणीय सुखासपद, अकथनीय नृपधाम।
देखि बढ़य आनन्द अति, छन-छन ताकथि राम।।

चौपाइ

राम लखनकाँ लय मुनि संग। बुलि-बुलि देखबथि नयन उमंग।।
की सुन्दर ई मिथिला भूमि। देखिय राम लखन घुमि-घूमि।।
की उद्यान लता तरु फूल। की सुन्दर छाया सुखमूल।।
की रमणीय सुखद खग-गान। की मधुपक धुनि सुनि पड़ कान।।
दर्शनीय ई कतेक तड़ाग। निर्मल वारि सुधा सन लाग।।
की सुन्दर कमलक वन शोभ। उड़ि-उड़ि भ्रमर भ्रमय मधु लोभ।।
जलपक्षी कति करय बिहार। निर्भय इति-उत कर संचार।।
देखु तपोवन पावन राम। की सुन्दर ई तपसिक धाम।।
कृष्णासार पुनि विविध कुरंग। विचरय वन कति रंग-विहंग।।
शुक-शारिका बैसि तरु डारि। पष्ट बजै अछि शास्त्र विचारि।।
मिथिलावासी खग-मृग-जन्तु। सभकाँ अवगत धर्म्मक तन्तु।।
जेहन ज्ञानवान मिथिलेश। तेहने तनिक प्रजा पुन देश।।
देखु राम सर नदी पुनीत। जल सुस्वादु यथा नवीनत।।
की सुन्दर वन अछि दुहु कूल। सुखद समीर बहय अनकूल।।
समय-समय पर वारिद वरष। उपजय अन्न प्रजा अति हरष।।
रत्नाकर सन मिथिला देश। अन्न-द्रव्यसौं भरल विशेष।।
विविध महौषधि मूल प्रकाश। निकट हिमालय सुरमहि भास।।
की सुन्दर मिथिला महिलोक। कोमल चित सुशील गत शोक।।

संचर धर्म-क्रियापथ नीति। बड़ सौजन्य वचन घन प्रीति।।
नारि सुनयना परम सुशीला। रमा समा सुन्दरि सन्मीला।।
कुल दैवत शुभ मति अघरहित। सकल रसज्ञा लज्जा-सहित।।
हास-विलास-कला सभ जान। सभ गुणआगरि नागरि वाम।।

दोहा- एहि प्रकार रघवीरकाँ, ठाम-ठाम मुनि जाय।
पृथक-पृथक मिथिलापुरक, शोभा देल देखाय।।

चौपाइ

सकल सरोवर सुर अवतार। कहल सभक महिमा विस्तार।।
मिथिलामे जे नदी पुनीत। कहल सभक महिमा-गुण-गीत।।
देववृक्ष वापी-समुदाय। कहि देल महिमा सभक बुझाय।।
मिथिला भूपुर यंत्राकार। महिमा कहल रहस्य प्रकार।।
बैंकुण्ठक सभ विभव-विलास। देखि भेल प्रभुकाँ उल्लास।।
सकल तीर्थ सर नदी विशाल। वन-उपवन देखल ततकाल।।
देखि ऋद्धि-सिद्धिक विन्यास। श्रीनिवास-हृदि कमल विकास।।
घुरिघुरि फिरिफिरि सभ दिश ताक। देखल रघुवर धनुष पिनाक।।
अद्भुत भूतेशक कोदण्ड। देखि पड़ मानहु पर्वत-खण्ड।।
गुरुसौं विस्मित पुछलनि राम। शंकर धनु रह शंकरधाम।।
एतय कोना आयल गुरुदेव। अपनेसौं कारण बुझि लेब।।
बड़ विचित्र बुझि पड़ वृतान्त। कहल जाय गुरु आद्योपान्त।।
हमरा मनमें बड़ संदेह। से छोड़ाउ गुरू ज्ञानक गेह।।
रहनिहार शिवपुर जे धनुष। से आयल कत रह जहँ मनुष।।
तकर कहू गुरु हेतु बुझाय। जेहिसौं मन संशय छुटि जाय।।

दोहा- कौशिक मुनि कहलनि तखन, मन दय सुनु रघुनाथ।
जे विधि आयल धनुष एत, कहयित छी गुणगाथ।।

चौपाइ

मिथि नामा नृप बड़ विख्यात। तीरहुतिक अधिपति प्रख्यात।।
पालथि प्रजा नीति अनुसार। धर्म्मपरायण परमोदार।।
से कयलनि एक समय विचार। विनु योगे नहि मुक्ति-प्रकार।।
सुचित करक थिक योगाभ्यास। जेहिसौं छूट महा भवपास।।
शिव बिनु के उपदेष्टा आन। ततहि सिखी सभ योग-विधान।।
ई विचारि गेला कैलाश। शिव-पद प्रणमि कहल निज आश।।
शिव प्रसन्न नृपकाँ जन जानि। लगला कहय योग सुखखनि।।
बहुत काल धरि रहि कैलाश। मिथि महराज कयल अभ्यास।।

योगनिपुण मिथिकाँ शिव मानि। कहल प्रसन्न अपन जन जानि।।
योग तत्व अहँकाँ सभ भेल। हम प्रसन्न मुक्तिक पद देल।।
जाउ अपन जनपद तेहि ठाम। राज्य करू सुखसौं विश्राम।।
अहँक वंशमें सकल नरेश। हयता योगी ज्ञान विशेष।।

दोहा- शिव-आज्ञा शिर राखि मिथि, चल अयलां निज धाम।
शिव पूजथि नित योग-युत, नहिं तथापि विश्राम।।

चौपाइ

शिव दरसन बिनु विकल सदाय। शिवपद प्रणमथि शिवपुर जाय।।
जाथि योगबलसौं कैलाश। शिव पूजथि कय योगाभ्यास।।
शिव प्रसन्न कहलनि एक काल। अहँकाँ श्रम नृप होइछ विशाल।।
मिथिलापुरसौं एतय नरेश। अबयित छी बड़ होइछ कलेश।।
हम प्रसन्न छी जनु एत आउ। मिथिलहि रहू ततहि सुख पाउ।।
ई पिनाक धनु अहँकाँ देव। हमर दरस-फल एहिसौं लेब।।
चलला आशुतोष ततकाल। हाथ पिनाक संग भूपाल।।
अयला मिथि महराजक द्वार। ततय धयल निज धनु विस्तार।।
महिमा धनुषक कहल बुझाय। जे पूजत प्रणमत मन लाय।।
भुक्ति मुक्ति तकरा हम देब। अन्त अपना सन्निधि कय लेब।।
धनुषक दरसन जे करताह। हमर दरसफल से पउताह।।
कहँधरि कहु महिमा प्रख्यात। हमर अंग ई धनु साक्षात।।
जे जन परस करत एक बेरि। भवबाधासौं छुटत सबेरि।।
जाबत रहत धनुष एहिठाम। अहँसौं क्यो न जितत संग्राम।।
कतहु रहत नहि शत्रुक नाम। सब विधि नृप अहँ पूरणकाम।।
कि कहब एहि धनुषाक प्रभाव। बड़नामी भय जायब आब।।
अहिंक नामसौं नामी देश। मिथिला नाम पड़ओ बड़वेश।।
हयत परम यश धनुष-प्रसाद। आधि-व्याधि नहिं रहत विषाद।।
अति पावन होतय ई भूमि। लक्ष्मी अपनहि अउतिह जूमि।।
अहँक पौत्र जोतता ई क्षोणि। लेतिह लक्ष्मी जन्म अयोनि।।
नारायण अओता एहि देश। टूटत तखन धनुष अकलेश।।
लक्ष्मी-नारायणक विवाह। अहँक पौत्र उत्सव करताह।।
भग्न धनुष रहत एहि देश। सिद्धिपृष्ठ मिथिला महि बेश।।
ऐहि विधि नृपसौं कहि ईशान। पुन कैलाश कयल प्रस्थान।।

दोहा- शिव प्रसन्न वर दय जखन, गेला हिमालय दीश।
लगला पूजय शिव धनुष, प्रतिदिन मिथिलाधीश।।

चौपाइ

सैह धनुष ई थिक हे राम। मिथि महराज कयल बड़ नाम।।
एहि योगें ई मिथिला देश। बड़ पावन महि कयल महेश।।
सुनि धनुषक महिमा अभिराम। बड़ आनन्द भेला श्रीराम।।
शिव-आयुध बुझि कयल प्रणाम। तदुपरि मुनि संग कृत विश्राम।।
सुखसौं राति बितलि तेहि ठाम। विगत निशाँ जगला तपधाम।।
गुरुपूजा-हित लक्ष्मण राम। प्रातहि चलला उठि आराम।।
उपवन फुलहर रघुवर जाय। लगला फूल लोढ़य दुहु भाय।।
परम रम्य जनकक आराम। ततय वसन्तक निश्चल धाम।।
कुसुमित सकल कुसुम सभकाल। कोमल किसलय सुखद विशाल।।
बहय सुसौरभ मृदुल समीर। कूजय कोकिल भ्रमरक भीर।।
मधुर-मधुर फल अमृत समान। फरय सदा सुन्दर उद्यान।।
बामा कांध सतिक तेहि ठाम। खसलनि उमागाम तैं नाम।।
यद्यपि छल किछु आने काज। गेला राम फुल तोड़क व्याज।।

दोहा- तेहि अन्तर सीता ततय, अयिलिह गति गजराज।
सखी सबहि सौं आवृता, गिरजा-पूजन-काज।।

चौपाइ

नवयौवन-युत जनककुमारि। युवती सकल सखी वर नारि।।
भूषण-वसन सुभग तन राज। किंकिणि नूपुर अनुपम बाज।।
सुन्दरिगण छवि केहन प्रकाश। जनि दहमें बहु कमल विकाश।।
शोभय सुन्दरिसौं वन केहन। जनि बहु चन्द्र उदित भेल गगन।।
उपवनमे सभ करथि प्रकाश। यथा तड़ित घनमे सुख भाग।।
सखि सभ तोड़य सुमन सुहाय। फुलबाड़ीमें डारि नवाय।।
श्रमहारक छाया भल जानि। कौखन बैसि चलथि सुख मानि।।
सीता सखिक संग तेहि ठाम। टहलि-टहलि देखथि आराम।।
गति विलोकि लज्जित गजराज। राजहंस पुनि पाबथि लाज।।
कहथि देखु सखि शोभ पुंज। की रमणीय सुखद अछि कुंज।।
शोभा वनक कहल नहि जाय। रुचिर लता तरु चढ़लि फुलाय।।
बहयिछ शीतल सुरभि समीर। तरु शाखा चंचल गति धीर।।
कुसुमित लता सुपल्लव बेश। चढ़लि बढ़लि पुलकित तरु देश।।
दुर्निवार कोकिल-समुदाय। कुहु-कुहु करय कि कहय सुनाय।।
अलिकुल उड़ि-उड़ि कुसुमक कान। कि कहय से नहि होइछ भान।।
सुख बड़ बढ़य हृदय अकुलाय। कारण तकर बुझल नहि आय।।
छन-छन फरकय बामा अंग। मन-मन बाढ़य हर्ष-तरंग।।

दोहा- बिहँसि कान लगि सखि कहल, सगुनक फल वृत्तान्त।
अचिरहि मिलता अभिलखित, अहँकाँ सुपुरुष कान्त।।

चौपाइ

सुनि सीता लज्जित खिसिआय। मारल सखिकाँ कमल उठाय।।
चललिह-गिरिजा-पूजन काज। गबयित सुन्दरि सखिक समाज।।
तेहिखन पुरुषोत्तम अभिराम। तोड़ितहि फूल पहुँचला राम।।
देखि वाटिका सुभग अनूप। करथि प्रशंसा रघुकुल-भूप।।
कतहु न देखल एहन उद्यान। नन्दनवन नहि हिनक समान।।
विपट-लता अवनत फल-फूल। गुंजय अलिकुल अति अनुकूल।।
सुन्दर सर निर्मल भल वारि। कनक विहंग वर बैसल डारि।।
एहन मनोहर विटप सुबेल। कतहु न नयनक गोचर भेल।।
नगरहुसौं एत मन बड़ लाग। सुख बड़ लहय बढ़य अनुराग।।
कहितहि राम रहथि एति रीति। सुनलनि ततय मनोहर गीति।।
नूपुर-धुनि सुनि चित चेहाय। देखल कुंजसौं नयन उठाय।।
त्रिजगमोहनी माधुरि रूप। लोचन गोचर भेलिह अनूप।।
मदन-मदै उनमत्त नवीन। श्रीफल सन उद्धत कुचपीन।।
हाँस-विलास प्रगट अभिलाष। कोकिल स्वरैं परस्पर भाष।।
गबयित गीति मनोहर बयनि। देखल सुंदरिगण गुण-अयनि।।
एहिमे परम सुन्दरी एक। विधु विराज बिच नखत अनेक।।'
बड़ आनन्द रामकाँ भेल। टक लगाय सभकाँ देखि लेल।।
तृपित नयन नहि तनिक अघाय। तृष्णा मन-मन बढ़ले जाय।।

दोहा- देखि जानकिक मुख कमल, मधुप राम दुहु नयन।
विवश मधुर रस पान कर, अति एकाग्र चित चयन।।

चौपाइ

लगला तर्क करय सानन्द । एतय कतय तारा-युत चन्द।।
कामहि तकयित रति अचयन। चलि अयिलिह जनि जनकक अयन।।
की ई संचीसहित सुरनारि। अयलिह देखय जनक फुलवारि।।
एहिविधि करयित कतेक विचार। घुरि-फिरि ताकथि बारम्बार।।
रामक चित चंचल भय गेल। कहल लखनसौं हर्षक लेल।।
सुन्दरि एहन देखल नहि दृष्टि। विधिक बूझि पड़ अनुपम सृष्टि।।
गति लखि लज्जित दिग्गज लोक। तैं दश दिशि गेलाह सशोक।

नयन विलोकि कुरंग लजाय। चंचल गति वन-वनहि नुकाय।।
केहरि हिनके कटि लखि छीन। गिरिकन्दर घर कयल मलीन।।
कर पद देखि कमल मन छोट। लज्जित जलहि रहय दल ओट।।
चन्द्र हिनक मुख देखि लजाय। घटय-बढ़य पुन दूरि पड़ाय।।
उपमा हिनक कहल नहि जाय। रूप अलौकिक सुखद सदाय।।

दोहा- घुरि-घुरि ताकथि राम, देखि विलक्षण रूप भल।
मन न लहय विश्राम, पूछथि छन-छन के थिकथि।।

चौपाइ

बजला लखन कयल अनुमान। थिकथि जानकी जोइछ भान।।
हिनकहिं कारण धनुषक यज्ञ। कयल जनक नृप सत्यप्रतिज्ञ।।
गिरिजा पूजय अयलिह एतय। संग सखीगण सुखमा निश्चय।।
भेल रामकाँ सुनि विश्वास। आनन्दे हृदि कमल विकाश।।
छनछन घुरि-घुरि ताकथि राम। करथि प्रसंशा प्रेमक धाम।।
सीता अति सुन्दरि सुख मूल। अनाघात नव कमलक फूल।।
नवपल्लव बिनु नख-आघात। तेहने हिनक ललित मृदु गात।।
हिनकहिं हेतु नृपति सम्भार। अयला हरषित जनकक द्वार।।
जे परिणय कर नृपित महान। भाग्यवान तनि सम नहि आन।।
जेहि पुरुषक ई हयतिह दार। धन्य तनिक सन नहि संसार।।
जनिक भवन ई रहतिह जाय। से इन्द्रहुंकाँ देत लजाय।।
एहिविधि कहयित रघुकुल-दीप। अयला गिरिजा-भवन समीप।।
देखलनि एक जनि युगल किशोर। अति सुन्दर छवि श्यामल-गोर।।
कोटि काम-युत सुभग शरीर। विवश भेल मन रहल न थीर।।
सीताकाँ से पुलकित जाय। प्रेम मगन तहँ देल देखाय।।
देखि राम-छवि सुखद विशाल। मुनिक बचन मन पड़ल सकाल।।
प्रेम-विवश रहलिह तहँ ठाढि। त्यागल नयन-पलक-गति गाढ़ि।।
चलि नहि सकथि विवश मन भेल। जल-प्रवाह रोकल जनि गेल।।
हृदय हरष बाढ़ल तन स्वेद। रसमय अंग विगत सभ खेद।।
गदगद स्वर मन भेल अधीर। बढ़ल पुलक लोचन दुहु नीर।।
तनिक दशा देखि सखि एक कहल। मन धरु धीर निकट दिन रहल।।
चलु-चलु भेल बड़ आइ अबेर। फिरि बरू आयब काल्हि सबेर।।
से सुनि सीताकाँ भेल लाज। चलली हृदय राखि रघुराज।।

मन अटकल रघुनाथक दीश। चलय चरण उठय नहि शीश।।
काँट गड़ल कहि-कहि तेहि व्याज। घुरि-घुरि ताकथि जहँ रघुराज।।
देखथि जखन राम सुखधाम। तखन होइनि मनमे विश्राम।।

दोहा- देखि राम घनश्याम घन, मन-मयूर मति गेल।
बिनु मेघहि आनन्द अति, सीताकाँ तहँ भेल।।

चौपाइ

जाय सरोवर लेल नहाय। पूजल गिरजा चरण मनाय।।
धूप-दीप-चन्दन-दल-फूल। मधुर मोद अर्पल ताम्बूल।।
पहिराओल पुनि सुन्दर माल। स्तुति नति मन दय कयल विशाल।।
अति प्रसन्न गिरिराज कुमारि। हँसि प्रसाद देल माल उतारि।।
सीता लय लेल हृदय लगाय। चललहि मनवाँछित फल पाय।।
बाहर अयलिह सीता जखन। देखल रामकाँ मोहित तखन।।
बजलिह उच्चस्वरें सुख भेल। लीला कमल ओतहि रहि गेल।।
चललिह पुनि सखि सबहिक संग। मनमे रामक प्रीति अभंग।।
गिरिजा पूजि गेलिह सिय धाम। माइक निकट कयल विश्राम।।
रामक हृदि सीता प्रतिविम्ब। पड़ल चित्र भय गेल अवलम्ब।।
अनुखन तनिक रूप मन पाडि़। मुदित रहथि मिलनक भेल चाडि़।।
देखि जानकिक प्रेम प्रभाव। विभु मनमे बाढ़ल रस-भाव।।
कहथि मनहि-मन सुमरि स्वरूप। कखन देखब पुनि रूप अनूप।।
घुरि-फिरि ताकथि तनिके बाट। फिरि अउतिह लागल उच्चाट।।
मनमे बाढ़ल विरह-कलाप। लगला रघुवर करय विलाप।।
कतय गेलहु सीता मोहि छोडि़। प्रेमक ताग देलि किय तोडि़।।
अहँ बिनु हम नहि जानल आन। छल हमरा ई मन अभिमान।।
अहाँ निठुर भय एकहि बेरि। फेकल हमरा कयल अन्धेरि।।
अहुँक बुझल प्रेमक हम भाव। किअय पड़ैलहु सरल स्वभाव।।
हमरा कयल विरह अवरोध। अहँ कठोर छी होइछ बोध।।
अहँ बिनु लता-भवन उद्यान। बुझि पड़ दिनहि भयान महान।।
तप्त समान सुशीतल वारि। भय गेल दुखद पवन श्रमहारि।।
कोमल कमल सुमन दुख-मूल। पिकवर कुहुख कानक शूल।।
अलिकुल गूंजय मानहु वाण। उड़ि-उड़ि हमर उड़ाबय प्राण।।
जौं होइ कतहु नुकायल कुंज। बाहर आउ प्रिये गुणपुंज।।
दुइ विधि छुटत हमर दुख-दाग। अहँक मिलन की प्राणक त्याग।।
अहँने अर्पण कयलहुँ प्राण। बाँचत नहि झट दय करू त्राण।।

दोहा- विरह-व्यथें रघुनाथ तहँ, विलपथि एहि विधि भ्रमि।
सीता लीला-कमल एक, देखल पड़ल छल भूमि।।

चौपाइ

फेकने रहथि सखी पर फूल। से पाओल रघुवर सुखमूल।।
झट दय करसौं लेल उठाय। सुखमय राखल हृदय लगाय।।
भेल तखन पुन मन अनुकूल। पड़ल पानि सुखयित तरु-मूल।।
तखन राम गिरिजागृहि जाय। मनसौं पूजल ध्यान लगाय।।
मनक मनोरथ मनसौं कहल। गिरिजाचरण मनहि मन गहल।।
शक्ति प्रधान जानि सुखधाम।। स्तुति ललित कयल श्रीराम।।

गीति-स्तुति

जय महेशि पुरारि दयिते प्रणत जन प्रतिपालिके।
अमरकुल-भयहरणि तारिणि असुरकुल-वल-घालिके।।
सकल जगदाधार अपने शक्तिमयि जगजालिके।
प्रसव-पालन-प्रलय अखिलो अहिँ करी सुखशालिके।।
आदि-अन्त न कतहु अपनेक विश्वमयि शिरमालिके।।
अहिंक चिन्तन-भजनसौं जन मुक्ति पाबथि कालिके।
धयल जे जन शरण अपनेक सुखित दुखदालिके।
होउ प्रसन्न परेशि परमे पाहि पर्वताबालिके।।
जय महेशि पुरारि दयिते प्रणतजन प्रतिपालिके।।

चौपाइ

सुनि रघुनाथक विनय विनीत। जगदम्बा भेलिह सुप्रीत।।
सस्मित कहल अचल वरदान। हयत झटित रघुपति कल्यान।।
मनक मनोरथ होयत पूर। सुख पायब चिन्ता करु दूर।।
जाउ-जाउ घुरि अपन समाज। सीता-लाभ अहाँकाँ आज।।
लिअ प्रसाद मोर हर्षित चित्त। शक्ति देल शुभकाल निमित्त।।
अहिसौं टूटत धनुष पिनाक। त्रिभुवन व्यापत सुयश अहाँक।।
से सुनि राम भेला आनन्द। चलला हरषित रघुकुल-चन्द।।
फुलडालीमें भरिलेल फूल। नव दुर्वादल मंगलमूल।।
चल अयला हरषित दुहु भाय। गुरुक टहल कयलनि मन लाय।।
तीनू लोक जनिक आधीन। ठाढ़ गुरुक लग से जनि दीन।
प्रलय करथि जलमय संसार। से लाबथि जल भरि भृंगार।।
जनिक ध्यान रत विधि वृषकेतु। से नीपथि चौका गुरु-हेतु।।
जनिक चरण-जल गंगाधार। से प्रभु कौशिक-चरण पखार।।
हृदय-कमल आसन जे लेथि। से मुनिकाँ कुश-असान देथि।।
जनि कृत सृष्टि सुरभि श्रीखंड। से रगड़थि झुकि चन्दन-खंड।।

सुर-मुनिमाँ पूजबथि पद-मूल। से गुरुकाँ देथि दुर्वा-फूल।।
स्वयं विष्णु अग्निक अवतार। धूप-हेतु फूकथि अंगार।।
अपनहि ज्योति-स्वरूप महीप। गुरु-पूजा-हित बारथि दीप।।
जे कयलनि षट रस निर्म्माण। से देथि फल नैवैद्य विधान।।
एहिविधि राम द्रव्य सभ धयल। कौशिक विधिवत पूजन कयल।।
देथि रामकाँ कति अशीष। सिद्धि करथु बाँछित गौरीश।।
पूजा कय उठला ऋषिराय। आसन रघुवर लेल उठाय।।
लक्ष्मण फेकल सभ निर्म्माल। अयला भानसघर ततकाल।।

दोहा- रामचन्द्र आसन धयल, लक्ष्मण, पयर धोआय।
बैसला तेहि पर मुनि 'मुदित, ठाढ़ निकट दुहु भाय।।

चौपाइ

तखन पुछल मुनि कहु हे राम। केहेन देखल जनकक आराम।।
रघुनन्दन बजला सानन्द। नन्दनविपिनक उपमा मन्द।।
कि कहब गुरू किछु कहल न जाय। गेल ततय मन हमर हेराय।।
देखि बनक शोभा सुखमूल। चकित छलहुँ हम देखि-देखि फूल।।
कि कहब बनक विशद विन्यास। मधुमासक नित ततहिं निवास।।
मधुकर विहंगक कलरव सूनि। भेल हमर मन उन्मद मूनि।।
तेहि बिच देखल गिरजाधाम। दरशनसौं पूरल सभ काम।।
शोभा अपन देखल जे आज । कि कहब गुरू कहयित हो लाज।।
मन होयछ पुन-पुन तहँ जाय। ततहि रहि सुख सहित सदाय।।
अपनेक पूजा-हित अनिबार। सुखसौं फुल लाबी भरि भार।।
रामक वचन मुदित मुनि सूनि। बुझल सकल भावी भल गूनि।।

दोहा- सभ जन परम प्रसन्न, नित्यकृत सम्पन्न कय।
खायल 'खटरस अन्न, सुधा-सरस-सुख-स्वादु युत।।

चौपाइ

विश्वामित्र कयल विश्राम। बैसला सन्निधि लक्ष्मण राम।।
कहितहि मुनितहि कथा पुरान। सन्ध्या भेल दिवस अवसान।।
छल दिनकरक प्रताप प्रचण्ड। खसला सकल तेज भेल खण्ड।।
मूनल कमलदल लगल कपाट। शयित भ्रमर बुझि रोकल बाट।।
कुमुदिनि प्रमुदित कयल प्रकाश। सुख बड़ लाभ पुरल पति आश।।
विकसित कुसुमक कली गुलाब। कलवर कर पक्षी बिनु दाव।।
समुदित नभमंडल गत चन्द्र। चन्द्रवदनि चित अति आनन्द।।
काम-विवश निशि कयल शृंगार। परिधन भूषण तारा हार।।
धवल चन्द्रिका उत्तम वसन। पहिरि चलल विधुतट मुख हँसन।।

सन्ध्या कय अयलाह मुनीश। राम दृष्टि गेल प्राची दीश।।
देखल नन्दक विम्ब-विकास। सीता मुख मन पड़ल सकाश।।
लगला करय वितर्क अमन्द। नहि सीता-मुख समता- चन्द।।
तौलल विधि दुइ तुला बैसाय। धरणी गगन मगन मन लाय।।
सीता तुला धरा नहि उठल। चन्द्र तुला आकाशहि रहल।।
पूरल कति दय तारा विन्दु। नहि समता सीता-मुख इन्दु।।
पुनि चन्द्रहि लखि सहित कलंक। मूनल राम नयन भेल शंक।।
सीता-मुख अकलंक विचारि। ध्यावथि मुदित रहथि मन पारि।।
विधु-उपमा सीता-मुख देब। बड़ अपयश जगमे हम लेब।।
प्रति तिथि घटले रहथि सदाय। मन नहि स्वस्थ व्यथा बढ़िआय।।
पूरण विम्बक देखि प्रकाश। करय राहु राकाशशि ग्रास।।
राहु दशन विष विधु युगुताय। विरही जनकाँ दैछ लगाय।।
तेहि विषसौं विरहीं अकुलाय। छटपट कय दुख सहय सदाय।।
दुखदायक विधु क्रूर स्वभाव। उपमा हिनक कहब नहि आब।।

दोहा- हृदय-कमलमे रामकाँ, लखि सीताक निबास।
तें नहि निद्रा आब तट, सौति जनिक बढ़ त्रास।।

चौपाइ

सीता-ध्यान-निरत एहि भाँति। जगले विभु रहला भरि राति।।
मनबथि कखन होयत विधि प्रात। देखब सीता-मुख अवदात।।
हाय हमर मन गेल हेराय। सीता लय गेलीह चोराय।।
होइत प्रात जायब तेहिठाम। गिरजा मठ लग फुलहर गाम।।
फुल तोड़क हमर अछि व्याज। जायब तेहि लाथैं तजि लाज।।
गुरु कहनहि छथि फुलहर जाय। फुल-फल तोड़य हेतु सदाय।।
तखन ककर डर हमरा आज। जायब ततय हयत सभ काज।।
लक्ष्मणकाँ नहि लेबनि संग। देखाता बुझता प्रेम-तरंग।।
हमरा देखि बाजलि सखि व्यंग। प्रातहि आयब सीता-संग।।
से नहि मिथ्या हयत प्रमाण। हुनकहु लागल मदनक वाण।।
ध्रुव सीता अउतिह तेहि ठाम। नयन सफल होयत अभिराम।।
सुनि-सुनि बयन सुकिंकिणि राव। कान जुड़ायत दुख नहि आब।।
सखिगण मध्य देखब मन लोभ। उड़गण मध्य यथा राशि शोभ।।
हमरहु देखितिहि वदन उठाय। नहि मुख मोबर लाज-लजाय।।
भृकुटि-धनुष-दृग शर-सन्धानि। जौं करती प्रहार किछु मानि।।
चल जायब झट तनिके निकट। कहब मनक सभ संकट विकट।।

दोहा- सीताकाँ देखितहिं उमगिं, कहब जाय तजि लाज।
चित हमर हरि लेल जे, फेरि दिअ से आज।।

करतहि मनक कथा एहि भाँति। कयल अतीत राम से राति।।
अस्ताचल अयला चल चन्द। भेल शशिक शोभा सभ मन्द।।
चानल निशि चन्द्रक सहवास। लोकलाज पुनि मानस त्रास।।
अंधकार फूजल छल केश। से सभ समटि बाँधि लेल बेश।।
नी-संगम टूटल जे हार। छल छिड़ियायल समटल तार।।
वसन किरण छल फुजल अलग्न। पहिरि चललि रहलिह नहि नग्न।।
प्रिया-विरह-दुख तेज हरास। विधु उदास अयला निज बास।।
कुमुदिनि-कुलक मलिन मुख भेल। पति-सहवासक सुख सभ गेल।।

दोहा- बद्दल छला बड़ि दूर-धरि, खसला से द्विजराज।
उदय भेल रवि दिनमणिक, एहिविधि सृष्टिक काज।।

चौपाइ

प्राची दिशि भय गेल प्रकाश। नव नृप रविक उदय उल्लास।।
अरुण वसन शुभ पहिरि दिनेश। मंच उदय-गिरि बैसला बेश।।
चहु दिशि मंगल गाब विहंग। बाजय घंटा शंख मृदंग।।
शिव-शिव ध्वनि भल हो चहुओर। मागध सूत विरद पढ़ शोर।।
नव भक्त सभ-भैरव राग। सुनि-सुनि सभकाँ बड़ अनुराग।।
कमल प्रफुल्लित मन्द समीर। बहय सुखद सौरभयुत धीर।।
गोबि मधुर रस करयित गान। लगला भ्रमय भ्रमर मतिमान।।
डाक चतुर्दिशि कुक्कुट काक। विगत वियोग दशा चकवाक।।
सुनि पक्षी कृत शब्द महान। उठला मुदित राम भगवान।।
जगला पुन कौशिक मुनि धीर। नीर कमण्डल देल रघुवीर।।
नित्यकृत कय विश्वामित्र। कहलनि सुनु रघुवर सौमित्र।।
चलु-चलु देखिय धनुषक यज्ञ। कयने छथि मिथिलेश्वर विज्ञ।।
अयला नृपति अनेक महान। धुन उठबय बड़-बड़ बलवान।।
सुर किन्नर पुनि रावण वाण। अयला दिकपति देव प्रधान।।
अओतिह तहँ मिथिलेशकुमारि। त्रिभुवनमोहिनि अति सुकुमारि।।
अति कौतूलह देखक थीक। ककरा विधि दै छथि यश नीक।।
मुनितहिं कहल मुदित श्रीराम। चलु-चलु गुरू झट दय तेहिठाम।।
मन लगले अछि हो नहि चयन। कखन देखब धनुषा भरि नयन।।

देखब सकल कुतूहल आज। की करयित छथि नृपक समाज।।
मिथिलापतिक क्रिया-विन्यास । देखब मन मे बड़ उल्लास ।।

दोहा- पुन-पुन गुरु सौं विभु कहल, चंचल बाल स्वभाव।
विहँसि कहल कौशिक चलिय, देखिक धनुष-प्रभाव।।

चौपाइ

नित्यकृत सभ कय सम्पन्न। भोजन कयल सुधासम अन्न।।
विश्वामित्र संग दुहु भाय। चलला रवि-शशि-सम द्युतिकाय।।
अति रमणीय जनकपुर धाम। चलला देखयित लक्ष्मण राम।।
सींचल जल भल पथक प्रबन्ध। तेहिपर छीटल सुमन-सुगन्ध।।
दुहु दिशि ध्वज-पताक फहराय। शोभित राजमार्ग समुदाय।।
मागध सूत सुयश भल गाब। मिथिलापतिक प्रताप देखाब।।
पर्वत तुल्य उच्च प्रासाद। देखि महल गत मनक विषाद।।
बैसि झरोखा सुन्दरि झाँक। राम-रूप देखि बढ़ अभिलाष।।
कहय परस्पर से सभ नारि। लक्ष्मण रामक रूप निहारि।।
ई बालक जे सुन्दर श्याम। योग्य जानकी वर अभिराम।।
दोसर ई जे सुन्दर गोर। योग्य उर्मिला वयस किशोर।।
परिहरि प्रण नृप करथु उपाय। दुहु कन्यामे इहैय जमाय।।
रचल विधाता तूलमतूल। दुहुक योग्य दुहु वर सुखमूल।।
ईश्वरसौं सभ कहथि मनाय। दिअ जनककाँ इयैह जमाय।।
देखयित लक्ष्मण रघुकुलदीप। अयला जनकक सभा समीप।।
कि कहब नृपक सभा-विन्यास। अमरावति सन सुखद प्रकाश।।
पंक्ति-पंक्ति सभ राज-समाज। यथायोग्य निज मंच विराज।।
तेहि विच शोभित जनक नरेश। देव-सभा मे यथा सुरेश।।
धनिक वणिक सभ जन एक कात। निज आसन बैसल सुठि गात।।
बजबय गाबय गायक लोक। सभा सुरंजित कतहु न रोक।।
चल अयला धनु-यज्ञ-स्थान। जतय रहथि सभ नृपति महान।।

दोहा- देखि सभा शोभा सुखद, प्रमुदित रघुकुलचन्द।
करथि प्रशंसा मनहिमन, जनक नृपक सानन्द।।

चौपाइ

कौशिक संग राम दुहु भाय। बैसला निज सिंहासन जाय।।
देखल ततय पिनाक महान। गुरुता कठिन कठोर अमान।।
देश-देशसौं अयला भूप। धनुष देखि विस्मित सभ चूप।।
राम-रूप-राकेश प्रकाश। देखि-देखि नृप उड्गण द्युति हास।।
मन-मन कह नृप हो नहि चयन। तोड़ता इयैह धनुष बलअयन।।

क्यो कह छथि बालक दुहु भाय। सकता नहि शिव-धनुष उठाय।।
क्यो नृप कह ककरो लगि कान। सुन्दरता दुहु जनक महान।।
देखितहि हिनक स्वरूप अनूप। करता त्याग प्रतिज्ञा भूप।।
पुन नर-नारिक सम्मत पाय। ध्रुव हिनकहिं करताह जमाय।।
पुनि अविवेकी नृपक समाज। बाजथि अहमित युत तजि लाज।।
के लेत कन्या हमर अधक्ष। तनिकाँ माबर समर समक्ष।।
जौं करताह जनक अन्याय। यमपुर पहिनहि देबनि पठाय।।
हमरा सबहि महाबल वीर। सैन्य सुसज्जित छी रणधीर।।
खण्ड-खण्ड धनुषा कय देव। सीता सुन्दरि हमही लेब।।
एहिविधि बलगथि नृपति अपार। अहंकार युत विविध प्रकार।।
अयला तखन जनक महराज। पुरजन परिजन सहित समाज।।
बैसला सिंहासन पर जाय। शतानन्द मुनिकाँ अगुगाय।।

दोहा- मिथिलापतिक सभा विशद् शोभा कहल न जाय।
अमरनगर सुरपति यथा, शोभित सुर-समुदाय।।

सोरठा- कहलनि जनक सुनाय, जे चढ़ाब शिवचाप ई।
हयता सैह जमाय, सीता दुहिता मे हमर।।

चौपाइ

जनक उक्ति मुनि सकल नरेश। उठला भषि बेश बड़ बेश।।
तदनन्तर सीता अयिलीह। जनक निदेश सखी लयिलीह।।
कि कहब तनिक सुभग अतिरूप। सुन्दरताक समुद्र अनूप।।
अकथनीय नहि पटतर योग। विधि विरचल सुन्दरि संयोग।।
विष सोदरी रमा नहि कहिय। मुखरि सरस्वति उपमा नहिय।।
गौरी छथि पुन अर्द्ध शरीर। रति अति दुखित अतनु तप पीर।।
अन्या जे युवती संसार। तक जो वृथा उपमा-व्यवहार।।
अबितहि दश दिशि भेल इजीत। चढ़ला नृपगण मोहक पोत।।
रघुवीर बल प्रबल समीर। देत उड़ाय उदधि गम्भीर।।
सीताकाँ देखलनि रघुवीर। विचलित विरह-व्यथा मन थीर।।
मन-मन लगला कहय एकान्त। विधि बुझलनि दुख हमर निर्तान्त।।
गेलिह प्राणप्रिया लय प्राण। फिरि पठाय विधि कयलनि त्राण।।
चातक तृषित यथा अकुलाय। मंगयित जल घन देल वरषाय।।
दीर्घ सुधाकर यथा चकोर। मंगयित सुधा देल नहि थोर।।
तहने सुख हमरा भेल आज। सीता देखल पुरल सभ काज।।
सीता देखलनि रामक रूप। कहथि मनहि गिरिजसौं चूप।।

जे वर देल पुरब मन मोर। रघुवर-कर उठ धनुष कठोर।।
जौं पिनाक धनु उठबय आन। तेहिखन देवि हरब मोर प्राण।।
हे विधि नारद मुनि जे कहल। सत्य भेल किछु शेषो रहल।।
से सभ करू परिपूरित आज। राखब लाज सिद्धि करू काज।।

दोहा- एति विधि सीता रामकाँ, देखि परस्पर रूप।
प्रीति पुरातन प्रगट भेल, मनबथि मन-मन चूप।।

चौपाइ

देखि सुभग सीताक स्वरूप। मन-मन करथि मनोरथ भूप।।
अछि हमरा अतिबल-उतसाह। तोड़ि धनुष ध्रुव करब विवाह।।
हमहि-हमहि धनु तोड़ब महान। बाजथि नृपगण मन-अभिमान।।
साहससौं उठि-उठि नृप जाथि। करथि पराक्रम अधिक लजाथि।।
सहस-सहस नृप एकहि बेरि। धरथि धनुष बैसथि मुँह फेरि।।
ककरहुसौं न उठल शिव-चाप। भेल वृथा सभ नृपक प्रताप।।
वाणासुर देखि रंग कुरंग। चल गेला स्वस्थान असंग।।
रहला लोभें लंकाधीश। टक-टक तकयित लोचन बीस।।
हारल क्षितिमंडलक नरेश। उठल न किंचित शिव-धनु बेश।।
छुइल न केवल धनु लंकेश। लोकक लाज प्रमाद विशेष।।
शतानन्द रावण दिसि ताकि। बजला बिहँसि व्यंगयुत झाँकि।।
बीस भुजा बल बीस समुद्र। तेहि मे ई धनु तरणी क्षुद्र।।
एकहि भुजसौं दीतथि तोड़ि। गुरु भयसौं जनि देलनि छोड़ि।।
से सुनि विहँसि कहल मिथिलेश। शिवक त्रास बुझले अछि बेश।।
शम्भुक बास जानि कैलाश। सैह उठाओल मन नहि त्रास।।
नहि मानल लोकक उपहाँस। गुरु अपकारी जगत प्रकाश।।
से की करत एहन विचार। अयला कि करय मिथिलाँ-द्वार।।
शिवगृहि गिरि तोड़यति नहि लाज। शिवक धनुष ई बचने व्याज।।
जौं रहयित मन एहन विचार। अबितथि कि करय मिथिला-द्वार।।
एतबय काज नृपति अयलाह। धनु-खण्डन सीताक विवाह।।

दोहा- से जानिकाँसौं भेल नहिं, बुझल तनिक सामर्थ।
जाथु सकल नृप अपन घर, अयला मिथिला व्यर्थ।।

चौपाइ

सुनि मिथिलेशक वचन स्वयंग। क्रोध ज्वलित दशानन अंग।।
पर्वत सन काया विस्तार। उठल जनककाँ दय ललकार।।

बाजल वचन सहित अभिमान। की ई धनु थिक तृणक समान।।
इन्द्रादिककाँ देल हराय। कैलासहुकाँ लेल उठाय।।
जनक देखाबथि की धनु क्षुद्र । तोड़ब हम करता की रुद्र।।
जेहि दिन शिव-गिरि देल उपारि। की कय सकला हमर पुरारि।।
हमरा नहि करको अछि त्रास। धनु तोड़ब वीरत्व प्रकाश।।
ई राजागण सभ गेल हारि । क्यो नहि वीर सकल थिक नारि।।
हमर पराक्रम सभ जन आज। देखथु केहन करैछी काज।।
खण्ड-खण्ड शिव-धनु हम तोड़ि। सीता लेब देब नहि छोड़ि।।
बजयित आयल धनुषक निकट। इयैह धनुष कहि विहँसल विकट।।
बाय हाथसौं उठबय लाग। उठल न धनुष बढ़ल बड़ राग।।
सावधान दहिना कर धयल। किछु नहिं उठल बहुत श्रम कयल।।
रावण उठबय धनुष कठोर। भेल नगरभरि वाणी शोर।।
बाल-बृद्ध जत छल नर-नारि। आयल कौतुक देखय विचारि।।
जनक-सभामे जे छल लोक। सभ उठि-उठि कौतुक अवलोक।।
रावणकें भेल बड़गोट आनि। तमकि धयल धनुषा दुहु पानि।।
दुइ-दुइ भुजसौं से बेरि-बेरि। धनुष धरथि पुन-पुन कर फेरि।।
अंत लगाओल बीसो हाथ। श्रमकय धयल सुदृढ़ दशमाथ।।
किंचित उठल धनुष एकभाग। किन्तु भूमि नहिं कयलक त्याग।।
रावण व्यस्त कान्ह आरोपि। उनइस भुजसौं धयल सकोपि।।
धनुष भार नहि सहि सकलाह। चुकल चरण भटदय खसलाह।।

दोहा- सभ नृपतिक अध्यक्षमें, खसला भट लंकेश।
नीचा दशमुख उपर धनु, बाढ़ल बहुत कलेश।

चौपाइ

खसल मुकुट टूटल वर हार। धोती खुजल न रहल सम्भार।।
पड़ल सभामें हाहाकार। भेल ठहक्का हँसी अभार।।
लुटि-लुटि मुकुट हँसय सभ बाल। ताली बजबय लगबय ताल।।
खसला-खासला रावण वीर। तीनिलोक-विजयी नहिं थीर।।
पड़ल उपरमें शंकर-चाप। चापल गेला गेल सभ दाप।।
खसल उपरमें धनु विस्तार। चलल रुधिर दश फुटल कपार।।
गिरिसम धनुतर दाबल गेल। मुत्र पुरीष वस्त्रमें भेल।।
दशोवदनसौं शोणित लेर। झरना सम बहि लगि गेल ढेर।।
सकल सभासद गेल अकुलाय। मूनथि मुँह पुन हँसथि भभाय।।

रावण मूर्छित लगलें चोट। मूनल नयन बीसो गोट।।
झुकि-झुकि देखय पुर-नर-नारि। बाजय हँसय पढ़य पुनि गारि।।
क्यो नृप कह रावण मरि गेल। सुरपुर पुन इन्द्रहिकाँ भेल।।
लेथु देव निज-निज अधिकार। यज्ञभाग लय करथु विहार।।
अनयास भेल सबहिक काज। निज-निज राज लेथु महराज।।
क्यो कह जीवितहि अछि दशशीश। मुर्छे मुनल विकल दृग बीस।।
मूर्छा विगत करत उतपात। की भावी अछि हो नहिं ज्ञात।।
क्यो कह दय दिअ धनुष हटाय। जीवनदान हिनकाँ भय जाय।।
क्यो नृप कह सभ बैसलहुँ हारि। धनुष न उठल देत के टारि।।
जौं रहयित से बल अधिकाय। सीता लीतहुँ धनुष चढ़ाय।।
हमहिं बूझ हिनक अधलाह। उतपातिक ई उचिते राह।।
भल भेल भेल गौरव सभ चूर। अहमित शूरक गेल बड़ि दूर।।
कहथि परस्पर विवुध विचारि। किदु दिन सीता रहथु कुमारि।।
स्वयं विष्णु रघुवर अयलाह। रहि-सहि हयबे करत विवाह।।
धनुषहितर जौं ई मरि जाय। कथिलय दोसर करब उपाय।।
एहि विधि तह कौतुक कति भेल। रावणकाँ मुर्छा बिति गेल।।
मंत्रीगणकाँ कयलक शोर। अपनहुँ लागल करय बड़ जोर।।
ऊपरसौं निशिचरगण धयल। कल-बल खल बाहर चल अयल।।
पड़ल रहल धनुषा तेहि ठाम। के उठाय सक से बिनु राम।।
हँसला देखि-देखि नृपक-समाज। रावणकाँ बड़गोट भेल लाज।।
वस्त्र बदलि कयलक विश्राम। स्वस्थ होमय लगाल तेहि ठाम।।
रावणकाँ बड़ गंजन भेल। किछुनहिं बाजल लाजक लेल।
बुझलक नहिं धनु उठयिक सक्क। सहल वचन न चलल अकबक्क।।
तदनन्तर पुनि मिथिला भूप। बजला देखि सभ्य सब नृप।।

दोहा- धनुष छूबिछुबि नृपतिगण, बैसला सभजन हारि।।
पुरल प्रतिज्ञा हमर नहि, कन्या रहलि कुमारि।।
जौं जनितहुँ संसार ई, निश्चय वीर-विहीन।
करितहु नहि हम एहन प्रन, रखितहुँ अपन अधीन।।

चौपाइ

सुनि लक्ष्मण मिथिलेशक वयन। क्रोधें ज्वलित हृदय नहि चयन।।
धड़फाड़य उठला मन माखि। ताकल सभ दिशि अरुणें आँखि।।
वजला पटकि हाथ खिसिआय। यथा चोटाओल अहि फुफुआय।।
जनकक भेल दर्प एत गोट। बेरि-बेरि बाजथि वाणी छोट।।
वीरक मुख नहि देखलनि आँखि। गूलरफल बिच रह जनि पाँखि।।

एकहि कर ब्रह्माण्ड उठाय। फोड़क बल हमरा अधिकाय।।
रघुनाथक बल कहल ने जाय। बाजथि जनक ततय अन्याय।।
आइ तकर फल देब देखाय। धनुष तोड़ि तनि प्राण नशाय।।
जौं रघुपति रोकता नहि हाथ। प्रलय करब जग जानि अनाथ।।
कयल जनक नहि क्षत्रिय कर्म। से बुझता की वीरक मर्म।।
यज्ञभूमि मिथिलापुर पाबि। निर्विवाद रहला घर आबि।।
करितहि जप-तप-पूजा-योग। जन्म बिताओल त्यागल भोग।।
ककरहुसौं नहि पड़ल विवाद। की बुझता वीरक मर्य्याद।।
तपसी जानि देलक सभ छोड़ि। तनिकाँ मन गौरब नहि थोड़ि।।
तनिकाँ कयल शान्त रघुवीर। गुरु दिशि ताकथि घुरि-घुरि वीर।।

दोहा- रामक बल-महिमा अमित, जानथि सभ ऋषिराज।
देखल उत्कंठित सकल, पुरनर-नारि-समाज।।

चौपाइ

कौशिक तखन कयल ओदश। राम उठाउ धनुष अकलेश।।
से सुनि उठला रघुबर राम। धनुष निकट गेला बलधाम।।
शिवधनु जखनहि धयलन्हि राम। फरकल वैदेहिक दृग वाम।।
जौं जौं उठबथि धनुष कठोर। पुरजन पुलकि उठय हो शोर।।
जौं-जौं उठ रघुनाथक हाथ। तौं-तौं झुक सभ नृपतिक माथ।।
राम घुमाओल धय धनु पूर। घुमल जनक मन संशय दूर।।
खींचल जेहि खन धनुष निमित्त। खींचिलेल वैदेहिक चित्त।।
धनुष नमवितहि भय गेल भंग। नृपक मनोथ गेल तेहि संग।।
टूटल-टूटल धनुष पिनाक। धन्य राम सब कह शुभवाक।।
संशय निशिपुरंवासिक वेष। तम नृपगण चल गेल अलेख।।
उदय रामरवि कयल प्रकाश। जनक मनोरथ कमल विकाश।।
पुरवासी जय-जय कर घोल। लागल बाजय बाजन ढोल।।
तखन विवाहक अवसर भेल। सभ उत्सव कर हर्षक लेल।।
नगर नारि सभ गाब सुगीति। नर्तक नृत्य करय शुभरीति।।
जनक कहल सीता एहि काल। पहिराबथु रामहि जयमाल।।
चतुरि सखी सुनि प्रेम-तंरगामुदित उठलि सीता लय संग।।
रति छवि मोहय सखिगण-रूप। सीता-छवि की कहब अनूप।।
लक्ष्मि सरस्वति गौरि कहिय। नहि पटतर सीताछवि लहिय।।
एक एक गुणसौं ई तीनि। सीता त्रिगुणा एक प्रवीनि।।
गुरुजन लाज हृदय उत्कंठ। देल माल सिय रघुवर-कंठ।।
परमानन्द मगन सभ लोक। नृपगण गेला पड़ाय सशोक।।
मुनिगण कहल सहित उत्साह। धनुषक टुटतहि भेल विवाह।।

करिय तथापि जनक कुल-रीति। एहिमे शुभ अछि कहयिछ निति।।

दोहा- परिणय दिवसक निर्णय, लिखलन्हि श्रीमिथिलेश।
कहल दूतकाँ जाह तौ, झटिति अवधपुर देश।।

चौपाइ

कौशिक जनकक सम्मति पाय। चलल दूत कौशलपुर धाय।।
चलयित-चलयित पहुँचल चार। अवधेशक उत्तम दरबार।।
देखल सुर सम सभ्य समाज। इन्द्रतुल्य दशरथ महाराज।।
अमरावति सनि सभा प्रकाश। देखितहि भेल परम उल्लास।।
नृपकै दूत पत्र देल युक्ति। लगला पढ़य विदेहक उक्ति।।
हम कयलहुँ शिवधनुष यज्ञ। भेल ततए एक कठिन प्रतिज्ञ।।
जे जन कर शंकर-धनु भंग। सीता-परिणय तनिकहि संग।।
अयला महिमंडलक नरेश। क्यो न उठा सकला धनु बेश।।
तोड़ल अपनेक बालक राम। चौदह भुवन कयल बड़ नाम।।
अघुना सीता तनिकहि देब। अपनेसौं अनुमति बुझिलेब।।
मिथिला मे नृप आयल जाय। कन्यादान निबाहल जाय।।
एहिविधि पाँति पढ़ल नरेश। सभ्य सहित सुख पाओल बेश।।
सभजन लगला कहय विचार। ई सम्बन्ध उचित व्यवहार।।
नृपतिक हर्ष कहल नहि जाय। अयला अन्त:पुर हरषाय।।
रानी सभकाँ देल सुनाय। आनन्दक जल नयन बहाय।।
पुनि बाहर झट दय अयलाह। गुरुसौं पूछि कहय लगलाह।।
चलु-चलु मिथिला मंत्री लोक। चतुरंगिनी सैन्य विनु रोक।।
सुनि सज्जित आयल बरिआत। चलल सैन्य डंका आघात।।
दशरथ नृप मन बड़ उत्साह। चलला पुत्रक करय विवाह।।

दोहा– बजयित बाजन विविध विविध, गबयित गुणिक समाज।
पहुँचलाह मिथिलानगर , सैन्य सहित महराज।।

चौपाइ

अगणित दसरथ बरियात। लयला यतहु वृत्त सरियात।।
स्वगत परिछि गेला जनवास। डेरा पड़ल सुखद आवास।।
अपनहि उठि-उठि श्रीमिथिलेश। शिष्टाचार कयल बड़ बेश।।
कुशल-क्षेम सभसौं पुछि लेथि। अंकमालिका सभकाँ देथि।।
सभ जनकाँ आसन बैसाय। अपनहि लेलनि पयर धोआय।।
संकेतहि सीता कहि देलि। ऋद्धि-सिद्धि सभ अबयित गेलि।।
तनिक प्रभावहिसौं ततकाल। सम्पत्ति संचित भेल विशाल।।

सुखद सेज मणिमय कतिधाम। भोजन वृत्त भेल तेहि ठाम।।
सुर-दुलर्भ भोजन आवास। अनायस भेल ततय प्रकाश।।
देखि विशद सम्पत्ति मिथिलाक। बरियाति सभ रहल अवाक।।
बुझि पड़ियन्हि नहि ई भुविलोक। चल अयलहुँ जनि इन्द्रक लोक।।
निश्चय ई अमरावति थीकि। एहन कतय गृहि सम्पत्ति नीकि।।
नन्दनवन सम विपिन सुशोभ। अमृतमय भोजन सुख-लोभ।।
कनकधाम मणिमय सोपान। भीत सचित्रित रत्न-विधान।।
रत्नाकर सुनल बड़ नाम। एतेक रत्न नहि ताहू ठाम।।
अलकापुर जहँ रहथि कुबेर। ततहु एतेक नहि सम्पत्ति ढेर।।
भोजन-वस्तु सुधाक समान। इन्द्रहुकाँ दुर्लभ हम जान।।
सभ नर-नारि मनोहर रूप। अछि खग-मृग सभ जन्तु अनूप।।
एहि विधि चकित सबहि तेहिठाम। पुनि सभ मिलि कयलन्हि विश्राम।।
भोजन कय श्रमरहित भेलाह। नृत्यादिक देखाय लगलाह।।

दोहा- अगहन शुक्ला पंचमी, सुन्दर लग्न सुयोग।
प्राप्त भेल तेहिखन कयल, वैवाहिक उद्योग।।

चौपाइ

भेल ततय आरम्भ विवाह। राचन्द्र मण्डप अयलाह।।
अयलहि पुनि तहँ जनकदुलारि। संग सुवासिनि गबयित नारि।।
बैसला सजि सम्माज मिथिलेश। अयला सगण तखन अवधेश।।
सुरसुन्दरि सुरगण मिलि सर्व। अप्सर-किन्नरगण गन्धर्व।।
नाचथि बजबथि गाबथि गीति। कहल न हो सुख हर्षक रीति।।
मुनिगण जेहि विधि कहल विधान। कयल जनक तहँ कन्यादान।।
परिणयकालक रीति सदाय। पढ़ल पुरोहित गोत्राध्याय।।
सूर्य्यवंश नृप सुयस-विशिष्ठ। पृथक-पृथक सभ कहल वसिष्ठ।।
चंद्रवंश में जे नृप रहल। शतानन्द तनिकर गुण कहल।।
दुहु वंशक सुनि सुयश उदार। मुनिगण मुदित कहल जयकार।।
तखन जनक कहलन्हि हे राम। वैदेही कन्या गुणधाम।।
भेलिह अहँक सहधर्मिणि दार। छाया इब करती संचार।।
राखब हिनकाँमें सद्भाव। प्राणप्रिया जानब एक भाव।।
अगिनक साक्षी दय परिणाम। पाणिग्रहण कयल श्रीराम।।

दोहा- भेल गगनसौं अमर कृत, कतिविधि सुमनक वृष्टि।
राम-विवाह उछाह बड़, देखल सभ जन दृष्टि।।

चौपाइ

सीता-रामक भेल विवाह। कि कहब लोक सभक उत्साह।।
घर-घर मंगल मिथिलादेश। सुख-उत्सव सर्वत्र प्रवेश।।
तखन भरथ लक्ष्मण शत्रुध्न। कयल विवाह सेहो निर्विघ्न।।
जनकक सुता उर्मिला नाम। से भेलिह सौमित्रक वाम।।
जनकक अनुज कुशध्वज नाम। तनिकाँ दुइ कन्या अभिराम।।
भरथक परिणय माण्डवि संग। श्रुतिकीरति शत्रुघ्नक अंग।।
एहि विधि सेहो सुकन्या तीनि। तीनू भाइक भेलिह अधीनि।।
चारू भाइक भेल विवाह। जनकनगर घर-घर उत्साह।।
सकल सुवासिनि मंगल-गीति। गायकगण गाबय भल रीति।।
तंत्री-वीणा विविध प्रकार। बजबय रागक करय प्रचार।।
गुणिगण गाबथि विधि-आलाप। गान-वाद्य संयुक्त मिलाप।।
घुमि-घुमि नटी कला कय नाचि। झुमि-झुमि मधुर मधुर स्वर राचि।।
मैथिल विपटा लगबय ताल। कहय कृपण बड़ अवध-भुआल।।
चारि वेरि खैतहुँ जे भोज। पबितहुँ दान होइत नहि आज।।
खर्चक डरैं अवध महराज। कयल एकहि बेरि चारू काज।।
अपने लेता चारि दहेज। याचक नर्तक पुरलक भोज।।
यद्यपि अवध दूरि अधिकाइ। लय जयताह बटोरि बिदाइ।।
सुनि चतुराइ अवध महराज। देथि दान सभ गुणी-समाज।।
तिरहुति देशक नाच सुगीति। दशरथकाँ सुनि बढ़यन्हि प्रीति।।
बैसथि भोजन करय नरेश। डहकन गाब नारिगण बेश।।
सुनि समधिनि मुखसौं प्रिय गारि। हंसथि खाथि पुनि बुझथि-विचारि।।
एहिविधि अति प्रसन्न अवधेश। बड़ प्रिय लगयन्हि मिथिलादेश।।

दोहा- देवादिक नररूप धय, करथि सुमंगल गान।
एतहि रहथि मंगनीय करथि, उत्सव विविध विधान।।

चौपाइ

कौतुक भवन गेला श्रीराम। अयिलिह नगरक नागरि वाम।।
कुच उत्तङ्ग अङ्ग अभिराम। वयस किशोर विवश कृत काम।।
परिधन भूशन-वसन ललाम। बुझि पड़ सभ जनि अमरक बाम।।
चन्द्रवदनि गजराज प्रचार। सभ मातलि यौवन मद्भार।।
हास्य-कलामय निपुण सुधीर। बैसलिह सभ जनि रामक तीर।।
लगलिह कहय कथायुत व्यंग। रसवश पुलकि उठय सभ अंग।।
विधिकरि लयिलिह महुअक खीर। देल परसि लेलनि रघुबीर।।
जौं-जौं भोजन रघुवर करथि। सखि मिलिहँसी करथि कटु कहथि।।
अहँक वंशकेर अद्भुत कर्म। सुनल पुरुषकैं प्रसवक धर्म।।

पुनि सुनलहुँ पायसकै खाय। लै अछि नारि पुत्र जनमाय।।
राम अहाँ जनु पायस खाउ। वैदेहिक उपहाँस बचाउ।।
स्मितमुख उत्तर कहलनि राम। अन्नहिसौं सन्तति सभ ठाम।।
ई नहि सुन्दरि किछु बिचित्र। पुरुषहिसौं हो पुत्र पवित्र।।
हम सुनलहुँ तीरहूतिक रीत। महिमे उपजय सन्तति सीत।।
मथल जाय जौं मृतक-शरीर। तेहिसौं उपजय बालक वीर।।
रामक कथा देल बहटारि। नागरि अपर देल पुनि गारि।।
माय-बापकेर जेहन वरण। होइछ सन्तति तेहि अनुकरण।।
कौशल्या कैकयि अवधेश। छथि सभ गौर सुमित्रो बेश।।
लखन रिपुघ्नक तेहने अंग। भरथ अहाँ दुहु श्यामल रंग।।
जनमल ककर थिकहुँ से कहिय। नहि तौं हारि मानि एत रहिय।।
कहलन्हि सुनि तनिकाँ पुनि राम। सत्य पुरुपजित मैथिलि वाम।।
कहल राम उत्तर सुनि व्यंग। नहि निन्दित थिक श्यामल रंग।।
जौं रहयित श्यामल अधलाह। अहँ सबकै नहि होइत चाह।।
मुख अछि चन्द्रकसन अभिराम। शोभ्य तेहिमे बिन्दी श्याम।।
देखु निज-निज देह उघारि। लेल किअय सब खोदहा पारि।।
अहाँ हारि मानय जे कहल। से नहि चित्र कथा किछु रहल।।
पुरुषहिं जितय जनकपुर-नारि। देखल सभजन आँखि पसारि।।

दोहा- एकसरि सीता सखि अहँक, धयलनि धनुष उठाय।
अयला करैय विवाह नृप, सभकाँ देल हराय।।

चौपाइ

अहुँ सभ निज-निज पतिकै जीति। हमरहु अयलहुँ जितय सुप्रीति।।
से सभ बुझल अहँक चतुराई। हम नहि हारब कहि देल आइ।।
स्मितमुख अपर कथा संचार। पुरुषा अपनेक परमोदार।।
ब्राह्मण निष्ठिक जानि महान। कति रानीकाँ कयलन्हि दान।।
मिथिलादेशक भूसूर भक्त। देव-पिरतमे बड़ अनुरक्त।।
अहँकाँ राम बहुत छथि माय। दशरथकाँ कहुँ उचित बुझाय।।
मिथिलामे सभकाँ मङ्गवाय। द्विजकाँ दान देथु हरषाय।।
सुनि सस्मित कहलन्हि रघुनाथ। सुक्रिय मैथिल विप्र यथार्थ।।
किन्तु करथि से एतहि विवाह। देशहि मे तनिकाँ निर्वाह।।
अन्य देश नहि जाथि विचारि। प्रिय लगयिन्हि बड़ि देशी नारि।।
करु प्रसन्न अँहि दय रतिदान। तनिक कृपै होयत कल्याण।।
सुनि हँसि पढ़य गारि सभ नारि। रामो हँसी करथि दय गारि।।
एहिविधि हो कति वचन-विनोद। कहँधरि कहब नित्य मनमोद।।

दोहा- उदधि जनकपुर नारिगण, जल-तरङ्ग आनन्द।
बढ़य प्रेमयुत नित्य तहँ निरखि राम मुखचन्द।।

चौपाइ

देखि-देखि मोहित विबुध सुरेश। बिसरि गेला सभ निज-निज देश।।
सुर-सुन्दरि नारिक धय रूप। मुदित रहथि सभ मिथिलहि चूप।।
मिथिलापुरिक देखि सुखभाग। अमरपुरी सुरकाँ कटु लाग।।
भेल शून्य सुरनगर उदास। मिथिले सुरक सुखद आबास।।
मिथिला मंगल देखि दिनेश। रथ अँटकाय रहथि नभ-देश।।
बहुत-बहुत दिन अटकल रहथि। मन परयिन्ह तखनहिं पुनि चलथि।।
रजनी-पतिक दशा पुनि सैह। कहल प्रभाकर गतिमति जैह।।

दोहा- एहि प्रकार आनदसौं, बीति गेल कति काल।
सृष्टिक परिपाटी मनहु, भेल नवीन विशाल।।

चौपाइ

सतत सुमङ्गल नौवति लाज। बड़ आनन्द जनक महराज।।
देखि-देखि नृप पुत्र-जमाय। हर्ष-जलधिमे रहथि समाय।।
ईश्वर सौं मनबथि दिनराति। एतहि रहथु सभ जन एहि भाँति।।
उठि प्रातहि आबथि जनवास। बरिआतीकाँ कहथि प्रकाश।।
चलु-चलु सभ जन करु असनान। भेल विलम्ब करिय जलपान।।
मेवा-मधुर अनेक प्रकार। विषझी आबय भारहि-भार।।
अमृतमय गोरस पकवान। करथि मुदित सभ जन जलपान।।
जावत हो विषझी व्यवहार। ततबहिमे पाको तैयार।।
प्रमुदित जनक सबहि लय संग। करबाबथि भोजन कति रंग।।
ऋद्धि-सिद्धि जहँ भानस करथि। सुधा स्वादु फीका अनुसरथि।।
कति भोजन व्यंजन कतिरंग । खाथि सबहिजन हर्ष-तरंग।।
जेहि व्यंजनमे रुचि बढ़ियाय। खाय लेथि भरिपेट अघाय।।
दोसर व्यंजन पड़ले रहय। मन ललचय क्यो खा नहि सकय।।
कहथि हाय विधि की कय देल। सुधा देखाय क्षुधा लय लेल।।
तेहि पर जनक आबि बेरि-बेरि। परसि प्रकार लगाबथि ढेरि।।
उचती कहथि अनेक प्रकार। सभकाँ बड़ आनन्द अपार।।

दोहा- समधि-समधि दुहु नृप मिलथि, कि कहब तखनुक हर्ष।
प्रेम [illegible] प्रवाह बढ़, आनन्दक जल वर्ष।।

चौपाइ

जनकक प्रीति देखि आवेश। ककरो मन नहि जाइय देश।।
एहि प्रकार बीतल कतिकाल। विस्मय मन दशरथ भूपाल।।

कहल जनककाँ बहुत बुझाय। करिय विदा-नृप पुत्रि-जमाय।।
सुनि विदेह नृप भेला विदेह। कहि नहि सकला हृदय-सिनेह।।
जनवासासौं अयला चूप। चिन्तित पड़ि रहला घर भूप।।
जायब नहि बरियातीक बीच। सुनब न एहन कथा पुनि नीच।।
सीता-राम प्राण उद्योति। हमरा दुहुँ आँखिक दुहुँ ज्योति।।
तनिकाँ जौं हम करब विदाय। आन्हर भय हम रहब सदाय।।
जीवन हमर रहत नहि देह। मरबे तनि बिनु निस्सन्देह।।
एहिसौं भल घर रही नुकाय। जायब नहि के करत विदाय।।
ई विचारि मिथिलेश सुजान। रहला घरहि तनिक धय ध्यान।।
बुझि पड़यिन्हि जनि सीताराम। छथि नयनक गोचर एहि ठाम।।
तेहि अन्तर शुभ जनि सुलग्न । नगर लोक आयल मुद मग्न।।
मंत्री-परिजन विविध प्रकार। लयला साँठि दहेज अपार।।
वस्तु अनेक भार कति भार। लादल गाड़ी चलल हजार।।
धेनु बकेन लाखगोट गाय। हँकबाओल चरवाह मंगाय।।
हाथी-घोड़ा ऊँट अनेक। भूषित-दासी दास कतेक।।
पाथे भोजन वस्तु अपार। लादल लाखों लाख बेगार।।
दधि-चूड़ा साँठल बितपन्न। मंगल भार चलल सम्पन्न।।

दोहा- मंगल ध्वनि मागध मुदित, बन्दीगण जयकार।
नर्तकगण सुख-नृत्य कर, बाजन बाज अपार।।

चौपाइ

सधवागण कर मंगल-गान। सीता-विरह नारि-नर कान।।
जनक सुनल आँगनमे भीर। अकचकाय उठलाह अधीर।।
की थिक कियै कनै अछि लोक। सीता बिदा बुझल भेल शोक।।
व्याकुल नृप आङ्गन अयलाह। मोहाकुल कानय लगलाह।।
नयन नोर बह मानहु धार। गद्-गद् स्वर नहि रहल सम्भार।।
छन-छन धरणि खसथि कहि आहि। बैसल कानथि लगबथि टाहि।।
व्याकुल मन मानहु अज्ञान। खसथि पड़थि नहि रहक ठेकान।।
मित्र-वर्ग कति धरबथि धीर। होथि तथापि न नृप सुस्थीर।।
देखि खेलौना सीता केरि। होथि अधीर जनक फेरि-फेरि।।
वृक्ष-लता वैदेहिक रोप। देखि-देखि जनकक मति हो लोप।।
शुक पक्षी सीता-प्रतिपाल। शोकाकुल मृग-मृगी विशाल।।
पुर-नर नारि सखी सभ लोक। रोदन करय वियोगक शोक।।
निज-निज गृहिसौं भोजन लाब। सीताकाँ सभ नारि खोआब।।

प्रेमे पुनि पट-भूषण आनि। स्नेहे कनयित कह सनमानि।।
पहिरु विभूषण वसन पवित्रि। हमरा जनु बिसरी हे पुत्रि।।
सुनि पुनि जनक नृपतिकाँ मोह। बढ़ितहि जाय बहुत हो छोह।।
कानथि धरणि खसथि कय बेरि। व्याकुल बाजथि भेल अन्हार।।
स्नेह मोहमे नृप पड़लाह। बुझि पड़ छथि जनु शुद्ध बताह।।
जेहने छला ज्ञानि गम्भीर। तेहने मोहें भेला अधीर।।

सोरठा- देखल विवुध सुरेश, मिथिलापति व्याकुल परम।
गगन गिरा तेहि देश, भेल सुनल केवल जनक।।

चौपाइ

प्रकृति-स्वरूपा-शक्ति प्रधान। जगदम्बा सीता नहि आन।।
थिकथि स्वतंत्रा विश्वाधार। हिनकहिसौं सृष्टिक व्यापार।।
धरणीकाँ भेल भार अपार। से सीता करती संहार।।
भक्त सभक हो परमोद्धार । ते सीता लेलन्हि अवतार।।
जौं ई नहि जयतीह विदेश। रहते सुर-नर मुनिक कलेश।।
करती जखन रिपुक संहार। छूटत तेहि खन भूमिक भार।।
सुनु मिथिलापति चुप रहु चुप। ज्ञान-चक्षुसौं देखि विभु रूप।।
से सुनि जनक भेला कछु शान्त। मन-मन कयल विचार एकान्त।।

दोहा- जौं मिथिलाकाँ त्याग कैं, जयता सीताराम।
हम अनाथ दुखयुत रहब, हयत कोना विश्राम।।

आङ्गनसौं बाहर पुन आबि। रामचन्द्रकाँ निज गृह लाबि।।
सविनय कहल जनक लगि कान। मिथिला जनु त्यागी भगवान।।
सीता सहित रहू एहि ठाम। हमरा नयनक गोचर राम।।
हरिहर सासुर रहथि सदाय। तनिकाँ क्यो नहि कहय बेजाय।।
जौं अनतह जायब हे देव। एहि खन प्राण त्यागि हम देब।।
सुनि प्रेमाकुल जनकक वयन। भरि आयल रामक दुहुँ नयन।।
कहलनि थिर रहु हे नृपराय। अहँक हेतु हम करब उपाय।।
बाहर अयला जखनहि राम। दशरथ कहल चलू निज धाम।।
दुहुँ गुरु-वचन न त्यागक योग। बड़ असमंजस बुझल कुयोग।।
तदनन्तर ब्रह्मा गत शोक। विदा माँगि चलला निज लोक।।
वृषभ चढ़ल शिव कहल हुलास। जाइत छी प्रभु हम कैलास।।
तखन तनिक कर धय निज हाथ। तत्व विचार पुछल रघुनाथ।।
रहने गमने नहि कल्याण। की कर्तव्य कहू भगवान।।
कहल विचार तत्व शिव भाखि। जाउ तेज मिथिलामे राखि।।

विश्वकर्मा कैं एतय मँगाय। प्रतिमा तीनि लिअ बनाबाय।।
अपन लखण वैदेहि मूर्त्ति। तेजें करु पुनि प्रतिमा पूर्त्ति।।
देखता जनक हयत विश्वास। जाउ तखन आपस आवास।।
सुनि रघुनन्दनकाँ आनन्द। शिवक कथा सभ भेल पसन्द।।
तेहि खन विश्वकर्मा मङ्गवाय। प्रतिमा तीनि लेल बनवाय।।
जनक पाबि शंकर-आदेश। कयल प्रतिष्ठा प्रतिमा बेश।।
सानुज सीताराम स्वशक्त। कयल बास प्रतिमा अनुरक्त।।
दिव्यचक्षु नृपकाँ विभु देल। लक्ष्मी-विष्णु-शेष देखि लेल।।
शुद्ध तेजमय तीनुक बास। कहल कल्प धरि करब निवास।।
तखन भेल नृपकाँ विश्वास। छूटल मोह जनित सभ त्रास।।
पूछल रामसौं जनक सप्रीति। पूजा करब कोन रीति।।
पद्धति तकर कहू भगवान। पृजककाँ, जेहिसौं कल्याण।।

दोहा- कहल राम किछु काल धरि, धीर धरू मिथलेश।
शिव कहता पूछब अहाँ, जखन जाइ हम देश।।

सोरठा- धयल जनक मय धीर, मोहजाल-माया बिगत।
ज्ञान-गिरा गम्भीर, कहल विदा सभकाँ करिय।।

चौपाइ

से सुनि मिथिलापति बहराय। विदा करय अयला हरखाय।।
तखन राम अन्त:पुर जाय। महिलागणकाँ लेल मँगाय।।
सभक भेंट कय प्रीति समेत। विदा भेला कहलनि संकेत।।
सीताराम सहित अवधेश। बरियातीगण सङ्ग सुवेश।।
अवधपुरी सभ जन चललाह। जनकक प्रीतिक करथि सराह।।
अहह धन्य मिथिलेश विदेह। देखल सुनल नहि एहन सिनेह।।
बड़ सौजन्य हृदय सद्भाव। क्यो नरेश नहि पटतर पाब।।
जानथि केहन लोक-व्यवहार। पाओल हम सभ जन सत्कार।।
बाजथि नम्र मधुर सावेश। अहंकार-अहमितिक न लेश।।
जेहने सुनल सुयस-गुण कान। तेहने देखल विलक्षण ज्ञान।।
जनिकाँ एतगोट विभव विधान। से उठि कयल स्वयं सनमान।।
आयल छल तिरहुति थत लोक। कयल सभक सत्कार अरोक।।
मन पड़यिछ से सुख अनुराग। नृपक विलक्षण ज्ञान-विराग।।
होइछ एहने मनक तरंग। मिथिलहि रहिय करिय सत्संग।।
दुहुँ लोकक सुख हयत विशेष। आवागमनक छुटत कलेश।।
शुकाचार्य कतगोट विज्ञान। व्यासक बालक नीति-निधान।।
जनिकहु व्यास कय उपदेश। अयला मिथिला छुटल कलेश।।

दोहा- एहि विधि जनकक सुयशगुण, कहयित मुदित अशोक।
अयला बाहर नगरसौं, अवध-निवासी लोक।।

चौपाइ

तदनन्तर भृगुराम उमङ्ग। मिथिला अयला क्रोधें रङ्ग।।
सुनलनि धनुप टुटल से शब्द। क्रोधें गर्जथि मानहु अब्द।।
गौरवरण धनु अंक सुहाय। जनि चन्दनतरु अहि लपटाय।।
पथमे सभकाँ लेलन्हि घेरि। क्रोधातुर बाजथि बेरि-बेरि।।
कह सभजन के तोड़ल चाप। तकरा मारि मेटायब ताप।।
क्षत्रियारि ककरहु नहि सूझ। सभक मरण अब होमहि बूझ।।
की मुँह हमर तकै छह राम। के पिनाक तोड़ल कहु नाम।।
कठिन परसु हमही कर धयल। क्षत्रिय-रहित-हमहि महि कयल।।
आइ की ककरहु बचतहु प्राण। देखय के करयित छहु त्राण।।
हँसि-हँसि उत्तर लक्ष्मण कहल। अपने ब्राह्मण बड़ तप सहल।।
उचित न मुनिकाँ क्षत्री-कर्म्म। अनुचित गड़बड़ जाती-धर्म्म।।
वृथा कयल मुनि एत बड़ रोष। एहिमे नहि ककरो अछि-दोष।।
विद्यमान धनुषा कै ज्ञान। बूझल पाप कयल अनुमान।।
ब्रह्मबधी करसों भेल परस। मात्रिबधी छुइलक पुनि करसँ।।
पाबि रामकर तीरथराज। त्यागल तन धनुषा निर्व्याज।।
तोड़लें नहि टूटल से चाप। अपनेक हृदय वृथा बढ़ ताप।।
शान्त होउ राखक थिक रोच। जे गत भेल तकर नहि सोच।।

दोहा- सुनि क्रौंधें प्रज्वलित चित, कहलनि ऋषि भृगुनाथ।
काटब एहि खन परशुसौं, प्रथमहि तोहरे माथ।।

चौपाइ

लक्ष्मण कहल इहौ की चित्र। जगजानित अछि कर्म पबित्र।।
कटितहि माथ वयस बिति गेल। विप्र-कर्म्म सभ रहिए गेल।।
माइक माथ छुटल नहि जखन। आनक शिर की बूझब तखन।।
परशुराम क्रोधें बजलाह। एखनहि हिनक करव हम राह।।
सभ जनकाँ एखनहि हम मारि। भूमिक भार देब सभ टारि।।
ई बालक छथि बड़ पकठोस। लगलें हिनक भेटायब रोस।।
ई कहि मुनि क्रोधें रङ्गलाह। तखन राम आगू अयलाह।।
कहलन्हि बृथा कयल मुनि क्रोध। लक्ष्मण बालक बहुत अबोध।।
हम अपराधी जे किछ कहिय। नीति जानि से सभ हम सहिय।।
छल पिनाक धनु पड़ल अलग्न। हमरहि छुवितहि भय गेल भग्न।।

क्षमा करब अपने तपअयन। सुनि मुनि पुनि बजला रुषि बयन।।
हमर गुरुक धनुषाकैं भंग। बाढ़ल मन अभिमान-तरंग।।
आइ तकर फल देब देखाय। भोगह भोग यमालय जाय।।
कयल निक्षत्री एकइस बेरि। से हमरहि लग बजयिछ फेरि।।
कहलनि लखन सुनिय भृगुराम। तखन छला नहि रघुपति राम।।
पुनि भृगुपति भेला बड़ क्रुद्ध। राम कयल विनती अविरुद्ध।।

दोहा- एहि विधि हँसि-हँसि लखन तहँ मुनिकाँ क्रोध बढ़ाव।
रघुपति उठि-उठि शान्तमन, करथि विनय-प्रस्ताव।।

चौपाइ

परसुराम पुनि क्रोधे रङ्ग। कहल रामकाँ दय सारङ्ग।।
एहि धनुपर चढ़बह गुन राम। तौं जानब क्षत्री बलधाम।।
लय लेल राम अपन सारङ्ग। फरकल मुनिकेर बामा अङ्ग।।
धनुश संग निज तेज अपार। खीचि लेल विभु जगदाधार।।
अनायास गुन देल चढ़ाय। परशुराम गेला अकुलाय।।
अस्त क्रोध भेला मुनि शान्त। तखन देखाओल राम एकान्त।।
दिव्यदृष्टि भार्गवकाँ देल। राम-रूप में सभ देखि लेल।।
रोम-रोम देखल ब्रह्माण्ड। पुनि देखल सभ सृष्टिक काण्ड।।
सकल चराचर सुरगण सहित। शिवब्रह्मादिक देखल कतिक।।
विश्वरूप देखल भृगुनाथ। डरसौं कपयित जोड़ल हाथ।।
विनय कयल हल-चल बलरहित। श्रीहत भृगुपति धरणी पतित।।
रामचन्द्र गेला निज धाम। सकल लोक पाओल विश्राम।।
लखन गेल सम्बत्सर बीति। पिता कहल भृगुपतिकाँ नीति।।
उठु उठु तात भेल अधलाह। राम विरोधं के बचलाह।।
ब्राह्मण छलहुँ बचल तें प्राण। केवल शक्ति हरल भगवान।।
जाउ तीर्थ दीप्तोदक नाम। हयब तहाँ अहँ पूरणकाम।।
प्रपितामह भृगु ततय अहाँक। कयलनि तप युग चारि नहाक।।
तेहिमे जखन करब असनान। तनमे आओत तेज महान।।
परशुराम उठि ततहि गेलाह। करितहिं मज्जन स्वच्छ भेलाह।।
तेज पुंज तनमे चढ़ि गेल। तप पुनि शुचिसौं करयित भेल।।

दोहा- भृगुराम अभिमानि सभ, एहि विधि गेल मेटाय।
शुद्धभाव जति शान्त मन, कयल तपस्या जाय।।

सोरठा- भजिले सीताराम, मन विहंग तन-बिटप पर।
नहि खेबा नहि दान, अनायास भव-सिन्धु तर।।

चौपाइ

ततय जनक शिवसौं कर जोड़ि। सविनय कहल हृदय छल [illegible]।।
एहे शिवशंकर दीनदयाल। हमर हरण कर संशय जाल।।
की कारण ई मिथिलादेश। सकल लोकसौं भेल विशेष।।
मिथिलहि मे की बुझि सुखसार। लक्ष्मी आबि लेल अवतार।।
हमर तपस्या केहनि पवित्र। जेहिसौं रमा कहौलनि पुत्र।।
केहन हमर पुनि भक्ति विशेष। जे बुझि विभु अयला एहि देश।।
अति पावन मिथिला की हेतु। स्थिर छथि ब्रह्म-अंश वृषकेतु।।
केहन कहू एहि देशक भाग। विभु कहियो करता नहि त्याग।।
मनमे बड़ संशय अछि ईश। समुचित उत्तर कहु जगदीश।।
कहल सदाशिव सुनु नरराज। बड़ रहस्य कहयित छी आज।।
के कहि सक मिथिलाक प्रसंश। वैकुण्ठक ई पूरण अंश।।
लक्ष्मी हरिक पाबि आदेश। कयल आबि बैकुण्ठ प्रवेश।।
सकल लोकसौं सुचि तें हेतु। मिथिला थिक नृप धर्मक सेतु।।
जनक अहाँ छीरोदधि-वंश। तें लक्ष्मी अयिलहि एहि वंश।।
अहँक तपस्या कहल न जाय। तें नारायण भेलाह जमाय।।
शुद्ध जानि मिथिला बैंकुण्ठ। ब्रह्मा-अंशमे रहल अकुण्ठ।।
महा प्रलय जावत नहि हयत। लक्ष्मी हरि मिथिलहि मे रहत।।
कि कहब नृप मिथिलाक प्रभाव। स्वर्गलोक नहि पटतर पाव।।
काशी-पुष्कर-विन्ध्य-प्रयाग। बसय वर्ष दिन जे सदभाग।।
ततबा पुण्य समान स्वभाव। एकहि दिन मिथिला बसि पाव।।
सप्तपुरी जे मोक्ष-स्थान। से सामान्य मोक्ष महि जान।।
जे जन मिथिला मे तन त्याग। से सायुज्य मोक्ष नर पाव।।
अपनहि लक्ष्मी त्रिगुण शक्ति। करयित छथि बन्धनसौं मुक्ति।।
बान्धथि पुनि खोलथि संसार। जेहन जनिक आचरण-विचार।।
मिथिला-महि निज नैहर जानि। क्षमा करथि सभ निज जन मानि।।
मिथिला मे जे जन तन त्याग। जानव जनक तनिक बड़ भाग।।
अपनहि लक्ष्मी कर्मक बन्ध। खोलि करथि जनकौं निर्बन्ध।।
ब्रह्म तेज मे से जन लीन। आवागमनक नहि अधीन।।
मिथिलामे जे कयलनि गेह। तनि प्रति सीताकाँ बड़ नेह।।
नैहरि जानि रहथि सन्तुष्ट। देथि महासुख तनिका पुष्ट।।
मिथिला-महि महिमा बिस्तार। कहँधरि कहु पायब नहि पार।।
कयल एखन संक्षेप प्रकाश। अछि जयबाक जनक कैलाश।।
काल पाबि पुन दोसर बेरि। कहब एखन होइत अछि देरि।।

दोहा- कयबेरि आयब जनक हम, देखय मिथिला-धाम।
कहब तखन मिथिलापुरक, गुण-महिमा अभिराम।।

चौपाइ

से सुनि जनक कहल अकुलाय। प्रभु किछु रहल कहल से जाय।।
सीताराम लखान निज ज्योति। प्रतिमामे कयलन्हि उद्योति।।
तनिक करब पूजा कोन रीति। पद्धति-पटल कहू मोहि प्रीति।।
तेहि विधि अर्चन करब सदाय। जन्म सफल हमरो भय जाय।।
तखन शम्भु जनकक लगि कान। कहल पटल आगमन विधान।।
प्रातकृत पुनि आन्हिक कर्म। सन्ध्या सहित कहल सभ धर्म।।
सीता रघुवर लक्ष्मण मंत्र। कहि-कहि नृपकाँ कयल स्वतंत्र।।
स्तोत्र कवच सभटा कहि देल। सुनि आनन्द जनककाँ भेल।।
क्षण-क्षण शिव-पद कयल प्रणाम। कहल भेलहु प्रभु पूरणकाम।।
धन्य सदाशिव अहँक प्रसाद। गेल हमर संदेह-विषाद।।
कृपा करब पुनि दर्शन देब। दया राखि सभखन सुधि लेब।।
एवमस्तु कहि-कहि कल्याण। शिव कैलास कयल प्रस्थान।।
भक्तिभावसौं श्रीमिथिलेश। लगला करय कर्म बड़ वेश।।
सीताराम चरण मन लाय। पूजन करथि रटल भल पाय।।
मिथिला-महिमा शम्भुक बयन। स्मरण करथि नृप पुण्यक अयन।।
जखन पड़नि मन सीताराम। नयन नीर बह नहि विश्राम।।
मोहाकुल भय जाथि सुभूप। हिचकथि कानथि होथि न चूप।।
सीता देखि अलौकिक प्रीति। बुझबथि प्रतिमहिसौं भल रीति।।
हमरा एतहि तात जनु कानि। हमर खेलौना दय दिअ आनि।।
तात देल नहि मधुर मंगाय। आइ माइ नहि देल खोआय।।
हमर लतीक फूल की भेल। पोशा शुक-मृग के लय गेल।।
फरल हमर भल आम-लताम। पाकय तखन पठायब गाम।।
नृपकाँ कहि सीता एहि रीति। नोर पोछि जनबथि कति प्रीति।।
कीन्ह जखन जनकाकाँ बोध। मोह जनित संशय सभ शोध।।
सीता हेतु मधुर संदेश। दहि-चूड़ा मे चाफल वेश।।
भरि-भरि भार साटि मिथिलेश। नित्य पठावथि कौशल देश।।
प्रतिमामे कय-कय दृढ़ ध्यान। सुस्थिर रहथि नृपति गुणवान।।
नित्य करथि पूजन-जप-योग। अर्पण करथि अमृतमय भोग।।
एहि विधि जनक बितावथि काल। नहि तनिकाँ व्यापय भवजाल।।

दोहा- ओतय राम सीता सहित, गेला कौशलदेश।
ऋद्धि-सिद्धि मंगल सकल, अवधहु कयल प्रवेश।।

गीतिका

सकल मंगल-मोद नव-नव अवधपुर शोभित महाँ।
राम-सीता जतय राजित कहब तनि महिमा कहाँ।।
ब्रह्म-शिव-सुर-इन्द्र आदिक सतत रहि सेवथि जहाँ।
लाल सुख स्वर्गक विसरि सुर रहथि निर्भरसौं तहाँ।।
सोरठा-जे गावथि ई गीत, सीता-रघुवर-मिलन युत।
तनिकाँ पर अति प्रीति राखथि सीताराम नित।।
नहि भेटत भल नीर, मन-मराल मरूदेश मे।
चलु क्षीरोदधि-तीर, करयित कमला-हरि-भजन।।

खड़ौआ ग्राम निवासी पं० लाल दासकृत
मिथिला रामायण बालकाण्ड समाप्तम्।।
लिपिक
श्रीवनखण्डी लाल दास, खड़ौआ
ता०-15-4-84 ई०

दोहा- कयबेरि आयब जनक हम, देखय मिथिला-धाम।
कहब तखन मिथिलापुरक, गुण-महिमा अभिराम।।

चौपाइ

से मुनि जनक कहल अकुलाय। प्रभु किछु रहल कहल से जाय।।
सीताराम लखान निज ज्योति। प्रतिमामे कयलन्हि उद्योति।।
तनिक करब पूजा कोन रीति। पद्धति-पटल कहू मोहि प्रीति।।
नहि विधि अर्चन करब सदाय। जन्म सफल हमरो भय जाय।।
तखन शम्भु जनकक लगि कान। कहल पटल आगमन विधान।।
प्रातष्कृत पुनि आन्हिक कर्म। सन्ध्या सहित कहल सभ धर्म।।
सीता रघुवर लक्ष्मण मंत्र। कहि-कहि नृपकाँ कयल स्वतंत्र।।
स्तोत्र कवच सभटा कहि देल। सुनि आनन्द जनकक़ाँ भेल।।
क्षण-क्षण शिव-पद कयल प्रणाम। कहल भेलहु प्रभु पूरणकाम।।
धन्य सदाशिव अहँक प्रसाद। गेल हमर संदेह-विषाद।।
कृपा करब पुनि दर्शन देब। दया राखि सभखन सुधि लेब।।
एवमस्तु कहि-कहि कल्याण। शिव कैलास कयल प्रस्थान।।
भक्तिभावसौं श्रीमिथिलेश। लगला करय कर्म बड़ वेश।।
सीताराम चरण मन लाय। पूजन करथि रटल भल पाय।।
मिथिला-महिमा शम्भुक बयन। स्मरण करथि नृप पुण्यक अयन।।
जखन पड़नि मन सीताराम। नयन नीर बह नहि विश्राम।।
मोहाकुल भय जाथि सुभूप। हिचकथि कानथि होथि न चूप।।
सीता देखि अलौकिक प्रीति। बुझबथि प्रतिमहिसौं भल रीति।।
हमरा एतहि तात जनु कानि। हमर खेलौना दय दिअ आनि।।
तात देल नहि मधुर मंगाय। आइ माइ नहि देल खोआय।।
हमर लतीक फूल की भेल। पोशा शुक-मृग के लय गेल।।
फरल हमर भल आम-लताम। पाकय तखन पठायब गाम।।
नृपकाँ कहि सीता एहि रीति। नोर पोछि जनबथि कति प्रीति।।
होइन्ह जखन जनकाकाँ बोध। मोह जनित संशय सभ शोध।।
सीता हेतु मधुर संदेश। दहि-चूड़ा मे चाफल वेश।।
भरि-भरि भार साठि मिथिलेश। नित्य पठावथि कौशल देश।।
प्रतिमामे कय-कय दृढ़ ध्यान। सुस्थिर रहथि नृपति गुणवान।।
नित्य करथि पूजन-जप-योग। अर्पण करथि अमृतमय भोग।।
एहि विधि जनक बितावथि काल। नहि तनिकाँ व्यापय भवजाल।।

दोहा- ओतय राम सीता सहित, गेला कौशलदेश।
ऋद्धि-सिद्धि मंगल सकल, अवधहु कयल प्रवेश।।

गीतिका

सकल मंगल-मोद नव-नव अवधपुर शोभित महाँ ।
राम-सीता जतय राजित कहब तनि महिमा कहाँ।।
ब्रह्म-शिव-सुर-इन्द्र आदिक सतत रहि सेवथि जहाँ।
लाल सुख स्वर्गक विसरि सुर रहथि निर्भरसौं तहाँ।।
सोरठा-जे गावथि ई गीत, सीता-रघुवर-मिलन युत।
तनिकाँ पर अति प्रीति राखथि सीताराम नित।।
नहि भेटत भल नीर, मन-मराल मरूदेश मे।
चलु क्षीरोदधि-तीर, करयित कमला-हरि-भजन।।

खड़ौआ ग्राम निवासी पं० लाल दासकृत
मिथिला रामायण बालकाण्ड समाप्तम्।।
लिपिक
श्रीवनखण्डी लाल दास, ,खड़ौआ
ता०-15-4-84 ई०